हवनात्मक

श्रीदुर्गा सप्तशती

हवनात्मक
श्रीदुर्गा सप्तशती

श्रीदुर्गा सप्तशती के मन्त्रों के द्वारा मन्त्र-मय ७०० आहुतियाँ

उपहार-दाता

परम पूज्य स्वामी श्री विद्यारण्य जी महाराज

आदि-सम्पादक

'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

सम्पादक

ऋतशील शर्मा

प्रकाशक

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-६

* प्रकाशक
* **परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान**
* **कल्याण मन्दिर प्रकाशन**
* श्री चण्डी-धाम, प्रयाग-०६
* मो० ९४५०२२२७६७
*
* **द्वितीय संस्करण**
* शारदीय नवरात्र, 'क्रोधी'-संवत् २०६८ वि०
* (२८ सितम्बर, २०११)
*
* सर्वाधिकार सुरक्षित
*
* अनुदान १००/-
*
* मुद्रक
* **परा-वाणी प्रेस**
* श्री चण्डी-धाम, प्रयाग-०६

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
१.	दो शब्द	पाँच
२.	'हवन' हेतु सामग्री	सात
३.	हवन-विधि	१-१६
	हवनात्मक दुर्गा सप्तशती	
	◈ प्रथम चरितम्	
४.	प्रथमोऽध्यायः	१७
	◈ मध्यम चरितम्	
५.	द्वितीयोऽध्यायः	३९
६.	तृतीयोऽध्यायः	६१
०७.	चतुर्थोऽध्यायः	७३
	◈ उत्तम चरितम्	
०८.	पञ्चमोऽध्यायः	८३
०९.	षष्ठोऽध्यायः	९९
१०.	सप्तमोऽध्यायः	१०५
११.	अष्टमोऽध्यायः	१११
१२.	नवमोऽध्यायः	१२३
१३.	दशमोऽध्यायः	१३१
१४.	एकादशोऽध्यायः	१३७

क्रम	विषय	पृष्ठ
१५.	द्वादशोऽध्यायः	१४१
१६.	त्रयोदशोऽध्यायः	१५७
१७.	पूर्णाहुति एवं विसर्जन	१६१
१८.	तर्पण एवं मार्जन	१६२
१९.	बलि-प्रदान	१६२
२०.	आरती	१६३
२१.	पुष्पाञ्जलि	१६४
२२.	प्रदक्षिणा	१६४
२३.	'क्षमापन'-स्तोत्र-पाठ	१६५
२४.	'अनुग्रह-नवक'-स्तोत्र-पाठ	१६६
२५.	श्रीदुर्गा-स्तुति	१६७

***

दो शब्द

श्री दुर्गा सप्तशती के ७०० **श्लोकों** के द्वारा सुन्दर कथाओं के माध्यम से **भगवती दुर्गा** के तीन मुख्य स्वरूपों- **१. महा-काली, २. महा-लक्ष्मी** और **३. महा-सरस्वती** का चिन्तन-मनन होता है।

परम पूज्य स्वामी श्री विद्यारण्य जी महाराज की कृपा से **श्री दुर्गा सप्तशती** पूरे-पूरे ७०० श्लोकों में '**अद्‌भुत दुर्गा सप्तशती**' के रूप में उपलब्ध हो चुकी है। **७०० श्लोकोंवाली अद्‌भुत दुर्गा सप्तशती** की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि '**सप्तशती**' का पूरा कथा-क्रम इसमें सुन्दर गेए श्लोकों के रूप में है, जिसे कोई भी गायन कर हृदयङ्गम कर सकता है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि **परम पूज्य स्वामी श्री विद्यारण्य जी महाराज** की कृपा से हमें न केवल ७०० श्लोकोंवाली '**अद्‌भुत श्री दुर्गा सप्तशती**' की प्राप्ति हुई है, अपितु **श्री दुर्गा सप्तशती** के सभी मन्त्रों को पहले '**वीज**'-त्रय (**ऐं-ह्रीं-क्लीं**) और फिर क्रम से '**सप्तशती-माला-मन्त्र**' के एक-एक वीजों से पुटित कर, **भगवती दुर्गा** की विभिन्न **सात सौ अङ्ग-शक्तियों के नामों** के सहित ७०० **विशिष्ट आहुतियों का विधान** भी प्राप्त हुआ है। स्पष्ट है कि इस **विलक्षण मन्त्र-मय विधान** से हम **परम आराध्या भगवती दुर्गा** का सान्निध्य अत्यन्त सुगमता से प्राप्त कर सकते हैं। इस विलक्षण विधान के लिए सभी '**सप्तशती**'-प्रेमी बन्धु **परम पूज्य श्री विद्यारण्य जी महाराज** के प्रति हृदय से कृतज्ञ होंगे, इसमें सन्देह नहीं।

गुप्तावतार बाबा श्री ने '**मुमुक्षु मार्ग**' में वीज-त्रय '**ऐं-ह्रीं-क्लीं**' के सम्बन्ध में यह रहस्योद्‌घाटन किया है कि **वाग्-वीज** (**ऐं**) के साथ **माया-वीज** (**ह्रीं**) जपने से **माया की अमोघ शक्ति**, जो विश्व में भरी है, वह साधक के हृदय

में प्रतिष्ठित होती है तथा **काम-वीज (क्लीं)** जपने से साधक की सभी श्रेष्ठ कामनाएँ सिद्ध होती हैं। प्रत्येक **मन्त्र-मय** आहुति के अन्त में '**स्वाहा**' का क्या अर्थ है? इस सम्बन्ध में **बाबाश्री** कहते हैं–"**मन्त्र** के अन्त में '**स्वाहा**' लगने से साधक उस मन्त्र के दैवत अर्थात् **भगवती दुर्गा** की ७०० **अङ्ग-शक्तियों** से एकाकार हो जाता है।"

'**सप्तशती**' के **तेरह अध्यायों** के पारायण से क्रमशः **१. काम, २. क्रोध, ३. शोक, ४. मोह, ५. विधित्सा (शास्त्र-विरुद्ध काम करने की इच्छा), ६. मद, ७. लोभ, ८. मात्सर्य, ९. ईर्ष्या, १०. निन्दा, ११. पर-दोष-दृष्टि** और **१२. कृपणता** एवं **१३. दैन्य-भाव** तो नष्ट होते ही हैं, साथ ही **विशुद्ध ज्ञान** की उपलब्धि भी होती है।

श्री दुर्गा सप्तशती में **जगदम्बा** ने अपने अस्तित्त्व का बोध, **शब्द-ब्रह्म** द्वारा स्वयं कराया है। स्वयं **भगवती** कहती हैं कि मैं मनुजादि चराचर को पावन करनेवाली, समस्त ब्रह्माण्ड-नायिका, **सर्वाराध्या, सर्व-फल-प्रदा शक्ति** हूँ। संक्षेप में, **महा-माया** ने वैखरी का रूप धारण कर **निराकार** से **साकार** '**सप्तशती**' का स्वरूप धारण किया है।

प्राण-प्रतिष्ठित, नित्य पूजित, नित्य पठित सप्तशती का दर्शन **साक्षात् भगवती का दर्शन** है। **सप्तशती** की पूजा **महा-माया** की पूजा है। उसको समझना **ब्रह्म** को समझना है। **सप्तशती** के रहस्य को जानना ब्रह्माण्ड के ज्ञान को जानना है, स्वयं को दैवत्व प्राप्त कराना है। **सप्तशती** के अक्षरों को जानना सम्पूर्ण **अक्षर ब्रह्म** को वशवर्ती करना है।

अतः **अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री विद्यारण्य जी महाराज** की कृपा से प्राप्त प्रस्तुत **हवनात्मक श्री दुर्गा सप्तशती** के द्वारा जिज्ञासु बन्धु इच्छित फल प्राप्त करेंगे, यह हमारा दृढ़ विश्वास है।

–ऋतशील शर्मा
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग

'हवन' हेतु सामग्री

'**हवन**' करने से पहले '**हवन**' हेतु सभी आवश्यक सामग्री को एकत्रित कर क्रम से रख लेना चाहिए। अन्यथा '**हवन**' करते समय वाञ्छित वस्तु न मिलने से मन में क्षोभ होता है और '**हवन**' करने का फल वैसा नहीं मिलता, जैसा मिलना चाहिए।

श्री दुर्गा सप्तशती के ७०० **मन्त्रों** द्वारा '**हवन**' करने हेतु यहाँ **सामान्य एवं विशेष सामग्री** की एक सूची दी जा रही है। आशा है कि इससे '**हवन**' करनेवालों को पहले से सामग्री एकत्रित करने में सुविधा होगी। इस सूची की सामग्री को अपनी आवश्यकता एवं परम्परा के अनुसार घटाया व बढ़ाया जा सकता है।

सामान्य सामग्री

१. गङ्गा-जल या पवित्र जल किसी ताम्र-कलश में
२. गङ्गा की रेती, बालू
३. आम, पीपल, वट, गूलर, कटहल, चम्पा, देवदार की लकड़ी
४. ध्वजा, लाल कपड़े के टुकड़े
५. आचमनी-सहित ताँबे का पञ्च-पात्र, घण्टी आदि
६. लाल चन्दन, सफेद चन्दन, सिन्दूर, रोली, केसर, रोचना (हल्दी-चूना का मिश्रण)
७. स्रुची, चन्दन घिसने का पत्थर
८. अगरबत्ती, धूप-सामग्री, धूप दानी, धूप-पात्र

०९. घृत (गाय व भैंस), तेल, कर्पूर
१०. घृत या तैल में भीगी रुई की बत्तियाँ
११. दीप-पात्र (छोटा व बड़ा)
१२. अक्षत (समूचे चावल) २ भाग
१३. तिल ४ भाग
१४. जौ १ भाग
१५. कुशा
१६. गुग्गल
१७. भोज-पत्र
१८. कमल-पुष्प, रक्त-पुष्प एवं अन्य पुष्प, माला
१९. पान समूचे २०-२५
२०. सुपाड़ी, लौंग, छोटी इलायची
२१. कमल गट्टा
२२. विल्व-पत्र, बेल के टुकड़े, समूचे बेल
२३. शहद
२४. केला
२५. ईख के टुकड़े
२६. नारियल, नारियल के टुकड़े
२७. नीबू
२८. ऋतु-फल
२९. पायस (खीर)
३०. गोरोचन-मिश्रित गेंदे के पत्ते, गेंदे के फूल
३१. कलावा
३२. नैवेद्य हेतु बताशे, सूखे मेवे, नैवेद्य-द्रव्य
३३. बलि-द्रव्य

***

विशेष सामग्री

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
	प्रथमोऽध्यायः
ध्यान	रक्त पुष्प, गुड़हल
१	कमल-पुष्प
५-६	कमल-पुष्प और कैथा
४०	लवङ्ग
४२-४३	जटामासी
५०-५१	पीली सरसों
५२	दूध
५८	कमल-पुष्प
६२	कोई पुष्प
६५	लाल पुष्प
६८	घृत
६९	शङ्ख-पुष्पी

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
७३	पीली सरसों
७४	मधु अथवा कारण
९८	मधु अथवा कारण
१००	धूप
१०१	मधु अथवा कारण
१०२	धूप
१०६	पेठा
१०८	भोज-पत्र एवं शहद

साबुत पान, कमल गट्टा, सुपारी, लौंग, इलायची, गुग्गल व शहद से प्रथमोऽध्याय की विशेष आहुति।

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
	द्वितीयोऽध्यायः
ध्यान	कमल-पुष्प
१४१-१४२	जटामासी

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
१४८	वज्र-दन्ती
१५१	कमल-पुष्प
१५२	दूध व पुष्प
१५५	कमल-पुष्प
१५६	मधु
२१७	पीली सरसों
२२२-२२३	लाख व लाल चन्दन
२२४-२२८	लाख
२२९-२३१	लाल मिर्च
२३२	लाल चन्दन
२३३	लाल मिर्च, उड़द व गरी
२३४	उड़द व नारियल के टुकड़े
२३५	भोज-पत्र, उड़द, नारियल, पुष्प

साबुत पान, कमल गट्टा, सुपारी, लौंग, इलायची व गुग्गल से द्वितीयोऽध्याय की विशेष आहुति।

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
	तृतीयोऽध्यायः
ध्यान	रक्त पुष्प
२४५	स्वर्णादि के त्रिशूल
२४६-४७	गुग्गल
२५२	सोआ, पालक
२५३	अपामार्ग
२५४	धतूरे के पत्ते या फूल
२८१	बिना नमक के उड़द का बड़ा
२९०	घृत, शहद, शक्कर एवं कारण
२९१-२९२	मधु
२९४	शहद या कारण
२९६	रक्त-चन्दन एवं उड़द
३०२	शहद

साबुत पान, कमल गट्टा, सुपारी, लौंग, इलायची, गुग्गल व भैंस के घी से तृतीयोऽध्याय की विशेष आहुति।

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
	चतुर्थोऽध्यायः
ध्यान	रक्त पुष्प
३०४	गन्ध-अक्षत, खीर, दूध, श्वेत पुष्प
३०७	सम्पूर्ण बेल को घी में डुबोकर
३१३	बेल के टुकड़े
३१६	वच
३१९	मक्खन व पीली सरसों
३२०	पीली सरसों
३२३	चम्पा या गुड़हल के पुष्प
३२५	पेठा व पुष्प
३३५	रक्त चन्दन, गन्ध एवं पुष्प
३३६	कर्पूर, धूप, कमल, कमल-गट्टा
३३८-३३९	कनेर-पुष्प
३४०	कोई पुष्प
३४३	बेल-पत्र, गुग्गल व फल

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
३४४	पेड़ा, मिष्ठान

साबुत पान, कमल गट्टा, सुपारी, लौंग, इलायची, गुग्गल व गन्ध-अक्षत से चतुर्थोऽध्याय की विशेष आहुति।

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
	पञ्चमोऽध्यायः
ध्यान	लाजा व समूचा पका केला
३४९-३५०	रक्त-पुष्प या गुड़हल का पुष्प
३५१-३८२	चावल या खीर
३६२-३६४	शमी-पत्र
३८१	इत्र
३८२	केसर या नागकेसर
३८३	मिश्री
३८४	नागकेसर व इत्र
३८६	बेल (सम्पूर्ण) घी लगा कर
३८९-३९०	लाजा
३९५	कमल पुष्प

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
३९८	मधु अथवा कारण
४०२	सुरुआरी के बीज
४०३	गन्ध, अक्षत व पुष्प
४०६	बेल (सम्पूर्ण)
४०७	दूध
४१०	दधि
४११	घृत
४१२	कैथा व वच
४१५	अपराजिता, भटकटैया, धतूर-पुष्प
४१६	मोरपंखी और धतूरे का पुष्प
४१७	पुष्प व सुरुआरी के बीज
४१९	मोर-पङ्खी व धतूरे का पुष्प
४२२	शहद

साबुत पान, कमल गट्टा, सुपारी, लौंग, इलायची, गुग्गल व कपूर, पुष्प, केला, ईख से पञ्चमोऽध्याय की विशेष आहुति।

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
	षष्ठोऽध्यायः
ध्यान	रक्त पुष्प
४२३-४२६	गुग्गल
४३१	गुग्गल व सुरमा
४३२	गुलाल व शिलाजीत
४३३	गुग्गल, शिलाजीत व स्वर्ण या रजत-निर्मित चरण-पादुका
४३४	वच
४३५-४३६	लाल मिर्च
४३७-४३९	काली मिर्च
४४०-४४१	बताशा
४४२	भोज-पत्र

साबुत पान, कमल गट्टा, सुपारी, लौंग, इलायची, गुग्गल व कपूर, पुष्प, ऋतु-फल से षष्ठोऽध्याय की विशेष आहुति।

सप्तमोऽध्यायः

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
ध्यान	रक्त पुष्प व समूचा पका केला
४४६	कर्पूर-युक्त कज्जल
४४८	कैथा व गरी-छुहारा की माला

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
४५०	पीली सरसों
४५८	शिलाजीत
४६०	भोज-पत्र व मैनफल
४६२	कैथा
४६५	बताशा व समूचा पका केला
४६८	जायफल

साबुत पान, कमल गट्टा, सुपारी, लौंग, इलायची, गुग्गल व जायफल से सप्तमोऽध्याय की विशेष आहुति।

अष्टमोऽध्यायः

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
ध्यान	सुगन्धित तेल, लाल चन्दन
४८३	जटामासी
४८७-४८८	वच व वज्रदन्ती
४९०	शङ्ख-पुष्पी
४९१	जायफल
४९२	बिजौरा नीबू
४९३	गन्ना
४९४-४९५	अदरक व काला उड़द
५००	धतूरे का पुष्प
५०७	लाख
५०८	बिजौरा नीबू
५०९-५१२	रक्त चन्दन
५१८-५१९	पीली सरसों
५२०-५२९	रक्त चन्दन

साबुत पान, कमल गट्टा, सुपारी, लौंग, इलायची, गुग्गल व लाल चन्दन के चूरे से अष्टमोऽध्याय की विशेष आहुति।

नवमोऽध्यायः

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
ध्यान	रक्त पुष्प
५३०-५३१	रक्त चन्दन
५३८	गन्ने के टुकड़े
५३९-५४०	भोज-पत्र
५४२	गन्ने के टुकड़े
५४५	भोज-पत्र

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
५४७	पका केला
५४९-५५२	काली मिर्च
५५४	पेठे के टुकड़े
५६२	सुपारी
५६४	बेल के टुकड़े
५६५-५६६	गन्ना व केला
५६७	लाल कपड़ा घी में भिगोकर समूचे बेल के साथ

साबुत पान, कमल गट्टा, सुपारी, लौंग, इलायची, गुग्गल व खीर, गन्ध, पुष्प, विल्व से नवमोऽध्याय की विशेष आहुति।

दशमोऽध्यायः

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
ध्यान	रक्त पुष्प
५७०	दूध
५७५	काली उड़द
५७७-५७९	काली उड़द
५८०-५८३	काले तिल
५८४	पेठे के टुकड़े
५८९	दूध व दूर्वा
५९३	बेल-फल व पुष्प

साबुत पान, कमल गट्टा, सुपारी, लौंग, इलायची, गुग्गल व खीर, गन्ध, पुष्प, विल्व से दशमोऽध्याय की विशेष आहुति।

एकादशोऽध्यायः

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
ध्यान	रक्त पुष्प
५९५	जटामासी
५९६	पंच-मेवा व बताशा
५९७	जल
५९८	अक्षत
६०३	रक्त पुष्प
६०५	खीर व चन्दन-युक्त पुष्प
६०७	धतूरे के पुष्प
६११-६१३	जटामासी
६१५	पुष्प व लाजा

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
६१८	खीर एवं चन्दन-युक्त पुष्प
६२२	गिलोय
६२३	भोज-पत्र व गिलोय
६२४	जायफल
६२५	दूध
६२६	पंच-मेवा
६२९	कर्पूर
६३१	काली मिर्च तथा लाल मिर्च
६३३	मिष्ठान, मक्खन व मिश्री
६३५	अनार के पुष्प व फल
६३६	दाड़िम (अनार) के बीज
६३७	पालक
६३८	शङ्ख-पुष्पी व गेंदा-कमल-माला
६३९	केला, कैथा, राल, शाक-सोआ, पालक व चौराई आदि
६४०	हरा साग, हरी दूर्वा, मधु, कारण

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
६४३	कमल पुष्प
६४४-६४५	खीर व पीली सरसों

साबुत पान, कमल गट्टा, सुपारी, लौंग, इलायची, गुग्गल व खीर व पुष्प से एकादशोऽध्याय की विशेष आहुति।

द्वादशोऽध्यायः

ध्यान	गोरोचन-मिश्रित गेंदे के पुष्प
६४६	जायफल व पीली सरसों
६४८	मधु
६५०	पीली सरसों
६५१	ढाक के पुष्प व पत्ते
६५२	गुलाल, धूप, काली मिर्च, पीली सरसों व हरा साग
६५३	कैथा
६५४	समूचा कैथा, नारियल का गोला, बेल या बिजौरा नीबू को काटकर बलि देकर

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
६५५-६५६	कैथा
६५७	छोटी इलायची, कैथा, नीम की टहनी व पत्ती
६५८	कैथा
६६१	मोती
६६२	वच, पीली सरसों
६६३	पीली सरसों
६६४	पीली सरसों, रक्त पुष्प, धूप, रक्त चन्दन से आहुति तथा १२ बत्तीवाले दीपक से आरती
६६५	मिष्ठान, पूड़ी व जल
६७०	गन्ने के टुकड़े
६७२-६७३	जटामासी
६७९	अमर-बेल
६८०-६८१	पीली सरसों

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
६८३	कर्पूर, धूप, खस, पुष्प व चन्दन

साबुत पान, कमल गट्टा, सुपारी, लौंग, इलायची, गुग्गल व ऋतु-फल, गोरोचन, गेंदे से द्वादशोऽध्याय की विशेष आहुति।

त्रयोदशोऽध्यायः

आहुति-संख्या	विशेष सामग्री
ध्यान	रक्त पुष्प
६८६	रक्त पुष्प
६९०	रक्त चन्दन, पुष्प एवं धूप
६९१	धूप एवं पुष्प
६९२	उड़द, रक्त चन्दन, लाख, मिष्ठान व ऋतु-फल
६९३	रक्त चन्दन व लाख
६९६-६९८	उड़द व अदरक
७००	समूचा बेल

साबुत पान, कमल गट्टा, सुपारी, लौंग, इलायची, गुग्गल व फल-फूल से त्रयोदशोऽध्याय की विशेष आहुति।

***

हवन-विधि

१. स्नान आदि नित्य-कर्म से निवृत्त होकर '**हवन**' करने के लिए पूर्वाभिमुख होकर '**आसन**' पर बैठें। गुरु, **माता-पिता** तथा **पितरों** को नमस्कार कर **भगवान् गणेश, कुल-देवता, इष्ट-देवता-स्वरूपिणी दुर्गाम्बा** को प्रणाम करें।

२. '**हवन**' की भूमि को गाय के गोबर से लिपवाकर या पवित्र जल से धुलवाकर वहाँ अपने सामने **एक हाथ लम्बी-चौड़ी** तथा **एक अंगुल ऊँची** बालू (रेत) की '**वेदी**' या '**स्थण्डिल**' (चौरस व चौकोर की हुई मिट्टी की भूमि) **हवन** हेतु बना लें।

३. अपने दाहिने **आसन** के अग्र भाग में भूमि पर स-विन्दु '**त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्त्र**' का एक मण्डल बनाकर **गन्ध-पुष्प** से निम्न मन्त्र द्वारा उसका पूजन करें–ॐ **ह्रीं आधार-शक्तये नमः**।

फिर उक्त मण्डल पर '**अस्त्राय फट्**' कहकर **पञ्च-पात्र** रखें और '**नमः**' मन्त्र से उस पर जल छिड़कें तथा '**ॐ**' मन्त्र से उसके जल में **गन्ध-पुष्प** छोड़कर उसमें निम्न मन्त्र से **अंकुश-मुद्रा** द्वारा **तीर्थों का आवाहन** करें–

ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति ! नर्मदे सिन्धु कावेरि!, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

४. तब '**फट्**' मन्त्र का ७ बार जप करे और **श्वेत सर्षप** (सरसों) या अक्षत हाथ में लेकर **भूतापसारण** हेतु निम्न मन्त्र का उच्चारण कर उन्हें अपने चारों ओर बिखेर दें–

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भुवि संस्थिताः। ये भूता विघ्न-कर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।

५. अब अपने **आसन की शुद्धि** करें। पहले आसन पर निम्न मन्त्र से गन्ध-पुष्प छोड़ें–

ॐ ह्रीं आधार-शक्तये कमलासनाय नमः।

फिर आसन पर हाथ रखकर निम्न प्रकार से **आसन-शोधन** हेतु '**न्यास**' करें–

विनियोग–**ॐ अस्य आसन-शोधन-मन्त्रस्य मेरु-पृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनोपवेशने विनियोगः।**

ऋष्यादि-न्यास–**मेरुपृष्ठ-ऋषये नमः शिरसि, सुतलं-छन्दसे नमः मुखे, कूर्म-देवतायै नमः हृदि, आसनोपवेशने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

हाथ जोड़कर '**प्रार्थना**' करे–

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका, देवि! त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां नित्यं, पवित्रं कुरु चासनम् ।।

६. इसके बाद निम्न-लिखित चार मन्त्रों द्वारा '**आत्म-शोधन**' करें–

ॐ ऐं आत्म-तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा । ॐ ह्रीं विद्या-तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा। ॐ क्लीं शिव-तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्व-तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

७. '**आत्म-शोधन**' के पश्चात् '**प्राणायाम**' करके '**गुरु-देव**' का स्मरण करें। यथा–

ॐ आनन्दमानन्द-करं प्रसन्नं, ज्ञान-स्वरूपं निज-बोध-रूपम् ।
योगीन्द्रमीड्यं भव-रोग-वैद्यं, श्रीमद्-गुरुं नित्यमहं नमामि ।।

८. इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचार द्वारा **सभी गुरुओं का पूजन** करें। यथा–

ॐ गुं गुरुभ्यो नमः लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि। ॐ गुं गुरुभ्यो नमः हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि । ॐ गुं गुरुभ्यो नमः यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि । ॐ गुं गुरुभ्यो नमः रं वह्न्यात्मकं दीपं सन्दर्शयामि। ॐ गुं गुरुभ्यो नमः वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि । ॐ गुं गुरुभ्यो नमः सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि ।।

९. इसके पश्चात् नीचे लिखी संक्षिप्त पद्धति के अनुसार '**गणपति**' का पूजन करें–

ॐ गजाननं भूत - गणाधि - सेवितं, कपित्थ - जम्बू - फल-चारु-भक्षणम् ।
उमा - सुतं शोक - विनाश - कारकं, नमामि विघ्नेश्वर - पाद - पङ्कजम् ।।

ॐ वक्र-तुण्ड! महा-काय!, सूर्य-कोटि-सम-प्रभ!। निर्विघ्नं कुरु मे देव!, सर्व-कार्येषु सर्वदा ।।

१०. **गणपति-पूजन** के पश्चात् अपने **इष्ट-देव का पूजन** करें।

११. इसके पश्चात् अपने अभीष्ट कर्म के अनुसार '**सङ्कल्प**' करें–

अपने दाहिने हाथ में कुश, तिल, तुलसी, हरीतकी–फल (हल्दी की गाँठ), अक्षत, पुष्प और जल लेकर, दाँएँ

घुटने के बल, उत्तर की ओर मुख करके बैठे और निम्न प्रकार से '**दुर्गा-सप्तशती**' के मन्त्रों के द्वारा 'हवन' करने हेतु **सङ्कल्प** करे तथा सङ्कल्प करने के पश्चात् जल-सहित सभी सामग्री को अपने आसन के सम्मुख '**वेदी**' या '**स्थण्डिल**' के निकट छोड़ दें–

ॐ विष्णुः ॐ तत् सत् । अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे, श्रीश्वेत-वराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे, अमुक-प्रदेशे, अमुक-जनपदे, अमुक-स्थाने, अमुक-संवत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रः, अमुक-शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) अहं ममात्मनः स-पुत्र-स्त्री बान्धवस्य-अभीष्ट-सिद्धि-कामः (श्रीचण्डिका प्रीति-कामः वा) श्रीकृष्ण-द्वैपायनाभिधान-महर्षि-वेदव्यास-प्रोक्त-जयाख्य-उत्तर-मार्कण्डेय-पुराणान्तर्गत-'सावर्णिः सूर्य-तनयः 'इत्यारभ्य 'सावर्णिर्भविता मनुः' इत्यन्तं देवी-माहात्म्य-प्रकाशक-स्तोत्रस्य मन्त्रैर्यथा-विधि हवनं करिष्ये।

परार्थ-सङ्कल्प–यदि किसी अन्य व्यक्ति के निमित्त '**हवन**' करना है, तो '**अमुक-गोत्रः, अमुक-शर्मा**' के स्थान पर '**अमुक-गोत्रस्य अमुक-शर्मणः हिते**' (**वर्मणः, गुप्तस्य, दासस्य वा**) कहना चाहिए। '**अमुक**' के स्थान पर अपना या अपने यजमान के गोत्र, नाम का उल्लेख करना चाहिए।

१२. '**सङ्कल्प**' करने के पश्चात् भूमि पर अक्षत रखकर उसके ऊपर '**घी**' **का दीपक** प्रज्वलित करना चाहिए। फिर **गन्ध** और **अक्षत-पुष्प** से '**दीपक**' का पूजन कर '**दीपक**' से प्रार्थना करनी चाहिए–

भो! दीप त्वं ब्रह्म-रूप, ह्यन्धकार-निवारक। इमां मया कृतां पूजां, गृहस्तेजः प्रवर्धय ।। दीपाय नमः।

श्री दुर्गाम्बा का आवाहन एवं ध्यानादि

१३. तब त्रिगुणात्म-मूर्ति दुर्गाम्बा का आवाहन आदि करे–

श्रीगणेशाय नमः। श्रीगुरुभ्यो नमः। श्रीदुर्गायै नमः। श्रीशिवाम्बायै नमः ।

विनियोग– ॐ अस्य श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-महाचण्डी-चामुण्डा-महाचण्डी-त्रिगुणात्म-मूर्ति - दुर्गाम्बाया आवाहन - महा - मन्त्रस्य ॐ श्रीब्रह्मा - विष्णु - महेश्वरा ऋषयः। ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि। ॐ श्रीत्रिगुणात्मक-मूर्ति-दुर्गाम्बा देवता। ॐ प्रणवः वीजं। ॐ ह्रीं दुं दुर्गाम्बा शक्तिः। ॐ स्वाहा कीलकं। ॐ श्रीत्रिगुणात्मक-मूर्ति-दुर्गाम्बाया आवाहने विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–ॐ श्रीब्रह्मा - विष्णु - महेश्वर - ऋषयः नमः शिरसि। ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि नमः मुखे। ॐ श्रीत्रिगुणात्मक-मूर्ति-दुर्गाम्बा-देवतायै नमः हृदि। ॐ-वीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्रीं दुं दुर्गाम्बा-शक्तये नमः नाभौ। ॐ स्वाहा कीलकाय नमः पादयोः। ॐ श्रीत्रिगुणात्मक-मूर्ति-दुर्गाम्बाया आवाहने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास– ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः मध्यमाभ्यां नमः । ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः ।

अङ्ग-न्यास–ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः हृदयाय नमः। ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः शिरसे स्वाहा।

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः शिखायै वषट्। ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः कवचाय हुम्। ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः नेत्र-त्रयाय वौषट् । ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः अस्त्राय फट् ।

'ॐ भूर्भुवः स्वः' से 'दिग्-बन्धन' कर भगवती दुर्गा का ध्यानादि करें। यथा–

ॐ क्लीं सिंहस्था शशि - शेखरा मरकत - प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः।
शङ्खं चक्र - धनुः - शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।।
आमुक्ताङ्गद - हार - कङ्कण - रणत् - काञ्ची - क्वणन् - नूपुरा।
दुर्गा दुर्गति - हारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत् - कुण्डला।।१

ॐ क्लीं विद्युद्दाम - सम - प्रभां मृग - पति - स्कन्ध - स्थितां भीषणाम्।
कन्याभिः करवाल - खेट - विलसद् - हस्ताभिरासेविताम्।।
हस्तैश्चक्र - गदाऽसि - खेट - विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्।
विभ्राणामनलात्मिकां शशि - धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।२

ॐ क्लीं ध्यायेन्नित्यां महा-देवीं, मूल-प्रकृतिमीश्वरीम्।
ब्रह्मा-विष्णु-शिवादीनां, पूज्यां वन्द्यां सनातनीम्।।३

ॐ क्लीं दुर्गे देवि ! आहुति-ग्रहणार्थं, इहागच्छ दुर्गाम्बे! सुरेश्वरि!।।४

ॐ क्लीं एह्येहि देव - देवेशि त्रिपुरे! देव - पूजिते!
परामृत - प्रिये! शीघ्रं, सान्निध्यं कुरु सिद्धिदे।।५

ॐ क्लीं सर्व - देव - देवेशि! प्रेम - भक्ति - सुलभे।
सर्वावरण-संयुक्ते! यावत् त्वां पूजयिष्यामि।।
प्रथम - मध्यमोत्तम - चरितस्य हवनेन।
आराधयामि तावत् त्वं दुर्गाम्बा सुस्थिरा भव।।६
ॐ क्लीं दुर्गे देवि! इहागच्छ, सान्निध्यमिह कल्पय।
आहुति-ग्रहणार्थं त्वं, योगिनी-कोटिभिः सह।।७

ॐ क्लीं दुर्गे देवि! आवाहिता भव। ॐ क्लीं स्थापिता भव। ॐ क्लीं सन्निरुद्धा भव। ॐ श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती श्रीमन्महाकाल-सहिता दक्षिण-कालिका महाचण्डी-चामुण्डा-त्रिगुणात्मक-मूर्ति क्लीं वरदा भव। ॐ क्लीं सुख-शान्तिदा भव।

अब हाथ जोड़कर प्रार्थना-पूर्वक 'स्वागत' करे-

ॐ क्लीं स्वागतं देव - देवेशि! मद् - भाग्यात् - त्वमिहागता।
प्राकृतं दृष्ट्वा दुर्गे देवि! त्वं मां पुत्र - वत् पालय ।।१

ॐ ह्रीं दुं दुर्गा-देवि! क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं मम हृदये चिरं तिष्ठ, चिरं तिष्ठ दुर्गाम्बा-शिवाम्बा सुरेश्वरि! ॐ क्लीं हे मातरस्यामर्चायां, सन्निरुद्धा भवाम्बिके !

ॐ क्लीं दुर्गाम्ब! बटुक-भैरव-सहिते! इहागच्छ त्वत्-प्राणाश्चाधः प्राणैः सहाच्युते! इहागच्छ दुर्गाम्ब! त्वरितमत्रैव सर्व-शक्तयः ।

ॐ क्लीं दुर्गाम्ब! सर्वेन्द्रियाधि-देवतास्ता इहागच्छन्तु चण्डिके! इहागच्छन्तु शिवाम्बा सर्व-शक्ति-सहिता सहेश्वरा ।

ॐ क्लीं स्वागतं ते भवत्वम्ब! शिव - लोकात् शिव - प्रिये!
प्रसादं कुरु मां भद्र - कालि! नमोऽस्तु ते ।।२
ॐ क्लीं धन्योऽहं कृत - कृत्योऽहं सफलं जीवनं मम।
आगताऽसि यतो मातर्माहेश्वरि! ममालयम् ।।३

'वेदी' का प्रोक्षण, ताड़न एवं सिञ्चन

१४. इसके पश्चात् '**श्री दुर्गायै नमः**' अथवा '**मूल-मन्त्र**' पढ़ते हुए **दिव्य-दृष्टि** से अपने सामने निर्मित '**वेदी**' को देखे। '**फट्**'-मन्त्र पढ़कर '**पञ्च-पात्र**' के पवित्र जल से '**वेदी**' का **प्रोक्षण** करे। दुबारा '**फट्**'-मन्त्र पढ़कर '**कुश**' के अग्र भाग से '**वेदी**' का **ताड़न** करे। '**हुँ**'-मन्त्र पढ़कर एक मूठी जल द्वारा '**वेदी**' का **सिञ्चन** करे।

'वेदी' पर यन्त्र-पूजन

१५. इसके बाद '**वेदी**' पर **पश्चिम से पूर्व को तीन खड़ी रेखाएँ** खींचे। इसी प्रकार **दक्षिण से उत्तर को तीन आड़ी** रेखाएँ खींचे। फिर खड़ी रेखाओं पर दाहिनी ओर से प्रत्येक पर '**ॐ मुकुन्दाय नमः, ॐ ईशाय नमः, ॐ पुरन्दराय नमः**'- इन मन्त्रों से **१. विष्णु, २. शिव** और **३. इन्द्र** की पूजा करे। इसके बाद आड़ी रेखाओं पर '**ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ वैवस्वताय नमः, ॐ इन्दवे नमः**'- इन मन्त्रों से **१. ब्रह्मा, २. वैवस्वत** और **३. चन्द्रमा** की पूजा करे।

१६. तब '**वेदी**' पर '**षट्-कोण**', उसके बाहर '**वृत्त**' और वृत्त के बाहर '**अष्ट-दल-कमल**' तथा उसके बाद चार द्वारवाला '**भू-पुर**' बनाए तथा इस यन्त्र पर '**मूल-मन्त्र**' से अथवा '**श्री दुर्गायै नमः**' से त्रि-मूर्ति दुर्गाम्बा को '**पुष्पाञ्जलि**' प्रदान करे। फिर '**ॐ**' वीज से '**होम**' के द्रव्यों का प्रोक्षण करे। इसके बाद यन्त्र के **अष्ट-दल-कमल** के बीज-कोष में '**ह्रीं आधार-शक्त्यादिभ्यो नमः**' से **पीठ-पूजा** करे अथवा **पीठ-शक्तियों** में से प्रत्येक का नाम लेकर अलग-अलग पूजा करे। यथा– **१. ॐ आधार-शक्तये नमः, २. ॐ प्रकृत्यै नमः, ३. ॐ कूर्माय नमः, ४. ॐ अनन्ताय नमः, ५. ॐ अमृत-सागराय नमः, ६. ॐ मणि-द्वीपाय नमः, ७. ॐ चिन्तामणि-गृहाय नमः, ८. ॐ श्मशानाय नमः, ९. ॐ पारिजाताय नमः, १०. ॐ कल्प-वृक्षाय नमः, ११. ॐ रत्न-वेदिकाय नमः, १२. ॐ रत्न-सिंहासनाय नमः, १३. ॐ मणि-पीठाय नमः।**

१७. **पीठ-शक्तियों की पूजा** करने के बाद यन्त्र के आग्नेय कोण में '**ॐ धर्माय नमः**' से ईशान कोण में '**ॐ ज्ञानाय नमः**' से, वायव्य कोण में '**ॐ वैराग्याय नमः**' से और नैऋत्य कोण में '**ॐ ऐश्वर्याय नमः**' से पूजा करे। फिर वहीं पूर्व में '**ॐ अधर्माय नमः**' से, उत्तर में '**ॐ अज्ञानाय नमः**' से, पश्चिम में '**ॐ अवैराग्याय नमः**' से और दक्षिण में '**ॐ अनैश्वर्याय नमः**' से पूजा करे।

१८. इसके बाद यन्त्र के मध्य में पूजा करे। यथा–

ॐ अनन्ताय नमः, ॐ पद्माय नमः, अं अर्क-मण्डलाय द्वादश-कलात्मने नमः, उं सोम-मण्डलाय षोडश-कलात्मने नमः, रं वह्नि-मण्डलाय दश-कलात्मने नमः। फिर कमल के केशरों में पूजा करे। पूर्व की ओर से प्रारम्भ करे। यथा– **ॐ पीतायै नमः, ॐ श्वेतायै नमः, ॐ अरुणायै नमः, ॐ कृष्णायै नमः, ॐ धूम्रायै नमः, ॐ तीव्रायै नमः, ॐ स्फुलिङ्गन्यै नमः, ॐ रुचिरायै नमः।** मध्य में '**ॐ ज्वालिन्यै नमः**' से पूजा करे।

१९. अन्त में यन्त्र पर अक्षत-पुष्प छोड़ते हुए '**रं वह्नेः आसनाय नमः**' से **वागीश्वर-वागीश्वरी का आवाहन** करे और **ध्यान** करे। यथा–

वागीश्वरीमृतु-स्नातां, नीलेन्दीवर-लोचनाम् । वागीश्वरेण संयुक्तां, ध्यायामि सा तदासनम् ।।

अर्थात् नीले कमल के समान आँखोंवाली वागीश्वर द्वारा आलिङ्गिता, ऋतु-स्नाता वागीश्वरी का उस आसन पर मैं ध्यान करता हूँ।

फिर वहीं '**ह्रीं वीज** से **गन्ध-पुष्प** छोड़ते हुए **वागीश्वर-वागीश्वरी** दोनों की पूजा करे।

अग्नि का आवाहन एवं स्थापन

२०. इसके बाद **दिव्य दृष्टि से अग्नि** (गोबर के कण्डे पर रखे हुए अङ्गार आदि) का अवलोकन कर **मूल-मन्त्र** अथवा **श्री दुर्गायै नमः** कहता हुआ '**फट्**'-मन्त्र से **अग्नि का आवाहन** करे। फिर भावना द्वारा उक्त **यन्त्र** (षट्-कोण, वृत्त, अष्ट-दल-कमल, भूपुर) में अग्नि के स्थान की '**ॐ वह्नेः योग-पीठाय नमः**' से पूजा करे। वहीं पूर्व

से आरम्भ कर चारों कोनों में '**ॐ वामायै नमः, ॐ ज्येष्ठायै नमः, ॐ रौद्रायै नमः, ॐ अम्बिकायै नमः**' से '**अग्नि**' की पूजा करे तथा **अग्नि-स्थान** में भावना के द्वारा '**श्री दुर्गा-देवतायाः स्थण्डिलाय नमः**' से पूजा करे।

२१. अब '**रं**' बीज पढ़कर जलते हुए अङ्गार से कुश आदि के द्वारा आग को जलाए और '**मूल-मन्त्र हूं फट् क्रव्यादेभ्यः**' अथवा **श्री दुर्गायै नमः हूं फट् क्रव्यादेभ्यः** कहकर जलती हुई आग का एक भाग दक्षिण-दिशा में राक्षसों के लिए गिरा दे। फिर '**फट्**'-मन्त्र पढ़कर **दिव्य दृष्टि** से जलती हुई अग्नि को देखे और '**हूं**'-बीज से '**अवगुण्ठन-मुद्रा**' के द्वारा उसका '**अवगुण्ठन**' करे। **धेनु-मुद्रा** दिखाकर '**वं**' वीज से '**अग्नि**' को अमृत-मय करे। इसके बाद जलते हुए अमृत-मय अङ्गार को एक पात्र में रखे और उसे अञ्जलि में ले **स्थण्डिल** या **वेदी** के ऊपर तीन बार चक्राकार घुमाए और दोनों घुटने जमीन पर टेककर उसे मन-ही-मन '**शिव**'-**वीर्य** के रूप में समझते हुए यन्त्र में अपने सामने के त्रिकोण में स्थापित कर दे।

अग्नि-प्रदीपन एवं प्रार्थना

२२. अब अग्नि की '**ह्रीं वह्नि-मूर्तये नमः**' से और '**रं वह्नि-चैतन्याय नमः**' से **अग्नि के चैतन्य-रूप की पूजा** करे। फिर **ॐ चित्-पिङ्गल हन हन, दह दह, पच पच, सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा** (अर्थात् हे अग्नि की सर्वज्ञ पीली चित्-शक्ति, तू मार डाल, मार डाल, जला दे, जला दे, पका दे, पका दे, आज्ञा कर) इस मन्त्र से यन्त्र में स्थित अङ्गार को जलाए।

२३. इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र से '**अग्नि**' की **प्रार्थना** करे। यथा–

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे, जात-वेदं हुताशनम् । सुवर्ण-वर्णममलं, समिद्धं सर्वतोमुखम् ।।
अर्थात् मैं प्रज्वलित वेद-कर्ता हुताशन अमल अवर्ण-वर्ण सर्वतोमुखी अग्नि की वन्दना करता हूँ।

समिधा-दान

२४. इसके बाद साधक **स्थण्डिल** को **कुशों** से ढँक दे और कहे–'**अग्ने! त्वं दुर्गा असि।**' अर्थात् हे अग्नि, तुम दुर्गा देवता हो।

तदनन्तर '**ॐ वैश्वानर, जात-वेद! इहावहावह लोहिताक्ष! सर्व-कर्माणि साधय स्वाहा**' अर्थात् हे वैश्वानर, वेद-कर्ता! यहाँ आओ, आओ हे रक्ताक्ष! सब कार्यों को सिद्ध करो।

उक्त मन्त्र से साक्षात् **दुर्गाम्बा-रूपी अग्नि** की पूजा करे। फिर '**ॐ वह्नेर्हिरण्यादि-सप्त-जिह्वाभ्यो नमः**' इस मन्त्र से अग्नि की हिरण्य आदि **सातों जिह्वाओं की पूजा** करे।

अग्नि के षडङ्गों की पूजा

२५. इसके बाद साधक **अग्नि के षडङ्गों की पूजा** करे। यथा– '**ॐ सहस्त्रार्च्चिषे हृदयाय नमः**' इस मन्त्र से **अग्नि के हृदय की पूजा** करे। इसके बाद '**वह्ने षडङ्गेभ्यो नमः**'–इस मन्त्र से उसके सभी षडङ्गों की पूजा करे। अथवा शेष अङ्गों की अलग-अलग पूजा करे। यथा– **ॐ स्वस्ति-पूर्णाय शिरसे स्वाहा, ॐ उत्तिष्ठ-पुरुषाय शिखायै वषट्, ॐ धूम्र-व्यापिने कवचाय हुँ, ॐ सप्त-जिह्वाय नेत्र-त्रयाय वौषट्, ॐ धनुर्धराय अस्त्राय फट्।** फिर '**ॐ वह्नि-मूर्तिभ्यो नमः**'–इस मन्त्र से **वह्नि-मूर्ति की पूजा** करे। तदनन्तर '**ॐ ब्रह्मादिभ्योऽष्ट-**

शक्तिभ्यो नमः'—इस मन्त्र से **पद्मा आदि आठ निधियों की पूजा** करे। फिर **इन्द्रादि दिक्-पालों** की '**इन्द्रादि दश दिक्-पालाय नमः**' और **वज्रादि आयुधों** की '**वज्रादि दश आयुधाय नमः**' से भू-पुर में यथा-स्थान पूजा करे।

अग्नि की सात जिह्वाओं को आहुतियाँ

२६. इसके बाद एक बालिश्त **कुश** के दो दर्भ लेकर उन्हें घृत पर बेंड़े-बेंडे रख दे। तब घी के बाँएँ '**इडा**' का और दाहिनी ओर '**पिङ्गला**' का ध्यान करे। बीच में '**सुषुम्ना**' का ध्यान करे। तब दाहिनी ओर से घी लेकर '**ॐ अग्नये स्वाहा**' से अग्नि की दाहिनी आँख को अर्पित करे। फिर बाँईं ओर से घी लेकर '**ॐ सोमाय स्वाहा**' से अग्नि की बाँईं आँख को अर्पित करे। फिर बीच से लेकर '**ॐ अग्नि-सोमाभ्यां स्वाहा**' से अग्नि के सिर को अर्पित करे। फिर '**नमः**' कहकर दाहिनी ओर से घी लेकर '**ॐ अग्नये स्विष्ट-कृते** (अग्नि का एक रूप) **स्वाहा**' से अग्नि के मुख में घृत को अर्पित करे। फिर अग्नि की सात जिह्वाओं को आहुतियाँ प्रदान करे—**ॐ स्यूं हिरण्यायै स्वाहा। ॐ ष्यूं गगनायै स्वाहा। ॐ श्यूं रक्तायै स्वाहा। ॐ व्यूं कृष्णायै स्वाहा। ॐ ल्यूं सु-प्रभायै स्वाहा। ॐ न्यूं बहु-रूपायै स्वाहा। ॐ य्यूं अति-रक्तायै स्वाहा।**

व्याहृतियों से चार आहुतियाँ

तब **१. ॐ भूः, २. ॐ भुवः, ३. ॐ स्वः, ४. ॐ भू भुवः स्वः स्वाहा**—व्याहृतियों से चार आहुतियाँ अग्नि में घृत से छोड़ें। इसके बाद '**ॐ वैश्वानर, जात-वेद! इहावहावह लोहिताक्ष! सर्व-कर्माणि साधय स्वाहा**'—इस मन्त्र से **तीन बार आहुतियाँ** दें।

श्री दुर्गाम्बा के लिए आहुतियाँ

२७. फिर '**मूलं श्रीदुर्गायै स्वाहा दुर्गाया इदं**' अथवा '**श्रीदुर्गायै स्वाहा दुर्गाया इदं**'–यह मन्त्र तीन बार पढ़कर **तीन आहुतियाँ** दे।

गुरु आदि के लिए आहुतियाँ

२८. इसके बाद **१. ॐ गुरवे स्वाहा, २. ॐ परम-गुरवे स्वाहा, ३. ॐ परापर-गुरवे स्वाहा, ४. ॐ परमेष्ठि-गुरवे स्वाहा**–इन चार मन्त्रों से **चारों गुरुओं** के लिए और **१. ॐ रत्यै स्वाहा, २. ॐ प्रीत्यै स्वाहा, ३. ॐ मनोभवायै स्वाहा**'–इन मन्त्रों से **तीनों शक्तियों** को आहुतियाँ प्रदान करे।

इष्ट-देवता के षडङ्गों हेतु आहुतियाँ

२९. फिर इष्ट-देवता के षडङ्गों के लिए **छः आहुतियाँ** दे– **ह्रां हृच्छक्त्यै स्वाहा। ह्रीं शिरः-शक्त्यै स्वाहा। ह्रूं शिखा-शक्त्यै स्वाहा। ह्रैं कवच-शक्त्यै स्वाहा। ह्रौं नेत्र-शक्त्यै स्वाहा। ह्रः अस्त्र-शक्त्यै स्वाहा।**

कामदेव, अष्ट-मातृकाओं, आठ भैरवों, आठ पीठों के लिए आहुतियाँ

३०. इसके बाद **पाँच कामदेवों** को **पाँच आहुतियाँ** प्रदान करे। यथा– **१. ॐ मनोभवाय स्वाहा, २. ॐ मकर-ध्वजाय स्वाहा, ३. ॐ कन्दर्पाय स्वाहा, ४. ॐ मन्मथाय स्वाहा, ५. ॐ कामदेवाय स्वाहा।**

३१. तब **काम-देवों की शक्तियों** को **पाँच आहुतियाँ** प्रदान करे। यथा– **१. ॐ द्राविण्यै स्वाहा, २. ॐ क्षोभिण्यै स्वाहा, ३. ॐ आकर्षिण्यै स्वाहा, ४. ॐ वशीकरिण्यै स्वाहा, ५. ॐ सम्मोहिन्यै स्वाहा।**

३२. फिर आठ शक्तियों को आठ आहुतियाँ प्रदान करे- १. ॐ सुभगायै स्वाहा, २. भगायै स्वाहा, ३. ॐ भग-सर्पिण्यै स्वाहा, ४. ॐ भग-मालायै स्वाहा, ५. ॐ अनङ्गायै स्वाहा, ६. ॐ अनङ्ग-कुसुमायै स्वाहा, ७. ॐ अनङ्ग-मेखलायै स्वाहा, ८. ॐ मदनायै स्वाहा।

३३. तब अष्ट-मातृकाओं को आठ आहुतियाँ दे- १. ॐ ब्राह्मयै स्वाहा, २. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा, ३. ॐ कौमार्यै स्वाहा, ४. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा, ५. ॐ वाराह्यै स्वाहा, ६. ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा, ७. ॐ चामुण्डायै स्वाहा, ८. ॐ महा-लक्ष्म्यै स्वाहा।

३४. आठ भैरवों को आठ आहुतियाँ दे- १. ॐ असिताङ्ग-भैरवाय स्वाहा, २. ॐ रुरु-भैरवाय स्वाहा, ३. ॐ चण्ड-भैरवाय स्वाहा, ४. ॐ क्रोध-भैरवाय स्वाहा, ५. ॐ उन्मत्त-भैरवाय स्वाहा, ६. ॐ कपालि-भैरवाय स्वाहा, ७. ॐ भीषण-भैरवाय स्वाहा, ८. ॐ संहार-भैरवाय स्वाहा।

३५. आठ पीठों को आठ आहुतियाँ दे- १. ॐ काम-रूप-पीठाय स्वाहा, २. ॐ मलय-पीठाय स्वाहा, ३. ॐ कुल-नाग-पीठाय स्वाहा, ४. ॐ कुलान्त-पीठाय स्वाहा, ५. ॐ चौहार-पीठाय स्वाहा, ६. ॐ जालन्धर-पीठाय स्वाहा, ७. ॐ उड्डीयान-पीठाय स्वाहा, ८. ॐ देवी-कोट-पीठाय स्वाहा।

दस भैरवों, दस दिक्-पालों एवं उनके आयुधों हेतु आहुतियाँ

३६. दस भैरवों को दस आहुतियाँ दे- १. ॐ हेतुकाय स्वाहा, २. ॐ त्रिपुरान्तकाय स्वाहा, ३. ॐ वेतालाय स्वाहा, ४. ॐ अग्नि-जिह्वाय स्वाहा, ५. ॐ कालान्तकाय स्वाहा, ६. ॐ कपालाय स्वाहा,

७. ॐ एक-पादाय स्वाहा, ८. ॐ भीम-रूपाय स्वाहा, ९. ॐ मलयाय स्वाहा, १०. ॐ हाटकेश्वराय स्वाहा।

३७. दस दिक्-पालों को दस आहुतियाँ दे– १. ॐ इन्द्राय स्वाहा, २. ॐ अग्नये स्वाहा, ३. ॐ यमाय स्वाहा, ४. ॐ नैर्ऋताय स्वाहा, ५. ॐ वरुणाय स्वाहा, ६. ॐ वायवे स्वाहा, ७. ॐ कुबेराय स्वाहा, ८. ॐ ईशानाय स्वाहा, ९. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, १०. ॐ अनन्ताय स्वाहा।

३८. दिक्-पालों के आयुधों को दस आहुतियाँ दे– १. ॐ वज्राय स्वाहा, २. ॐ शक्त्यै स्वाहा, ३. ॐ दण्डाय स्वाहा, ४. ॐ खड्गाय स्वाहा, ५. ॐ पाशाय स्वाहा, ६. ॐ अंकुशाय स्वाहा, ७. ॐ गदाय स्वाहा, ८. ॐ त्रिशूलाय स्वाहा, ९. ॐ पद्माय स्वाहा, १०. ॐ चक्राय स्वाहा।

बटुक आदि बलि-देवताओं हेतु आहुतियाँ

३९. आठ बलि-देवताओं को आठ आहुतियाँ दे– १. ॐ वटुकाय स्वाहा, २. ॐ योगिन्यै स्वाहा, ३. ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा, ४. ॐ गणेशाय स्वाहा, ५. ॐ वसवे स्वाहा, ६. ॐ सूर्याय स्वाहा, ७. ॐ शिवाय स्वाहा, ८. ॐ भूताय स्वाहा।

श्री दुर्गा सप्तशती के ७०० मन्त्रों द्वारा आहुतियाँ

४०. इसके बाद **श्रीदुर्गा सप्तशती** के तीनों चरितों का न्यासादि करते हुए ७०० **मन्त्रों** के द्वारा आगे दिए गए विधान के अनुसार ७०० **आहुतियाँ** दे। यथा–

हवनात्मक दुर्गा सप्तशती

।। प्रथम चरितम् – प्रथमोऽध्यायः।।

श्री गुरवे नमः, श्री गणेशाय नमः।

विनियोग–ॐ प्रथम–चरितस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः।श्री महा–काली देवता। नन्दा शक्तिः। रक्त–दन्तिका बीजं। अग्निः तत्त्वं। ऋग्–वेदः स्वरूपं। श्रीमहा–काली–प्रीत्यर्थे प्रथम–चरित–होमे विनियोगः।

ऋष्यादि–न्यास–श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि। गायत्री–छन्दसे नमः मुखे। श्रीमहा–काली–देवतायै नमः हृदि। नन्दा–शक्तये नमः नाभौ। रक्त–दन्तिका–बीजाय नमः लिङ्गे। अग्नि–तत्त्वाय नमः गुह्ये। ऋग्–वेद–स्वरूपाय नमः पादौ। श्रीमहा–काली–प्रीत्यर्थे प्रथम–चरित–होमे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

।। श्रीमहा–काली–ध्यान ।।

खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् छूलं भुशुण्डीं शिरः।
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रि-नयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्।।
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्।
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधु-कैटभम्।।

(रक्त पुष्प, गुड़हल आदि से विशेष आहुति देकर हाथ जोड़कर भगवती महा-काली को नमस्कार करे)

।।ॐ नमश्चण्डिकायै।।

।।ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच ।।

सावर्णिः सूर्य-तनयो, यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः। निशामय तदुत्पत्तिं, विस्तराद् गदतो मम।।

ॐ ऐं श्रीं आद्यायै नमः स्वाहा।।१

(कमल-पुष्प से विशेष आहुति)

महा-मायाऽनुभावेन, यथा मन्वन्तराधिपः। स बभूव महा-भागः, सावर्णिस्तनयो रवेः।।

ॐ ऐं ह्रीं काल्यै नमः स्वाहा।।२

स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं, चैत्र-वंश- समुद्भवः। सुरथो नाम राजाऽभूत्, समस्ते क्षिति-मण्डले।।

ॐ ऐं क्लीं कराल्यै नमः स्वाहा।।३

तस्य पालयतः सम्यक्, प्रजाः पुत्रानिवौरसान्। बभूवुः शत्रवो भूपाः, कोला-विध्वंसिनस्तदा।।

ॐ ऐं श्रीं महा-काल्यै नमः स्वाहा।।४

तस्य तैरभवद् युद्धमति-प्रबल-दण्डिनः। न्यूनैरपि च तैर्युद्धेः, कोला-विध्वंसिभिर्जितः।।

ॐ ऐं प्रीं कल्याण्यै नमः स्वाहा।।५

(कमल-पुष्प और कैथा से विशेष आहुति)

ततः स्व-पुरमायातो, निज-देशाधिपोऽभवत्। आक्रान्तः स महा-भागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः।।

ॐ ऐं ह्रां कलावत्यै नमः स्वाहा।।६

(कमल-पुष्प और कैथा से विशेष आहुति)

अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः। कोषो बलं चापहृतं, तत्रापि स्व - पुरे ततः।।

ॐ ऐं ह्रीं महा-काल्यै नमः स्वाहा।।७

ततो मृगया-व्याजेन, हृत-स्वाम्यः स भू-पतिः। एकाकी हयमारुह्य, जगाम गहनं वनम्।।

ॐ ऐं स्त्रों कलि-दर्पघ्न्यै नमः स्वाहा।।८

स तत्राश्रममद्राक्षीद्, द्विज-वर्यस्य मेधसः। प्रशान्त - श्वापदाकीर्णं, मुनि-शिष्योप-शोभितम्।।

ॐ ऐं प्रें कपर्दीश-कृपान्वितायै नमः स्वाहा।।९

तस्थौ कञ्चित् स कालं च, मुनिना तेन सत्-कृतः। इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन् मुनि-वराश्रमे।।

ॐ ऐं म्रीं कालिकायै नमः स्वाहा।।१०

सोऽचिन्तयत् तदा तत्र, ममत्वाकृष्ट-चेतनः। मत्-पूर्वैः पालितं पूर्वं, मया हीनं पुरं हि तत्।।

ॐ ऐं ह्ल्रीं काल-मात्र्यै नमः स्वाहा।।११

मद्-भृत्यैस्तैरसद्-वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा। न जाने स प्रधानो मे, शूर-हस्ती सदा-मदः।।

ॐ ऐं म्लीं कालानल-सम-द्युत्यै नमः स्वाहा।।१२

मम वैरि-वशं यातः, कान् भोगानुप-लप्स्यते। ये ममानुगता नित्यं, प्रसाद-धन-भोजनैः।।

ॐ ऐं स्त्रीं कपर्दिन्यै नमः स्वाहा।।१३

अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य, कुर्वन्त्यन्य-मही-भृताम्। असम्यग्-व्यय-शीलैस्तैः, कुर्वद्भिः सततं व्ययम्।।

ॐ ऐं क्रां करालास्यायै नमः स्वाहा।।१४

सञ्चितः सोऽति-दुःखेन, क्षयं कोषो गमिष्यति। एतच्चान्यच्च सततं, चिन्तयामास पार्थिवः।।

ॐ ऐं ह्स्लीं करुणामृत-सागरायै नमः स्वाहा।।१५

एवं चिन्ता-परो राजा, वृक्ष-मूलं स्थितो यदा। तदाऽऽजगाम वैश्यस्तु, कश्चिदार्त्ति-परस्तदा।।

ॐ ऐं क्रीं कृपा-मय्यै नमः स्वाहा।।१६

तत्र विप्राश्रमाभ्यासे, वैश्यमेकं ददर्श सः। स पृष्टस्तेन-कस्त्वं भो!, हेतुश्चागमनेऽत्र कः।।

ॐ ऐं चां कृपाधारायै नमः स्वाहा।।१७

स शोक इव कस्मात् त्वं, दुर्मना इव लक्ष्यसे ?, इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भू-पतेः प्रणयोदितम्।।

ॐ ऐं भें कृपा-पारायै नमः स्वाहा।।१८

॥ वैश्य समाधि उवाच ॥

मित्राहं वैश्य-जातीयः, समाधिर्नाम विश्रुतः। पुत्र-दारैर्निरस्तश्च, धन-लोभादसाधुभिः॥

ॐ ऐं क्रीं कृपागमायै नमः स्वाहा॥१९

विहीनश्च धनैर्दारैः, पुत्रैरादाय मे धनम्। स्व-जनेन च सन्त्यक्तः, प्राप्तोऽस्मि वनमाशु वै॥

ॐ ऐं वैं कुशान्वै नमः स्वाहा॥२०

वनमभ्यागतो दुःखी, निरस्तश्चाप्त-बन्धुभिः। सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां, कुशलाकुशलात्मिकाम्॥

ॐ ऐं ह्रौं कपिलायै नमः स्वाहा॥२१

प्रवृत्तिं स्व-जनानां च, दाराणां चात्र संस्थितः। किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम्॥

ॐ ऐं युं कृष्णायै नमः स्वाहा॥२२

कथं ते किं नु सद्-वृत्ताः, दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः। कोऽसि त्वं भाग्य-वान् भासि?, कथयस्व प्रियाधुना!॥

ॐ ऐं जुं कृष्णानन्द-विवर्धन्यै नमः स्वाहा॥२३

॥ राजा सुरथ उवाच ॥

सुरथो नाम राजाऽहं, दस्युभिः पीडितोऽभवम्। प्राप्तोऽस्मि गत-राज्योऽत्र, मन्त्रिभिः परि-वञ्चितः॥

ॐ ऐं हं काल-रात्र्यै नमः स्वाहा॥२४

कुटुम्बं मे निरालम्बं, मया हीनं सु-दुःखितम्। भविष्यति च चिन्ताऽऽर्त्तं, व्याधि-शोकाय तापितम्।।

ॐ ऐं शं काम-रूपायै नमः स्वाहा।।२५

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः, पुत्र-दारादिभिर्धनैः। तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम्?।।

ॐ ऐं रों काम-पाश-विमोचन्यै नमः स्वाहा।।२६

यैर्निरस्तोऽसि पुत्राद्यैरसद्-भूतैः सु-वालिशैः। तान् दृष्ट्वा किं सुखं तेऽद्य, भविष्यति महा-मते ?।।

ॐ ऐं यं कादम्बिन्यै नमः स्वाहा।।२७

।। वैश्य समाधि उवाच ।।

एवमेतद् यथा प्राह, भवानस्मद्-गतं वचः। मनो मे न स्थिरं राजनभवदद्य दुःखितम्।।

ॐ ऐं विं कला-धारायै नमः स्वाहा।।२८

चिन्तयाऽत्र कुटुम्बस्य, दुस्त्यजस्य दुरात्मभिः। किं करोमि न बध्नाति, मम निष्ठुरतां मनः।।

ॐ ऐं वैं कलि-कल्मष-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।२९

यैः सन्त्यज्य पितृ-स्नेहं, धन-लुब्धैर्निराकृतः। पतिः स्व-जन-हार्दं च, हार्दि तेष्वेव मे मनः।।

ॐ ऐं चें कुमारी-पूजन-प्रीतायै नमः स्वाहा।।३०

किमेतन्नाभि-जानामि, जानन्नपि महा-मते! यत् प्रेम-प्रवणं चित्तं, विगुणेष्वपि बन्धुषु।।

ॐ ऐं ह्रीं कुमारी-पूजकालयायै नमः स्वाहा।।३१

तेषां कृते मे निःश्वासो, दौर्मनस्यं च जायते। करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् !।।

ॐ ऐं क्रुं कुमारी-भोजनानन्दायै नमः स्वाहा।।३२

।। मार्कण्डेय उवाच ।।

ततस्तौ सहितौ विप्र! तं मुनिं समुपस्थितौ। समाधिर्नाम वैश्योऽसौ, स च पार्थिव-सत्तमः।।

ॐ ऐं सं कुमारी-रूप-धारिण्यै नमः स्वाहा।।३३

कृत्वा तु तौ यथा-न्यायं, यथार्हं तेन संविदम्। उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्य-पार्थिवौ।।

ॐ ऐं कं कदम्ब-वन-सञ्चारायै नमः स्वाहा।।३४

गत्वा तं प्रणिपत्याह, राजा ऋषिमनुत्तमम्। तमुवाच परं ज्ञानं, शोक-मोह-विनाशनम्।।

ॐ ऐं श्रां कदम्ब-वन-वासिन्यै नमः स्वाहा।।३५

।। राजा सुरथ उवाच ।।

भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत्। दुःखाय यन्मे मनसः, स्व-चित्तायत्ततां विना।।

ॐ ऐं त्रों कदम्ब-पुष्प-सन्तोषायै नमः स्वाहा।।३६

ममत्वं गत-राज्यस्य, राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि। जानतोऽपि यथाऽज्ञस्य, किमेतन्मुनि-सत्तम ?।।

ॐ ऐं स्त्रां कदम्ब-पुष्प-मालिन्यै नमः स्वाहा।।३७

अयं च निकृतः पुत्रैदारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः। स्व-जनेन च सन्त्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति।।

ॐ ऐं ज्यैं किशोर्यै नमः स्वाहा।।३८

एवमेष तथाऽहं च, द्वावप्यत्यन्त-दुःखितौ। दृष्ट-दोषेऽपि विषये, ममत्वाकृष्ट-मानसौ।।

ॐ ऐं रौं काल-कण्ठायै नमः स्वाहा।।३९

तत् किमेतन्महा-भाग?, यन्मोहो ज्ञानिनोरपि। ममास्य च भवत्येषाऽविवेकान्धस्य मूढता।।

ॐ ऐं द्रां कल-नाद-निनादिन्यै नमः स्वाहा।।४०

(लवङ्ग से विशेष आहुति)

मोहो नैवापसरति, किं तत्-कारणमद्भुतम्।स्वामिँस्त्वमसि सर्वज्ञः, सर्व-संशय-नाश-कृत्!।।

ॐ ऐं द्रों कादम्बरी-पान-रतायै नमः स्वाहा।।४१

।। मेधस-ऋषिरुवाच ।।

ज्ञानमस्ति समस्तस्य, जन्तोर्विषय-गोचरे। विषयश्च महा-भाग!, याति चैवं पृथक् पृथक्।।

ॐ ऐं ह्रीं कादम्बरी-प्रियायै नमः स्वाहा।।४२

(जटामासी से विशेष आहुति)

दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्, रात्रावन्धास्तथाऽपरे। केचिद् दिवा तथा रात्रौ, प्राणिनस्तुल्य-दृष्टयः।।

ॐ ऐं द्रूं कपाल-पात्र-निरतायै नमः स्वाहा।।४३

(जटामासी से विशेष आहुति)

ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं, किन्तु ते नहि केवलम्। यतो हि ज्ञानिनः सर्वे, पशु-पक्षि-मृगादयः।।

ॐ ऐं शीं कङ्काल-माल्य-धारिण्यै नमः स्वाहा।।४४

ज्ञानं च तन्मनुष्याणां, यत्-तेषां मृग-पक्षिणाम्। मनुष्याणां च यत्-तेषां, तुल्यमन्यत् तथोभयोः।।

ॐ ऐं मीं कमलासन-सन्तुष्टायै नमः स्वाहा।।४५

ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्, पतङ्गाञ्छाव-चञ्चुषु। कण-मोक्षाद् ऋतान् मोहात्, पीड्यमानानपि क्षुधा।।

ॐ ऐं श्रौं कमलासन-वासिन्यै नमः स्वाहा।।४६

मानुषा मनुज-व्याघ्र!, साभिलाषाः सुतान् प्रति। लोभात् प्रत्युपकाराय, नन्वेतान् किं न पश्यसि?।।

ॐ ऐं जूं कमलालय-मध्यस्थायै नमः स्वाहा।।४७

तथापि ममताऽऽवर्त्ते, मोह-गर्ते निपातिताः। महा-माया-प्रभावेण, संसार-स्थिति-कारिणा।।

ॐ ऐं ह्ल्रूं कमलामोद-मोदिन्यै नमः स्वाहा।।४८

तन्नात्र विस्मयः कार्यो, योग-निद्रा जगत्-पतेः। महा-माया हरेश्चैषा, तया सम्मोह्यते जगत्।।

ॐ ऐं श्रूं कल-हंस-गत्यै नमः स्वाहा।।४९

ज्ञानिनामपि चेतांसि, देवी भगवती हि सा। बलादाकृष्य मोहाय, महा-माया प्रयच्छति।।

ॐ ऐं प्रीं क्लैव्य-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।५०

(५०, ५१ पीली सरसों से विशेष आहुति)

तया विसृज्यते विश्वं, जगदेतच्चराचरम्। सैषा प्रसन्ना वरदा, नृणां भवति मुक्तये।।

ॐ ऐं रं काम-रूपिण्यै नमः स्वाहा।।५१

सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतु - भूता सनातनी। संसार - बन्ध - हेतुश्च, सैव सर्वेश्वरेश्वरी!।।

ॐ ऐं वं काम-रूप-कृतावासायै नमः स्वाहा।।५२

(दूध से विशेष आहुति)

।। राजा सुरथ उवाच ।।

भगवन्! का हि सा देवी, महा-मायेति यां भवान्। ब्रवीति कथमुत्पन्ना, सा कर्मास्याश्च किं द्विज?।।

ॐ ऐं व्रीं काम-पीठ-विलासिन्यै नमः स्वाहा।।५३

यत्-प्रभावा च सा देवी, यत्-स्वरूपा यदुद्भवा। तत् सर्वं श्रोतुमिच्छामि, त्वत्तो ब्रह्म-विदां वर!।।

ॐ ऐं ब्लूं कमनीयायै नमः स्वाहा।।५४

।। मेधस-ऋषिरुवाच ।।

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम्। तथापि तत्-समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम।।

ॐ ऐं स्त्रौं कल्प-लतायै नमः स्वाहा।।५५

देवानां कार्य-सिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा। उत्पन्नेति तदा लोके, सा नित्याऽप्यभिधीयते।।

ॐ ऐं ब्लां कमनीय-विभूषणायै नमः स्वाहा।।५६

योग-निद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवी-कृते। आस्तीर्य शेषमभजत्, कल्पान्ते भगवान् प्रभुः।।

ॐ ऐं लूं कमनीय-गुणाराध्यायै नमः स्वाहा।।५७

तदा द्वावसुरौ घोरौ, विख्यातौ मधु-कैटभौ। विष्णु-कर्ण-मलोद्भूतौ, हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ।।

ॐ ऐं सां कोमलाङ्ग्यै नमः स्वाहा।।५८

(कमल-पुष्प से विशेष आहुति)

स नाभि-कमले विष्णोः, स्थितो ब्रह्मा प्रजा-पतिः। दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ, प्रसुप्तं च जनार्दनम्।।

ॐ ऐं रौं कृशोदर्यै नमः स्वाहा।।५९

तुष्टाव योग-निद्रां तामेकाग्र-हृदय-स्थितः। विबोधनार्थाय हरेर्हरि-नेत्र-कृतालयाम्।।
ॐ ऐं ह्सौं कारणामृत-सन्तोषायै नमः स्वाहा।।६०

।। ब्रह्मोवाच ।।

विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं, स्थिति-संहार-कारिणीम्। निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।।
ॐ ऐं क्रूं कारणानन्द-सिद्धिदायै नमः स्वाहा।।६१

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि, वषट्-कार-स्वरात्मिका। सुधा त्वमक्षरे! नित्या, त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।।
ॐ ऐं शौं कारणानन्द-जापिष्टायै नमः स्वाहा।।६२

(किसी पुष्प से विशेष आहुति)

अर्ध-मात्रा-स्थिता नित्या, यानुच्चार्या विशेषतः। त्वमेव सन्ध्या सावित्री, त्वं देवि! जननी परा।।
ॐ ऐं श्रौं कारणार्चित-हर्षितायै नमः स्वाहा।।६३

त्वयैतद् धार्यते विश्वं, त्वयैतत् सृज्यते जगत्। त्वयैतत् पाल्यते देवि! त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।।
ॐ ऐं वं कारणार्णव-समग्रायै नमः स्वाहा।।६४

विसृष्टौ सृष्टि-रूपा त्वं, स्थिति-रूपा च पालने। तथा संहृति-रूपान्ते, जगतोऽस्य जगन्मये !।।
ॐ ऐं त्रूं कारण-व्रत-पालिन्यै नमः स्वाहा।।६५

(लाल पुष्प से विशेष आहुति)

महा-विद्या महा-माया, महा-मेधा महा-स्मृतिः। महा-मोहा च भवती, महा-देवी महा-सुरी।।
ॐ ऐं क्रौं कस्तूरी-सौरभामोदायै नमः स्वाहा।।६६

प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य, गुण-त्रय-विभाविनी। काल - रात्रिर्महा - रात्रिर्मोह-रात्रिश्च दारुणा।।
ॐ ऐं क्लूं कस्तूरी-तिलकोज्ज्वलायै नमः स्वाहा।।६७

त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोध-लक्षणा। लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।।
ॐ ऐं क्लीं कस्तूरी-पूजन-रतायै नमः स्वाहा।।६८

(घृत से विशेष आहुति)

खड्गिनी शूलिनी घोरा, गदिनी चक्रिणी तथा। शङ्खिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघायुधा।।
ॐ ऐं श्रीं कस्तूरी-पूजक-प्रियायै नमः स्वाहा।।६९

(शङ्ख-पुष्पी से विशेष आहुति)

सौम्या सौम्य - तराऽशेष - सौम्येभ्यस्त्वति - सुन्दरी! परऽपराणां परमा, त्वमेव परमेश्वरी।।
ॐ ऐं ब्लूं कस्तूरी-दाह-जनन्यै नमः स्वाहा।।७०

यच्च किञ्चित् क्वचिद् वस्तु, सदसद् वाऽखिलात्मिके! तस्य सर्वस्य या शक्तिः, सा त्वं किं स्तूयसे तदा।।
ॐ ऐं ठां कस्तूरी-मृग-तोषिण्यै नमः स्वाहा।।७१

यया त्वया जगत्-स्रष्टा, जगत् पात्यत्ति यो जगत्। सोऽपि निद्रा-वशं नीतः, कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।।

ॐ ऐं ठ्रीं कस्तूरी-भोजन-प्रीतायै नमः स्वाहा।।७२

विष्णुः शरीर-ग्रहणमहमीशान एव च। कारितास्ते यतोऽतस्त्वां, कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।।

ॐ ऐं स्त्रां कर्पूर-चन्दनोक्षितायै नमः स्वाहा।।७३

(पीली सरसों से विशेष आहुति)

सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि! संस्तुता। मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधु-कैटभौ।।

ॐ ऐं क्लूं कर्पूर-कारणाह्लादायै नमः स्वाहा।।७४

(मधु अथवा कारण से विशेष आहुति)

प्रबोधं च जगत्-स्वामी, नीयतामच्युतो लघु। बोधश्च क्रियतामस्य, हन्तुमेतौ महाऽसुरौ।।

ॐ ऐं क्रैं कर्पूरामृत-पायिन्यै नमः स्वाहा।।७५

देवि! त्वमस्य जगतः, किल मूल-कारणं हि। ज्ञातं मयाऽधुनाः सकल - वेद - वचोभिरम्ब।।
यत्-प्रभु-विष्णुरप्यखिल-लोक-विवेक-कर्त्ता। निद्रा-वशं च गमितः, पुरुषोत्तमो विभुः यः।।

ॐ ऐं च्रां कर्पूर-सागर-स्नातायै नमः स्वाहा।।७६

को वेद ते जननि! मोह - विलास - लीलां। मूढोऽस्म्यहं हरिरयं विवशश्च शेते।।
ईदृक् - तया सकल - भूत - मनो - निवासे। विद्वत्तमो विबुध - कोटिषु निर्गुणाय।।

ॐ ऐं फ्रां कर्पूर-सागर-लयायै नमः स्वाहा।।७७

सांख्या वदन्ति पुरुषं प्रकृतिं च यां तां। चैतन्य - भाव - रहितां जगतश्च कर्त्रीम्।।
किं सादृशाऽसि कथमत्र जगन्निवासश्चैतन्यता - विरहितो विहितस्त्वयाऽद्य।।

ॐ ऐं त्रीं कूर्च-बीज-जप-प्रीतायै नमः स्वाहा।।७८

नाट्यं तनोषि सगुणा विविध-प्रकारं। नो वेत्ति कोऽपि तव कृत्य-विधान-योगम्।।
ध्यायन्ति यां मुनि-गणा नियतं त्रि-कालं, सन्ध्या तु नाम परिकल्प्य गुणा भवानि !।।

ॐ ऐं जूं कूर्च-जाप-पारायणायै नमः स्वाहा।।७९

बुद्धिर्हि बोध - करणा जगतां सदस्वं। श्रीश्चासि देवि! सततं सुखदा सुराणाम्।।
कीर्तिस्तथा मति - धृती किल कान्तिरेव। श्रद्धा रतिश्च सकलेषु जनेषु मातः !।।

ॐ ऐं स्लूं कुलीनायै नमः स्वाहा।।८०

नातः परं किल वितर्क-शतैः प्रमाणं। प्राप्तं मया यदिह दुःखमतिर्गतेन।।
त्वं चात्र सर्व-जगतां जननी तु सत्यं, निद्रालुतां वितरता हरिणाऽत्र दृष्टम्।।

ॐ ऐं नों कौलिकाऽराध्यायै नमः स्वाहा।।८१

त्वं देवि! वेद-विदुषामपि दुर्विभाव्या। वेदोऽपि नूनमखिलार्थतया न वेद।।
यस्मात् त्वदुद्भवमसौ श्रुतिराप्नुवाना। प्रत्यक्षमेव सकलं तव कार्यमेतत्।।
ॐ ऐं स्त्रीं कौलिक-प्रिय-कारिण्यै नमः स्वाहा।।८२

कस्ते चरितमखिलं भुवि वेद धीमान्। नाहं हरिर्न च भवो न सुरास्तथाऽन्ये।।
ज्ञातुं क्षमाश्च मुनयो न ममात्मजाश्च। दुर्वाच्य एव महिमा तव सर्व-लोके।।
ॐ ऐं प्रूं कुलाचारायै नमः स्वाहा।।८३

यज्ञेषु देवि! यदि नाम न ते वदन्ति। स्वाहा च वेद - विदुषो हवने कृतेऽपि।।
न प्राप्नुवन्ति सततं मख - भाग - धेयं। देवास्त्वमेव विबुधेश्वरि! वृत्ति-दात्री।।
ॐ ऐं स्त्रूं कौतुकिन्यै नमः स्वाहा।।८४

त्राता वयं भगवति! प्रथमं त्वया वै। देवारि-सम्भव-भयादधुना तथैव।।
भीतोऽस्मि देवि! वरदे! शरणं गतोऽस्मि। घोरं निरीक्ष्य मधुना सह कैटभं च।।
ॐ ऐं त्रां कुल-मार्ग-प्रदर्शिन्यै नमः स्वाहा।।८५

नो वेत्ति विष्णुरधुना मम दुःखमेतज्जाने। त्वयाऽऽत्म - विवशी-कृत - देह-यष्टिः।।
मुञ्चादि - देवमथवा जहि दानवेन्द्रौ। यद् रोचते तव कुरुष्व महानुभावे !।।
ॐ ऐं वां काशीश्वर्यै नमः स्वाहा।।८६

जानन्ति ये न तव देवि! परं प्रभावं। ध्यायन्ति ते हरि- हरावपि मन्द - चित्ताः।।
ज्ञातं ममाद्य जननि! प्रकटं प्रमाणं। यद् विष्णुरप्यति - तरा विवशोऽथ शेते।।

ॐ ऐं ओं कष्ट-हर्त्र्यै नमः स्वाहा।।८७

सिन्धूद्भवाऽपि न हरिं प्रति - बोधितुं वै। शक्तायति तव वंशानुगमाऽद्य शक्त्या।।
मन्ये त्वया भगवति! प्रसभं रमाऽपि। प्रस्वापिता न बुबुधे विवशी - कृतेव।।

ॐ ऐं श्रौं काशीश-वर-दायिन्यै नमः स्वाहा।।८८

धन्यास्त एव भुवि भक्ति-परा स्तवांघ्रौ। त्यक्त्वाऽन्य-देव-भजनं त्वयि लीन-भावाः।।
कुर्वन्ति देवि! भजनं सकलं निकामं। ज्ञात्वा समस्त - जननीं किल काम - धेनुम्।।

ॐ ऐं ऋं काशीश्वर-कृत-मोदायै नमः स्वाहा।।८९

धी-कान्ति-कीर्ति-शुभ-वृत्ति-गुणादयस्ते। विष्णोर्गुणास्तु परिहृत्य गताः क्व चाऽद्य?।।
वन्दी - कृतो हरिरसौ ननु निद्रयाऽत्र। शक्त्या तवैव भगवत्यति - मानवत्या।।

ॐ ऐं रूं काशीश्वर-मनोरमायै नमः स्वाहा।।९०

त्वं शक्तिरेव जगतामखिल - प्रभावा। त्वन्निर्मितं च सकलं खलु भाव - मात्रम्।।
त्वं क्रीडसे निज - विनिर्मित - मोह - जाले। नाट्ये यथा विहरते स्व - कृते च नृत्ये।।

ॐ ऐं क्लीं कल-मञ्जीर-चरणायै नमः स्वाहा।।९१

विष्णुस्त्वया प्रकटितः प्रथमं युगादौ। दत्ता च शक्तिरमला खलु पालनाय।।
त्रातं सर्वमखिलं विवशोऽशक्ततोऽद्य। यद् रोचते तव तथा प्रकरोषि नूनम्।।
ॐ ऐं दुं क्वणत्-काञ्ची-विभूषणायै नमः स्वाहा।।९२
सृष्ट्वाऽत्र मां भगवति! प्रविनाशितुं। चेन्नेच्छाऽस्ति ते कुरु दयां परिहृत्य मौनम्।।
कस्मादिमौ प्रकटितौ किल काल-रूपौ। यद् वा भवानि! हसितुं नु किमिच्छसे माम् ?।।
ॐ ऐं ह्रीं काञ्चनाद्रि-कृतागारायै नमः स्वाहा।।९३
ज्ञातं मया तव विचेष्टितमद्भुतं वै। कृत्वाऽखिलं जगदिदं रमसे स्वतन्त्रा।।
लीनं करोषि सकलं किल मां तथैव। हन्तुं स्वमिच्छसि भवानि! किमत्र चित्रम्।।
ॐ ऐं गूं काञ्चनाचल-कौमुद्यै नमः स्वाहा।।९४
कामं कुरुष्व क्षयमद्य ममैव मातः। दुःखं न मे मरणजं जगदम्बिकेऽत्र।।
कर्त्ता त्वमेव विहितः प्रथमं स चायं। दैत्याहतोऽथ मृत एव यशो गरिष्ठम्।।
ॐ ऐं लां काम-बीज-जपानन्दायै नमः स्वाहा।।९५
उत्तिष्ठ देवि! कुरु रूपमिवाद्भुतं त्वां। मां वा त्विमौ जहि यथेच्छसि बाल-लीले !।।
नो चेत् प्रबोधय हरिं निहनेदिमौ। यस्त्वत् - साध्यमेतदखिलं किल कार्य - जातम्।।
ॐ ऐं ह्रीं काम-बीज-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा।।९६

॥ मेधस ऋषिरुवाच ॥

एवं स्तुता तदा देवी, तामसी तत्र वेधसा। विष्णोः प्रबोधनार्थाय, निहन्तुं मधु-कैटभौ।।

ॐ ऐं गं कु-मतिघ्न्यै नमः स्वाहा।।९७

नेत्रास्य-नासिका-बाहु-हृदयेभ्यस्तथोरसः। निर्गम्य दर्शने तस्थौ, ब्रह्मणोऽव्यक्त-जन्मनः।।

ॐ ऐं ऐं कुलीनार्ति-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।९८

(मधु अथवा कारण से विशेष आहुति)

उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः। एकार्णवेऽहि-शयनात्, ततः स ददृशे च तौ।।

ॐ ऐं श्रौं कुल-कामिन्यै नमः स्वाहा।।९९

मधु-कैटभौ दुरात्मानावति-वीर्य-पराक्रमौ। क्रोध-रक्तेक्षणावत्तुं, ब्रह्माणं जनितोद्यमौ।।

ॐ ऐं जूं ऐं-कारायै नमः स्वाहा।।१००

(धूप से विशेष आहुति)

समुत्थाय ततस्ताभ्यां, युयुधे भगवान् हरिः। पञ्च-वर्ष-सहस्राणि, बाहु-प्रहरणो विभुः।।

ॐ ऐं डें महा-कराल्यायै नमः स्वाहा।।१०१

(मधु अथवा कारण से विशेष आहुति)

तावप्यति-बलोन्मत्तौ, महा-माया-विमोहितौ। उक्त-वन्तौ वरोऽस्मत्तो, व्रियतामिति केशवम्!।।

ॐ ऐं श्रौं महा-पिङ्गलायै नमः स्वाहा।।१०२

(धूप से विशेष आहुति)

प्रार्थयस्व हृषीकेश!, मनोऽभिलषितं वरम्। तयोस्तद्-वचनं श्रुत्वा, प्रत्युवाच जनार्दनः।।

ॐ ऐं छ्रां काल-काल्यै नमः स्वाहा।।१०३

।। विष्णुरुवाच।।

भवेतामद्य मे तुष्टौ, मम वध्यावुभावपि। किमन्येन वरेणात्र, एतावद्धि वृतं मम।।

ॐ ऐं क्लीं काल-कण्टक-घातिन्यै नमः स्वाहा।।१०४

।। मेधस ऋषिरुवाच।।

वञ्चिताभ्यामिति तदा, सर्वमापो-मयं जगत्। विलोक्य ताभ्यां गदितो, भगवान् कमलेक्षणः।।

ॐ ऐं ह्लीं शं काम-क्रोध-विवर्जितायै नमः स्वाहा।।१०५

आवां जहि न यत्रोर्वी, सलिलेन परिप्लुता। तथेत्युक्त्वा भगवता, शङ्ख-चक्र-गदा-भृता।।

ॐ ऐं ह्लीं हं काम-संहत्र्यै नमः स्वाहा।।१०६

(पेठा से विशेष आहुति)

कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने, जघने शिरसी तयोः। गत-प्राणौ तदा जातौ, दानवौ मधु-कैटभौ।।

ॐ ऐं ह्रौं कामाक्ष्यै नमः स्वाहा।।१०७

एवमेषा समुत्पन्ना, ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्। प्रभावमस्या देव्यास्तु, भूयः शृणु वदामि ते ऐं ॐ।।

ॐ ऐं श्रीं शिवायै नमः स्वाहा।।१०८

(भोज-पत्र एवं शहद से विशेष आहुति)

ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु। (यजमानस्य कामा) जगदम्बाऽर्पणमस्तु–ऐसा कहकर '**वेदी**' के सम्मुख जल छोड़े।

फिर **पाँच आहुतियाँ** नीचे लिखे मन्त्रों से घी की दें–

१. ॐ प्राणाय स्वाहा। २. ॐ अपानाय स्वाहा। ३. ॐ समानाय स्वाहा। ४. ॐ उदानाय स्वाहा। ५. ॐ व्यानाय स्वाहा।

अन्त में, एक उल्टे **साबुत पान** पर शाकल्य, घी में भिगोकर **१ कमल गट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी** इलायची, गुग्गल और **शहद** ये सब वस्तुएँ **स्रुची** में रखकर खड़े होकर आहुति दें। इस अध्याय में विशेष आहुति शहद से होती है–

पृ० ३८

ॐ साङ्गायै सायुधायै स-शक्तिकायै स-परिवारायै स-वाहनायै ऐं-वीजाधिष्ठात्र्यै महा-कालिकायै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः।

‘आनन्द’-रूपिणि! महा-कालिके!

‘ऐं’-वीजाधिष्ठात्र्यै

‘ब्रह्म’-विद्यायै त्वां ध्याये!

।। मध्यम चरितम् – द्वितीयोऽध्यायः ।।

विनियोग–ॐ मध्यम-चरितस्य श्रीविष्णुर्ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। श्रीमहा-लक्ष्मीर्देवता। शाकम्भरी शक्तिः। दुर्गा बीजं। वायुस्तत्त्वं। यजुर्वेदः स्वरूपं। श्री महा-लक्ष्मी-प्रीत्यर्थं मध्यम-चरित-होमे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास– श्रीविष्णु-ऋषये नमः शिरसि। उष्णिक्-छन्दसे नमः मुखे। श्री महा-लक्ष्मी-देवतायै नमः हृदि। शाकम्भरी-शक्तये नमः नाभौ। दुर्गा-बीजाय नमः लिङ्गे। वायु-तत्त्वाय नमः गुह्ये। यजुर्वेद-स्वरूपाय नमः पादौ। श्रीमहा-लक्ष्मी-प्रीत्यर्थे मध्यम-चरित-होमे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

।। श्रीमहा-लक्ष्मी-ध्यान ।।

अक्ष - स्रक् - परशुं गदेषु - कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्।
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा - भाजनम्।।
शूलं पाश - सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्।
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज - स्थिताम्।।

(कमल-पुष्प से विशेष आहुति देकर हाथ जोड़कर भगवती महा-लक्ष्मी को नमस्कार करे)

।। ॐ ह्रीं मेधस ऋषिरुवाच।।

देवासुरमभूद् युद्धं, पूर्णमब्द-शतं पुरा। महिषेऽसुराणामधिपे, देवानां च पुरन्दरे।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रौं महा-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा।।१०९

तत्रासुरैर्महा - वीर्यैर्देव - सैन्यं पराजितम्। जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्सूं दुर्गायै नमः स्वाहा।।११०

ततः पराजिता देवाः, पद्म-योनिं प्रजा-पतिम्। पुरस्कृत्य गतास्तत्र, यत्रेश-गरुड-ध्वजौ।।

ॐ ऐं ह्रीं हौं महा-गौर्यै नमः स्वाहा।।१११

।। देवा ऊचुः।।

यथा-वृत्तं तयोस्तद्-वन्-महिषासुर-चेष्टितम्। त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभि-भव-विस्तरम्।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं चण्डिकायै नमः स्वाहा।।११२

सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां, यमस्य वरुणस्य च। अन्येषां चाधिकारान् स, स्वयमेवाधि-तिष्ठति।।

ॐ ऐं ह्रीं अं सर्वज्ञायै नमः स्वाहा।।११३

स्वर्गान्निराकृताः सर्वे, तेन देव-गणा भुवि। विचरन्ति यथा मर्त्या, महिषेण दुरात्मना।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्व-लोकेशायै नमः स्वाहा।।११४

एतद् वः कथितं सर्वममरारि-विचेष्टितम्। शरणं वः प्रपन्नाः स्मो, वधस्तस्य विचिन्त्यताम्।।

ॐ ऐं ह्रीं चां सर्व-कर्म-फल-प्रदायै नमः स्वाहा।।११५

।। मेधस ऋषिरुवाच ।।

श्रुत्वा तद्-वचनं विष्णुस्तानुवाच हसन्निव। युद्धं कृतं पुराऽस्माभिस्तथापि न मृतो ह्यसौ।।

ॐ ऐं ह्रीं मुं सर्व-तीर्थ-मयायै नमः स्वाहा।।११६

।। विष्णुरुवाच ।।

अद्य सर्व-सुराणां वै, तेजोभी-रूप-सम्पदा। उत्पन्ना चेद् वरारोहा-सा हन्यात् तं रणे बलात्।।

ॐ ऐं ह्रीं डां पुण्यायै नमः स्वाहा।।११७

हयारिं वर-दृप्तं च, माया-गत-विशारदम्। हन्तुं योग्या भवेन्नारी, शक्यं तैर्निर्मिता हि नः।।

ॐ ऐं ह्रीं यैं देव-योनये नमः स्वाहा।।११८

प्रार्थयन्तु च तेजोंऽशान्, स्त्रियोऽस्माकं तथा पुनः। उत्पन्नैस्तैश्च तेजोंऽशैस्तेजो-राशिर्भवेद् यथा।।

ॐ ऐं ह्रीं विं अयोनिजायै नमः स्वाहा।।११९

आयुधानि वयं दद्मः, सर्वे रुद्र-पुरोगमाः। तस्यै सर्वाणि दिव्यानि, त्रिशूलादीनि यानि च।।

ॐ ऐं ह्रीं च्चें भूमिजायै नमः स्वाहा।।१२०

सर्वायुध-धरा नारी, सर्व-तेजः-समन्विता। हनिष्यति दुरात्मानं, तं पापं मद-गर्वितम्''।।

ॐ ऐं ह्रीं ईं कोटि-सूर्य-सम-प्रभायै नमः स्वाहा।।१२१

।। मेधस ऋषिरुवाच ।।

इत्थं निशम्य देवानां, वचांसि मधु-सूदनः। चकार कोपं शम्भुश्च, भ्रकुटी-कुटिलाननौ।।

ॐ ऐं ह्रीं सौं महा-मात्रे नमः स्वाहा।।१२२

ततोऽति-कोप-पूर्णस्य, चक्रिणो वदनात् ततः। निश्चक्राम महत् तेजो, ब्रह्मणः शङ्करस्य च।।

ॐ ऐं ह्रीं व्रां तेजोवत्यै नमः स्वाहा।।१२३

अन्येषां चैव देवानां, शक्रादीनां शरीरतः। निर्गतं सुमहत् तेजस्तच्चैक्यं सम-गच्छत।।

ॐ ऐं ह्रीं त्रौं विन्ध्य-वासिन्यै नमः स्वाहा।।१२४

अतीव-तेजसः कूटं, ज्वलन्तमिव पर्वतम्। ददृशुस्ते सुरास्तत्र, ज्वाला-व्याप्त-दिगन्तरम्।।

ॐ ऐं ह्रीं लूं वनीशायै नमः स्वाहा।।१२५

रक्त-वर्णं शुभाकारं, पद्म-राग-मणि-प्रभम्। किञ्चिच्छीतं तथा चौष्णं, मरीचि-जाल-मण्डितम्।।

ॐ ऐं ह्रीं वं देव-मात्रे नमः स्वाहा।।१२६

निःसृतं हरिणा दृष्टं, हरेण च महात्मना। विस्मितौ तौ महा-राजौ, बभूवतुरुरु-क्रमौ।।

ॐ ऐं ह्रीं वं कमलायै नमः स्वाहा।।१२७

शङ्करस्य शरीरात् तु, निःसृतं महदद्भुतम्। रक्त-वर्णमभूत् तीव्रं, दुर्दर्शं दारुणं महत्।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रां सर्व-विद्याधि-देवतायै नमः स्वाहा।।१२८

भयङ्करं च दैत्यानां, देवानां विस्मय-प्रदम्। घोर-रूपं गिरि-प्रख्यं, तमो-गुणमिवापरम्।।

ॐ ऐं ह्रीं सौं वाण्यै नमः स्वाहा।।१२९

ततो विष्णु-शरीरात् तु, तेजो-राशिमिवापरम्। नीलं सत्त्व-गुणोपेतं, प्रादुरास महा-द्युतिः।।

ॐ ऐं ह्रीं यं सर्व-लोक-प्रियायै नमः स्वाहा।।१३०

ततश्चेन्द्र-शरीरात् तु, चित्र-रूपं दुरासदम्। आविरासीत् सु-संवृत्तं, तेजः सर्व-गुणात्मकम्।।

ॐ ऐं ह्रीं ऐं सर्व-गर्व-विमर्दिन्यै नमः स्वाहा।।१३१

कुबेर - यम-वह्नीनां, शरीरेभ्यः समन्ततः। निश्चक्राम महत् - तेजो, वरुणस्य तथैव च।।

ॐ ऐं ह्रीं मूं निरहङ्कारायै नमः स्वाहा।।१३२

अन्येषां चैव देवानां, शरीरेभ्योऽति-भास्वरम्। निर्गतं तन्महा-तेजो-राशिरासीन् महोज्ज्वलः।।

ॐ ऐं ह्रीं सः निर्गुणायै नमः स्वाहा।।१३३

तं दृष्ट्वा विस्मिताः सर्वे, देवा विष्णु-पुरागमाः। तेजो-राशिं महा-दिव्यं, हिमाचलमिवापरम्।।

ॐ ऐं ह्रीं हं अनीश्वर्यै नमः स्वाहा।।१३४

पश्यतां तत्र देवानां, तेजः-पुञ्ज-समुद्भवा। बभूवाति-वरा नारी, सुन्दरी विस्मय-प्रदा।।

ॐ ऐं ह्रीं सं आधार-शक्त्यै नमः स्वाहा।।१३५

अतुलं तत्र तत् तेजः, सर्व-देव-शरीरजम्। एकस्थं तदभून्नारी, व्याप्त-लोक-त्रयं त्विषा।।
ॐ ऐं ह्रीं सों निर्गुणायै नमः स्वाहा।।१३६
त्रिगुणा सा महा-लक्ष्मीः, सर्व-देव शरीरजा। अष्टादश-भुजा रम्या, त्रि-वर्णा विश्व-मोहिनी।।
ॐ ऐं ह्रीं म्ब्रीं सर्व-कर्म-विवर्जितायै नमः स्वाहा।।१३७
श्वेतानना कृष्ण-नेत्रा, संरक्ताधर-पल्लवा। ताम्र-पाणि-तला कान्ता, दिव्य-भूषण-भूषिता।।
ॐ ऐं ह्रीं यूं धर्म-निष्ठायै नमः स्वाहा।।१३८
अष्टादश-भुजा देवी, सहस्त्र-भुज-मण्डिता। यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्।।
ॐ ऐं ह्रीं त्रूं धर्म-ज्ञानायै नमः स्वाहा।।१३९
याम्येन चाभवन् केशा, बाहवो विष्णु-तेजसा। सौम्येन स्तनयोर्युग्मं, मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्।।
ॐ ऐं ह्रीं स्त्रीं सर्व-संहार-कारिण्यै नमः स्वाहा।।१४०
वारुणेन च जङ्घोरू, नितम्बस्तेजसा भुवः। ब्रह्मणस्तेजसा पादौ, तदंगुल्योऽर्क-तेजसा।।
ॐ ऐं ह्रीं आं कान्तायै नमः स्वाहा।।१४१
(१४१-१४२ जटामासी से विशेष आहुति)
वसूनां च करांगुल्यः, कौबेरेण च नासिका। तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः, प्राजापत्येन तेजसा।।
ॐ ऐं ह्रीं प्रें कर्म-ज्ञान-प्रदायै नमः स्वाहा।।१४२

नयन-त्रितयं जज्ञे, तथा पावक-तेजसा। भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः, श्रवणावनिलस्य च।।
ॐ ऐं ह्रीं शं गुण-त्रय-विवर्जितायै नमः स्वाहा।।१४३
अन्येषां चैव देवानां, सम्भवस्तेजसां शिवा। ततः समस्त-देवानां, तेजो-राशि-समुद्भवाम्।।
ॐ ऐं ह्रीं ह्रां गुण-मध्यायै नमः स्वाहा।।१४४
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः। स्वायुधेभ्यः समुत्पाट्य, तेजो-युक्तानि सत्वरा।।
ॐ ऐं ह्रीं स्मूं गुण-त्रयायै नमः स्वाहा।।१४५
ततो देवा ददुस्तस्यै, स्वानि स्वान्यायुधानि च। ऊचुर्जय जय तूच्चैर्जयन्ती च जयैषिणः।।
ॐ ऐं ह्रीं ऊं वर्ण-रूपिण्यै नमः स्वाहा।।१४६
शूलं शूलाद् विनिष्कृष्य, ददौ तस्यै पिनाक-धृक्। चक्रं च दत्तवान् कृष्णः, समुत्पाद्य स्व-चक्रतः।।
ॐ ऐं ह्रीं गूं सदोजसे नमः स्वाहा।।१४७
शङ्खं च वरुणः शक्तिं, ददौ तस्यै हुताशनः। मारुतो दत्त-वांश्चापं, बाण-पूर्णे तथेषुधी।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रूं वह्नि-रूपायै नमः स्वाहा।।१४८

(वज्र-दन्ती से विशेष आहुति)

वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य, कुलिशादमराधिपः। ददौ तस्यै सहस्त्राक्षो, घण्टामैरावताद् गजात्।।
ॐ ऐं ह्रीं ह्रूं देवतायै नमः स्वाहा।।१४९

काल-दण्डाद् यमो दण्डं, पाशं चाम्बु-पतिर्ददौ। प्रजापतिश्चाक्ष-मालां, ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम्।।

ॐ ऐं ह्रीं भैं शाङ्कर्यै नमः स्वाहा।।१५०

समस्त-रोम-कूपेषु, निज-रश्मीन् दिवाकरः। कालश्च दत्त-वान् खड्गं, तस्याश्चर्म च निर्मलम्।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रां शाम्भव्यै नमः स्वाहा।।१५१

(कमल-पुष्प से विशेष आहुति)

क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाऽम्बरे। चूडा - मणिं तथा दिव्यं, कुण्डले कटकानि च।।

ॐ ऐं ह्रीं क्रूं शान्तायै नमः स्वाहा।।१५२

(दूध व पुष्प से विशेष आहुति)

अर्ध-चन्द्रं तथा शुभ्रं, केयूरान् सर्व-बाहुषु। नूपुरौ विमलौ तद्-वद्, ग्रैवेयकमनुत्तमम्।।

ॐ ऐं ह्रीं मूं चन्द्र-सूर्याग्नि-लोचनायै नमः स्वाहा।।१५३

अंगुलीयक-रत्नानि, समस्तास्वंगुलीषु च। विश्व-कर्मा ददौ तस्यै, परशुं चाति-निर्मलम्।।

ॐ ऐं ह्रीं ल्रीं सुजातायै नमः स्वाहा।।१५४

अस्त्राण्यनेक-रूपाणि, तथाऽभेद्यं च दंशनम्। अम्लान-पङ्कजां मालां, शिरस्युरसि चापराम्।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रां जय-भूमिष्ठायै नमः स्वाहा।।१५५

(कमल-पुष्प से विशेष आहुति)

अददज्जलधिस्तस्यै, पङ्कजं चाति-शोभनम्। हिम-वान् वाहनं सिंहं, रत्नानि विविधानि च।।

ॐ ऐं ह्रीं द्रूं जाह्नव्यै नमः स्वाहा।।१५६

(मधु से विशेष आहुति)

ददावशून्यं सुरया, पान-पात्रं धनाधिपः। शेषश्च सर्व-नागेशो, महा-मणि-विभूषितम्।।

ॐ ऐं ह्रीं द्व्रूं जन-पूजितायै नमः स्वाहा।।१५७

नाग-हारं ददौ तस्यै, धत्ते यः पृथिवीमिमाम्। अन्यैरपि सुरैर्देवी, भूषणैरायुधैस्तथा।।

ॐ ऐं ह्रीं हम्लौं शास्त्रायै नमः स्वाहा।।१५८

सम्मानिता ननादोच्चैः, साट्टहासं मुहुर्मुहुः। तस्या नादेन घोरेण, कृत्स्नमापूरितं नभः।।

ॐ ऐं ह्रीं क्रां शास्त्र-मयायै नमः स्वाहा।।१५९

अमायताति-महता, प्रति-शब्दो महानभूत्। चुक्षुभुः सकला लोकाः, समुद्राश्च चकम्पिरे।।

ॐ ऐं ह्रीं स्हौं नित्यायै नमः स्वाहा।।१६०

चचाल वसुधा चेलुः, सकलाश्च मही-धराः। जयेति देवाश्च मुदा, तामूचुः सिंह-वाहिनीम्।।

ॐ ऐं ह्रीं म्लूं शुभायै नमः स्वाहा।।१६१

सायुधां भूषणैर्युक्तां, दृष्ट्वा ते विस्मयं गताः। तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां, भक्ति-नम्रात्म-मूर्त्तयः।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चन्द्रार्ध-मस्ताकायै नमः स्वाहा।।१६२

।। देवा ऊचुः।।

नमः शिवायै कल्याण्यै, शान्त्यै पुष्ट्यै नमो नमः। भगवत्यै नमो देव्यै, रुद्राण्यै सततं नमः।।

ॐ ऐं ह्रीं गैं भारत्यै नमः स्वाहा।।१६३

काल-रात्र्यै तथाऽम्बायै, इन्द्राण्यै ते नमो नमः। सिद्ध्यै बुद्ध्यै तथा वृद्ध्यै, वैष्णव्यै ते नमो नमः।।

ॐ ऐं ह्रीं क्रूं भ्रामर्यै नमः स्वाहा।।१६४

पृथिव्यां या स्थिता पृथ्व्या, न ज्ञाता पृथिवीति च। अन्तः-स्थिता प्रेक्षति च, वन्दे तामीश्वरीं पराम्।।

ॐ ऐं ह्रीं त्रीं कल्याण्यै नमः स्वाहा।।१६५

कल्याणं कुरु मे मातः! त्राहि नः शत्रु-तापितान्। जहि पापं हयारिं त्वं, तेजसा स्वेन मोहितम्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्स्त्रीं कराल्यै नमः स्वाहा।।१६६

खलं मायाविनं घोरं, स्त्री-वश्यं वर-दर्पितम्। दुःखदं सर्व-देवानां, नाना-रूप-धरं शठम्।।

ॐ ऐं ह्रीं कं योग-निष्ठायै नमः स्वाहा।।१६७

त्वमेका सर्व-देवानां, शरणं भक्त-वत्सले! पीडितान् दानवेनाद्य, त्राहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

ॐ ऐं ह्रीं फ्रौं काल-संहार-कारिण्यै नमः स्वाहा।।१६८

।। मेधस ऋषिरुवाच।।
एवं स्तुता तदा देवी, सुरैः सर्व-सुख-प्रदा। तानुवाच महा-देवी, स्मित-पूर्वं शुभं वचः।।
ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं कलातीतायै नमः स्वाहा।।१६९
।। देव्युवाच ।।
भयं त्यजतु गीर्वाणा, महिषस्य मन्द-तेजसः। हनिष्यामि रणेऽद्यैव, वर-दृप्तं विमोहितम्।।
ॐ ऐं ह्रीं शां कात्यायन्यै नमः स्वाहा।।१७०
।। मेधस ऋषिरुवाच ।।
जय कृत्वा स्मितं देवी, साट्टहासं चकार ह। उच्चैः शब्दं महा-घोरं, दानवानां भय-प्रदम्।।
ॐ ऐं ह्रीं क्ष्म्रीं कमलालयायै नमः स्वाहा।।१७१
चकम्पे वसुधा तत्र, श्रुत्वा तच्छब्दमद्भुतम्। चेलुश्च पर्वताः सर्वे, चुक्षोभाब्दिश्च वीर्यवान्।।
ॐ ऐं ह्रीं रों कामिन्यै नमः स्वाहा।।१७२
मेरुश्चचाल शब्देन, दिशः सर्व-प्रपूरिताः। भयं जग्मुस्तदा श्रुत्वा, दानवास्तं स्वनं महत्।।
ॐ ऐं ह्रीं ङ्गं ब्रह्माण्ड-कोटि-संस्थानायै नमः स्वाहा।।१७३
जय पाहि तु देवास्तामूचुः परम-हर्षिताः। महिषोऽपि स्वनं श्रुत्वा, चुकोप मद-गर्वितः।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रौं जगत्-सृष्ट्यादि-कारिण्यै नमः स्वाहा।।१७४

किमेतदेव ? तान् दैत्यान्, पपृच्छ स्वन-शङ्कितः। गच्छन्तु त्वरिता दूता, ज्ञातुं शब्द-समुद्भवम्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महा-मायायै नमः स्वाहा।।१७५

।। दूता ऊचुः।।

देवी दैत्येश्वर-प्रौढा, दृश्यते काचिदङ्गना। सर्वाङ्ग-भूषणा नारी, सर्व-रत्नोप-शोभिता।।

ॐ ऐं ह्रीं सां इन्दिरायै नमः स्वाहा।।१७६

न मानुषी नासुरी सा, दिव्य-रूप-मनोहरा। सिंहारूढाऽऽयुध-धरा, चाष्टादश-करा वरा।।

ॐ ऐं ह्रीं त्रों ज्येष्ठायै नमः स्वाहा।।१७७

सा नादं कुरुते नारी, लक्ष्यते मद-गर्विता। सुरा-पान-रता कामं, जानीमो न स-भर्तृका।।

ॐ ऐं ह्रीं प्रूं चन्द्रामृत-परिस्नुतायै नमः स्वाहा।।१७८

अन्तरिक्ष-स्थिता देवा, तां स्तुवन्ति मदान्विताः। द्रष्टुं नैव समर्थाः स्मस्तत्-तेजः-परि-घर्षिताः।।

ॐ ऐं ह्रीं ग्लौं रौद्र्यै नमः स्वाहा।।१७९

।। महिष उवाच ।।

गच्छ वीर! मयाऽऽदिष्टो, मन्त्रि-श्रेष्ठ! बलान्वित!। सामादिभिरुपायैस्त्वं, समानय शुभाननाम्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्रौं नारायण्यै नमः स्वाहा।।१८०

।। मेधस ऋषिरुवाच।।

महिषस्य वचः श्रुत्वा, पेशलं मन्त्रि-सत्तमः। गत्वा दूर-तरं स्थित्वा, तामुवाच मनस्विनीम्।।

ॐ ऐं ह्रीं व्रीं ब्राह्मण्यै नमः स्वाहा।।१८१

।। महिष-मन्त्री उवाच।।

काऽसि त्वं मधुरालापे!, किमित्रागमनं कृतम्?। पृच्छति त्वां महा-भागे!, मन्मुखेन मम प्रभुः।।

ॐ ऐं ह्रीं स्लीं कृष्ण-पिङ्गलायै नमः स्वाहा।।१८२

स जेता सर्व-देवानामनश्यं तु नरैः किल। द्रष्टुमिच्छति राजा मे, महिषो नाम पार्थिवः।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं योगि-गम्यायै नमः स्वाहा।।१८३

वशगोऽसौ तवात्यर्थं, रूप-संश्रवणात् तव। करभोरु! वदाऽऽशु त्वं, संविधेयं मया यथा।।

ॐ ऐं ह्रीं हौं योगि-ध्येयायै नमः स्वाहा।।१८४

।। देव्युवाच।।

मन्त्रि-वर्य! सुराणां वै, जननीं विद्धि मां किल। श्रीमहा-लक्ष्मीं विख्यातां, सर्व-दैत्य-निषूदिनीम्।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रां तपस्विन्यै नमः स्वाहा।।१८५

प्रार्थिताऽहं सुरैः सर्वैः, महिषस्य क्षयाय च। तस्मादिहागताऽस्म्यद्य, तद्-नाशाय कृतोद्यमा।।

ॐ ऐं ह्रीं ग्रीं ज्ञानि-रूपायै नमः स्वाहा।।१८६

मघवा स्वर्गमाप्नोतु, देवाः सन्तु हविर्भुजः। यूयं प्रयात पातालं, यदि जीवितुमिच्छथ।।

ॐ ऐं ह्रीं क्रूं निराकारायै नमः स्वाहा।।१८७

।। महिष-मन्त्री उवाच।।

राजन्! देवी वरारोहा, सिंहस्योपरि-संस्थिता। अष्टादश-भुजा रम्या, वरायुत-धरा परा।।

ॐ ऐं ह्रीं क्रीं भक्ताभीष्ट-फल-प्रदायै नमः स्वाहा।।१८८

सा मयोक्ता महाराज!, महिषं भज भामिनि! महिषी भव राज्ञस्त्वं, त्रैलोक्याधिपतेः प्रिया।।

ॐ ऐं ह्रीं यां भूतात्मिकायै नमः स्वाहा।।१८९

एवं मद्-वचनं श्रुत्वा, सा स्मयावेश-मोहिता। मामुवाच विशालाक्षी, स्मित-पूर्वमिदं वचः।।

ॐ ऐं ह्रीं द्लूं भूत-मात्रे नमः स्वाहा।।१९०

करिष्येऽहं मृधे युद्धं, हनिष्ये त्वां सुराप्रियम्। गच्छ वा दुष्ट! पातालं, जीवितेच्छा यदस्ति ते।।

ॐ ऐं ह्रीं द्रूं भूतेशाय नमः स्वाहा।।१९१

।। महिष उवाच ।।

गच्छ ताम्र! महा-भाग!, युद्धाय कृत-निश्चयः। तामानय वरारोहां, जित्वाऽधर्मेण मानिनीम्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्षं भूत-धारिण्यै नमः स्वाहा।।१९२

।। मेधस ऋषिरुवाच ।।

एवं तद्-भाषितं श्रुत्वा, ताम्रः काल-वशं गतः। निर्गतः सैन्य-संयुक्तः, प्रणम्य महिषं नृपम्।।

ॐ ऐं ह्रीं ओं स्वधा नारी-मध्य-गतायै नमः स्वाहा।।१९३

स गत्वा तां समालोक्य, देवीं सिंहोपरि-स्थिताम्। स्तूयमानां सुरैः सर्वैः, सर्वायुध-विभूषिताम्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्रौं षडाधारादि-वर्तिन्यै नमः स्वाहा।।१९४

तामुवाच विनीतः सन्, वाक्यं मधुरया गिरा। देवि! दैत्येश्वरः शृङ्गी-स्वरूप-गुण-मोहितः।।

ॐ ऐं ह्रीं क्ष्म्क्ल्रीं मोहदायै नमः स्वाहा।।१९५

स्पृहां करोति महिषस्त्वत्-पाणि-ग्रहणाय वै। भुंक्ष्व राज्य-सुखं पूर्णं, वर्षाणामयुतायुतम् ।।

ॐ ऐं ह्रीं वां अंशु-भवायै नमः स्वाहा।।१९६

।। देव्युवाच ।।

गच्छ ताम्र! पतिं ब्रूहि, मुमुर्षुं मद-चेतसम्। महिषं चाति-कामार्तं, मूढं ज्ञान-विवर्जितम्।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रूं शुभ्रायै नमः स्वाहा।।१९७

नाऽहं पतिं-वरा नारी, वर्तते मे पतिः प्रभुः। सर्व-कर्त्ता सर्व-साक्षी, ह्यकर्त्ता निःस्पृहः स्थिरः।।

ॐ ऐं ह्रीं ग्लूं सूक्ष्मायै नमः स्वाहा।।१९८

तं त्यक्त्वा महिषं मत्तं, कथं सेवितुमुत्सहे ? जीवितेच्छाऽस्ति चेत् पाप!, गच्छ पातालमाशु वै।।

ॐ ऐं ह्रीं ल्रीं सर्व-गतायै नमः स्वाहा।।१९९

।। मेधस ऋषिरुवाच ।।

उक्त्वैवं सा तदा देवी, जगर्ज भृशमद्भुतम्। कल्पान्त-सदृशं नादं, चक्रे दैत्य-भयावहम्।।

ॐ ऐं ह्रीं प्रें सर्वदायै नमः स्वाहा।।२००

ताम्रः श्रुत्वा च तं शब्दं, भय-त्रस्त-मनास्तदा। पलायनं ततः कृत्वा, जगाम महिषान्तिकम्।।

ॐ ऐं ह्रीं हूं दुर्लभ-रूपिण्यै नमः स्वाहा।।२०१

ताम्रं समागतं दृष्ट्वा, हयारिरपि मोहितः। दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं, त्रैलोक्यममरारयः।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं सत्यायै नमः स्वाहा।।२०२

सन्नद्धाखिल - सैन्यास्ते, समुत्तस्थुरुदायुधाः। आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः।।

ॐ ऐं ह्रीं दें अनन्तायै नमः स्वाहा।।२०३

अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः। स ददर्श ततो देवीं, व्याप्त - लोक - त्रयां त्विषा।।

ॐ ऐं ह्रीं नूँ सर्व-ज्ञान-प्रदायै नमः स्वाहा।।२०४

पादाक्रान्त्या नत-भुवं, किरीटोल्लिखिताम्बराम्। क्षोभिताशेष-पातालां, धनुर्ज्या-निःस्वनेन ताम्।।

ॐ ऐं ह्रीं आं परायै नमः स्वाहा।।२०५

दिशो भुज-सहस्रेण, समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्। ततः प्रववृते युद्धं, तया देव्या सुर-द्विषाम्।।

ॐ ऐं ह्रीं फ्रां हरायै नमः स्वाहा।।२०६

शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपित - दिगन्तरम्। महिषासुर - सेनानीश्चिक्षुराख्यो महाऽसुरः।।
ॐ ऐं ह्रीं प्रीं नित्यानन्दायै नमः स्वाहा।।२०७
युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्ग - बलान्वितः। रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महाऽसुरः।।
ॐ ऐं ह्रीं दं नील-सङ्काशायै नमः स्वाहा।।२०८
अयुध्यतायुतानां च, सहस्रेण महा - हनुः। पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महाऽसुरः।।
ॐ ऐं ह्रीं फ्रीं निम्नगायै नमः स्वाहा।।२०९
अयुतानां शतैः षड्भिर्वाष्कलो युयुधे रणे। गज-वाजि-सहस्रौघैरनेकैः परिवारितः।।
ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं निरालसायै नमः स्वाहा।।२१०
वृतो रथानां कोट्या च, युद्धे तस्मिन्नयुध्यतः। विडालाख्योऽयुतानां च, पञ्चाशद्भि रथायुतैः।।
ॐ ऐं ह्रीं गूं मात्रायै नमः स्वाहा।।२११
युयुधे संयुगे तत्र, रथानां परिवारितः। अन्ये च तत्रायुतशो, रथ - नाग - हयैर्वृताः।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रौं लक्ष्म्यै नमः स्वाहा।।२१२
युयुधुः संयुगे देव्या, सह तत्र महाऽसुराः। कोटि - कोटि - सहस्रैस्तु, रथानां दन्तिनां तथा।।
ॐ ऐं ह्रीं सां पद्मायै नमः स्वाहा।।२१३

हयानां च वृतो युद्धे, तत्राभून्महिषासुरः। तोमरैर्भिन्दिपालैश्च, शक्तिभिर्मुसलैस्तथा।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मालयायै नमः स्वाहा।।२१४

युयुधुः संयुगे देव्याः, खड्गै परशु-पट्टिशैः। केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः, केचित् पाशांस्तथाऽपरे।।

ॐ ऐं ह्रीं जुं कमलालयायै नमः स्वाहा।।२१५

देवीं खड्ग-प्रहारैस्तु, ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः। साऽपि देवी ततस्तानि, शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका।।

ॐ ऐं ह्रीं हूं श्रियै नमः स्वाहा।।२१६

लीलयैव प्रचिच्छेद, निज-शस्त्रास्त्र-वर्षिणी। अनायस्तानना देवी, स्तूयमाना सुरर्षिभिः।।

ॐ ऐं ह्रीं सं हरि-प्रियायै नमः स्वाहा।।२१७

(पीली सरसों से विशेष आहुति)

मुमोचासुर-देहेषु, शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी। सोऽपि क्रुद्धो धुत-सटो, देव्या वाहन-केसरी।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राघव-प्रियायै नमः स्वाहा।।२१८

चचारासुर-सैन्येषु, वनेष्विव हुताशनः। निःश्वासान् मुमुचे यांश्च, युध्यमाना रणेऽम्बिका।।

ॐ ऐं ह्रीं सौं रमायै नमः स्वाहा।।२१९

त एव सद्यः सम्भूता, गणाः शत-सहस्रशः। युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासि-पट्टिशैः।।

ॐ ऐं ह्रीं दीं परमायै नमः स्वाहा।।२२०

नाशयन्तोऽसुर-गणान्, देवी-शक्त्युप-बृंहिताः। अवादयन्तः पटहान्, गणाः शङ्खांस्तथाऽपरे।।

ॐ ऐं ह्रीं प्रें शोभनायै नमः स्वाहा।।२२१

मृदङ्गांश्च तथैवान्ये, तस्मिन् युद्ध-महोत्सवे। ततो देवी त्रिशूलेन, गदया शक्ति-वृष्टिभिः।।

ॐ ऐं ह्रीं यां पद्म-वासायै नमः स्वाहा।।२२२

(२२२-२२३ लाख एवं लाल चन्दन से विशेष आहुति)

खड्गादिभिश्च शतशो, निजघान महाऽसुरान्। पातयामास चैवान्यान्, घण्टा-स्वन-विमोहितान्।।

ॐ ऐं ह्रीं रूं विष्णु-प्रियायै नमः स्वाहा।।२२३

असुरान् भुवि पाशेन, बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्। केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः, खड्ग-पातैस्तथाऽपरे।।

ॐ ऐं ह्रीं भं कृष्ण-प्रियायै नमः स्वाहा।।२२४

(२२४ से २२८ लाख से विशेष आहुति)

विपोथिता निपातेन, गदया भुवि शेरते। वेमुश्च केचिद् रुधिरं, मुसलेन भृशं हताः।।

ॐ ऐं ह्रीं सूं राम-प्रियायै नमः स्वाहा।।२२५

केचिन्निपतिता भूमौ, भिन्नाः शूलेन वक्षसि। निरन्तराः शरौघेण, कृताः केचिद् रणाजिरे।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रां शौरि-प्रियायै नमः स्वाहा।।२२६

श्येनानुकारिणः प्राणान्, मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः। केषाञ्चिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्न-ग्रीवास्तथाऽपरे।।

ॐ ऐं ह्रीं ओं जिष्णु-प्रियायै नमः स्वाहा।।२२७

शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः। विच्छिन्न-जङ्घास्त्वपरे, पेतुरुर्व्यां महाऽसुराः।।

ॐ ऐं ह्रीं लूं माधव-प्रियायै नमः स्वाहा।।२२८

एक-बाह्वक्षि-चरणाः, केचिद् देव्या द्विधा कृताः। छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि, पतिताः पुनरुत्थिताः।।

ॐ ऐं ह्रीं डूं क्षीरोद-तनयायै नमः स्वाहा।।२२९

(२२९ से २३१ लाल मिर्च से विशेष आहुति)

कबन्धाश्छिन्न-शिरसः, खड्ग-शक्त्यृष्टि-पाणयः। ननृतुश्चापरे तत्र, युद्धे तूर्य-लयाश्रिताः।।

ॐ ऐं ह्रीं जूं कमल-वासिन्यै नमः स्वाहा।।२३०

कबन्धा युयुधुर्देव्या, गृहीत-परमायुधाः। तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो, देवीमन्ये महाऽसुराः।।

ॐ ऐं ह्रीं धूं क्षीराब्धि-तनयायै नमः स्वाहा।।२३१

पातितै रथ-नागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा। अगम्या साऽभवत् तत्र, यत्राभूत् स महा-रणः।।

ॐ ऐं ह्रीं त्रें नारायण्यै नमः स्वाहा।।२३२

(लाल चन्दन से विशेष आहुति)

शोणितौघा महा-नद्यः, सद्यस्तत्र-प्रसुस्त्रुवुः। मध्ये चासुर-सैन्यस्य, वारणासुर-वाजिनाम्।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शुभायै नमः स्वाहा।।२३३

(लाल मिर्च, उड़द व गरी के टुकड़ों से विशेष आहुति)

क्षणेन तन्महा-सैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका। निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृण-दारु-महा-चयम्।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं शिवायै नमः स्वाहा।।२३४

(उड़द एवं नारियल के टुकड़ों से विशेष आहुति)

स च सिंहो महा-नादमुत्-सृजन् धुत-केशरः। शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति।।

ॐ ऐं ह्रीं ईं कल्याण्यै नमः स्वाहा।।२३५

(भोज-पत्र, उड़द, नारियल के टुकड़ों एवं पुष्प से विशेष आहुति)

देव्या गणैश्च तैस्तत्र, कृतं युद्धं महाऽसुरैः। यथैषां तुतुषुर्देवाः, पुष्प-वृष्टि-मुचो दिवि ह्रीं ॐ।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रां क्षेमायै नमः स्वाहा।।२३६

ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु। (यजमानस्य कामा) जगदम्बाऽर्पणमस्तु। ऐसा कहकर 'वेदी' के सम्मुख जल छोड़े।

फिर पाँच आहुतियाँ नीचे लिखे मन्त्रों से घी की दें–

१. ॐ प्राणाय स्वाहा। २. ॐ अपानाय स्वाहा। ३. ॐ समानाय स्वाहा। ४. ॐ उदानाय स्वाहा। ५. ॐ व्यानाय स्वाहा।

अन्त में, एक उल्टे साबुत पान पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमल गट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गुग्गल ये सब वस्तुएँ स्त्रुची में रखकर खड़े होकर आहुति दें। इस अध्याय में विशेष आहुति गुग्गल की होती है–

ॐ साङ्गायै सायुधायै स-शक्तिकायै स-परिवारायै स-वाहनायै ह्रीं-वीजाधिष्ठात्र्यै महा-लक्ष्म्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः।

'चिद्'-रूपिणि! महा-लक्ष्मि!
'ह्रीं'-वीजाधिष्ठात्र्यै
'ब्रह्म'-विद्यायै त्वां ध्याये!

।। मध्यम चरितम् – तृतीयोऽध्यायः।।

।। ध्यान ।

ॐ उद्यद् - भानु - सहस्र - कान्तिमरुण - क्षौमां शिरो - मालिकाम्।
रक्तालिप्त - पयोधरां जप - वटीं विद्यामभीतिं वरम्।।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र-विलसद्-वक्त्रारविन्द-श्रियम्।
देवीं बद्ध-हिमांशु-रत्न-मुकुटां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्।।

(रक्त पुष्प से विशेष आहुति देकर हाथ जोड़कर नमस्कार करे)

।। ॐ मेधस ऋषिरुवाच ।।

निहन्य-मानं तत्-सैन्यमवलोक्य महाऽसुरः। सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्, ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्।।

ॐ ऐं ह्रीं हूं भावुकायै नमः स्वाहा।।२३७

स देवीं शर - वर्षेण, ववर्ष समरेऽसुरः। यथा मेरु - गिरेः शृङ्गं, तोय - वर्षेण तोयदः।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लूं कुशलायै नमः स्वाहा।।२३८

तस्य च्छित्त्वा ततो देवी, लीलयैव शरोत्करान्। जघान तुरगान् वाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्रां भद्रायै नमः स्वाहा।।२३९

चिच्छेद च धनुः सद्यो, ध्वजं चाति-समुच्छ्रितम्। विव्याध चैव गात्रेषु, छिन्न-धन्वानमाशुगैः।।

ॐ ऐं ह्रीं ल्लूं शस्तायै नमः स्वाहा।।२४०

स च्छिन्न-धन्वा विरथो, हताश्वो हत-सारथिः। अभ्यधावत तां देवीं, खड्ग-चर्म-धरोऽसुरः।।

ॐ ऐं ह्रीं फ्रें भद्रायै नमः स्वाहा।।२४१

सिंहमाहत्य खड्गेन, तीक्ष्ण-धारेण मूर्धनि। आजघान भुजे सव्ये, देवीमप्यति-वेग-वान्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्रीं वीर-मर्दन्यै नमः स्वाहा।।२४२

तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य, पफाल नृप-नन्दन! ततो जग्राह शूलं स, कोपादरुण-लोचनः।।

ॐ ऐं ह्रीं म्लूं देव्यै नमः स्वाहा।।२४३

चिक्षेप च ततस्तत् तु, भद्र-काल्यां महाऽसुरः। जाज्वल्य-मानं तेजोभी, रवि-बिम्बमिवाम्बरात्।।

ॐ ऐं ह्रीं ध्रें वैकुण्ठ-वासिन्यै नमः स्वाहा।।२४४

दृष्ट्वा तदापतच्छूलं, देवी शूलममुञ्चत। तच्छूलं शतधा तेन, नीतं स च महाऽसुरः।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रौं धनदायै नमः स्वाहा।।२४५

(सुवर्ण आदि के त्रिशूलों से विशेष आहुति)

हते तस्मिन् महा-वीर्ये, महिषस्य चमू-पतौ। आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्लौं सुखदायै नमः स्वाहा।।२४६

(२४६-२४७ गुग्गल से विशेष आहुति)

सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ, देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्। हुङ्काराभि-हतां भूमौ, पातयामास निष्प्रभाम्।।

ॐ ऐं ह्रीं ब्रीं शुभदायै नमः स्वाहा।।२४७

भग्नां शक्तिं निपतितां, दृष्ट्वा क्रोध-समन्वितः। चिक्षेप चामरः शूलं, बाणैस्तदपि साऽच्छिनत्।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं शिवदायै नमः स्वाहा।।२४८

ततः सिंहः समुत्पत्य, गज-कुम्भान्तरे स्थितः। बाहु-युद्धेन युयुधे, तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा।।

ॐ ऐं ह्रीं त्रौं विष्णु-वल्लभायै नमः स्वाहा।।२४९

युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु, तस्मान्नागान् महीं गतौ। युयुधातेऽति - संरब्धौ, प्रहारैरति-दारुणैः।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्लौं देव-देव्यै नमः स्वाहा।।२५०

ततो वेगात् खमुत्पत्य, निपत्य च मृगारिणा। कर - प्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक् कृतम्।।

ॐ ऐं ह्रीं गीं कामदायै नमः स्वाहा।।२५१

उदग्रश्च रणे देव्या, शिला-वृक्षादिभिर्हतः। दन्त-मुष्टि-तलैश्चैव, करालश्च निपातितः।।

ॐ ऐं ह्रीं यूं अर्थदायै नमः स्वाहा।।२५२

(सोआ, पालक से विशेष आहुति)

देवी क्रुद्धा गदा-पातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्। वाष्कलं भिन्दिपालेन, बाणैस्ताम्रं तथाऽन्धकम्।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं भक्त-प्रियायै नमः स्वाहा।।२५३

(अपामार्ग से विशेष आहुति)

उग्रास्यमुग्र - वीर्यं च, तथैव च महा - हनुम्। त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन, जघान परमेश्वरी।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रूं भक्त्यै नमः स्वाहा।।२५४

(धतूरे के पत्ते या फूल से विशेष आहुति)

विडालस्यासिना कायात्, पातयामास वै शिरः। दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ, शरैर्निन्ये यम-क्षयम्।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रौं बुद्धिदायै नमः स्वाहा।।२५५

हाहा-कारो महानासीत्, सैन्ये तस्य दुरात्मनः। चुक्रुशू रुरुदुश्चैव, त्राहि त्राहि तु भाषणैः।।

ॐ ऐं ह्रीं ओं धन-प्रदायै नमः स्वाहा।।२५६

अन्ये ये सैनिका राजन्!, सिंहेन भक्षिताश्च ते। तच्छ्रुत्वा वचनं तेषां, महिषो दुर्मनास्तदा।।

ॐ ऐं ह्रीं अं अर्थ-प्रदायै नमः स्वाहा।।२५७

तेषां तद्-वचनं श्रुत्वा, क्रोध-युक्तो नराधिपः। दारुकं प्राह तरसा, रथमानय मेऽद्भुतम्।।

ॐ ऐं ह्रीं म्लौं महा-देव्यै नमः स्वाहा।।२५८

सहस्र-खर-संयुक्तं, पताका-ध्वज-भूषितम्। आयुधैः संयुतं शुभ्रं, सु-चक्रं चारु-कूबरम्।।

ॐ ऐं ह्रीं प्रीं दण्ड-पाणि-प्रियायै नमः स्वाहा।।२५९

आनीतं तं रथं ज्ञात्वा, दानवेन्द्रो महा-बलः। सर्वायुध-समायुक्तो, वरास्तरण-संयुतः।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दण्ड-पाणि-मात्रे नमः स्वाहा।।२६०

मानुषं देहमास्थाय, संग्रामे गन्तुमुद्यतः। त्यक्त्वा तन्माहिषं रूपं, बभूव पुरुषः शुभः।।

ॐ ऐं ह्रीं त्रों दण्ड-निधये नमः स्वाहा।।२६१

दिव्याम्बर-धरः कान्तः, पुष्प-वाण इवापरः। तमायान्तं समालोक्य, दैत्यानामधिपं तदा।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्सौं दण्ड-पाणि-समाराध्यै नमः स्वाहा।।२६२

बहुभिः संवृतं वीरैर्देवी शङ्खमवादयत्। समीपमेत्य देव्यास्तु, तामुवाच हसन्निव।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दण्ड-पाणि-प्रपूजितायै नमः स्वाहा।।२६३

॥ महिष उवाच॥

देवि! संसार-चक्रेऽस्मिन्, वर्तमाने जनः किल। नरो वाऽथ तथा नारी, सुखं वाञ्छति सर्वथा॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दण्ड-पाणि-गृहासक्तायै नमः स्वाहा॥२६४

नारी-पुरुषयोः कान्ते!, समान-वयसोः सदा। संयोगो यः समाख्यातः, स एवात्युत्तमः स्मृतः॥

ॐ ऐं ह्रीं स्त्रीं दण्ड-पाणि-प्रियंवदायै नमः स्वाहा॥२६५

तं चेत् करोसि संयोगं, वीरेण च मया सह। अत्युत्तम-सुखस्यैव, प्राप्तिः स्यात् ते न संशयः॥

ॐ ऐं ह्रीं प्लूं दण्ड-पाणि-प्रियतमायै नमः स्वाहा॥२६६

इन्द्रादयः सुरा सर्वे, संग्रामे विजिता मया। रत्नानि यानि दिव्यानि, भवनेऽस्मिन् ममाधुना॥

ॐ ऐं ह्रीं स्त्रीं दण्ड-पाणि-मनोहरायै नमः स्वाहा॥२६७

भुङ्क्ष्व त्वं तानि सर्वाणि, यथेष्टं देहि वा यथा। पट्ट-राज्ञी भवाद्य त्वं, दासोऽस्मि तव सुन्दरि!॥

ॐ ऐं ह्रीं व्रीं दण्ड-पाणि-हृत-प्राणायै नमः स्वाहा॥२६८

॥ मेधस ऋषिरुवाच॥

एवं ब्रुवाणं तं दैत्यं, देवी भगवती हि सा। प्रहस्य स-स्मितं वाक्यमुवाच वर-वर्णिनी॥

ॐ ऐं ह्रीं लूं दण्ड-पाणि-सु-सिद्धिदायै नमः स्वाहा॥२६९

।। देव्युवाच।।

नाहं पुरुषमिच्छामि, परमं पुरुषं विना। तस्य चेच्छाम्यहं दैत्य!, सृजामि सकलं जगत्।।

ॐ ऐं ह्रीं द्रां दण्ड-पाणि-पराऽमृतायै नमः स्वाहा।।२७०

स मां पश्यति विश्वात्मा, तस्याऽहं प्रकृतिः शिवा। मूर्खस्त्वमसि मन्दात्मन्!, यत्-स्त्री-सङ्गं चिकीर्षसि।।

ॐ ऐं ह्रीं क्ष्मीं दण्ड-पाणि-प्रहर्षितायै नमः स्वाहा।।२७१

नरस्य बन्धनार्थाय, शृङ्खला स्त्री प्रकीर्तिता। नारी-सङ्गे महद्-दुःखं, जानन् किं त्वं विमुह्यसि ?।।

ॐ ऐं ह्रीं स्कं दण्ड-पाणि-विघ्न-हरायै नमः स्वाहा।।२७२

त्यज वैरं सुरैः सार्धं, यथेष्टं विचरावनौ। पातालं गच्छ वा कामं, जीवितेच्छा यदास्ति ते।।

ॐ ऐं ह्रीं त्रूं नारायण्यै नमः स्वाहा।।२७३

अथवा कुरु संग्रामं, बलवत्यस्मि साम्प्रतम्। प्रेषिताऽहं सुरैः सर्वैस्तव नाशाय दानव!।।

हनिष्यामि महा-बाहो!, त्वामहं नात्र संशयः।

ॐ ऐं ह्रीं द्रीं दण्ड-पाणि-शिरोधृतायै नमः स्वाहा।।२७४

।। ऋषिरुवाच।।

उक्तस्तु स तया देव्या, धनुरादाय दानवः। देवी चिच्छेद तान् वाणैः, क्रोधान्मुक्तैरयो-मुखैः।।

ॐ ऐं ह्रीं म्लूं वाराह्यै नमः स्वाहा।।२७५

तयोः परस्परं युद्धं, सम्बभूव भय-प्रदम्। स पदाति-रथं सैन्यं, देव्या सिंहेन नाशितम्।।

ॐ ऐं ह्रीं शां दण्ड-पाणि-प्राप्त-चर्चायै नमः स्वाहा।।२७६

एवं संक्षीयमाणे तु, स्व-सैन्ये महिषासुरः। माहिषेण स्वरूपेण, त्रासयामास तान् गणान्।।

ॐ ऐं ह्रीं ल्लीं दण्ड-पाणि-प्राप्त-पदायै नमः स्वाहा।।२७७

कांश्चित् तुण्ड-प्रहारेण, खुर-क्षेपैस्तथाऽपरान्। लांगूल-ताडितांश्चान्यान्, शृङ्गाभ्यां च विदारितान्।।

ॐ ऐं ह्रीं लूं दण्ड-पाण्युन्मुख्यै नमः स्वाहा।।२७८

वेगेन कांश्चिदपरान्, नादेन भ्रमणेन च। निःश्वास-पवनेनान्यान्, पातयामास भू-तले।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रूं दण्ड-पाणि-वरोन्मुखायै नमः स्वाहा।।२७९

निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः। सिंहं हन्तुं महा-देव्याः, कोपं चक्रे ततोऽम्बिका।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लां दण्ड-हस्तायै नमः स्वाहा।।२८०

सोऽपि कोपान्महा-वीर्यः, खुर-क्षुण्ण-मही-तलः। शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्लीं दण्ड-प्राप्त-पदायै नमः स्वाहा।।२८१

(बिना नमक के उड़द के बड़े से विशेष आहुति)

वेग-भ्रमण-विक्षुण्णा, मही तस्य व्यशीर्यत। लाङ्गूलेनाहतः साब्धिः, प्लावयामास सर्वतः।।

ॐ ऐं ह्रीं गां दण्ड-बाह्वे नमः स्वाहा।।२८२

धुत-शृङ्ग-विभिन्नाश्च, खण्डं खण्डं ययुर्घनाः। श्वासानिलास्ताः शतशो, निपेतुर्नभसोऽचलाः।।

ॐ ऐं ह्रीं ल्लूं विश्व-रूपायै नमः स्वाहा।।२८३

इति क्रोध-समाध्मातमापतन्तं महाऽसुरम्। दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं, तद्-वधाय तदाऽकरोत्।।

ॐ ऐं ह्रीं स्मलीं दण्ड-मात्रे नमः स्वाहा।।२८४

सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं, तं बबन्ध महाऽसुरम्। तत्याज माहिषं रूपं, सोऽपि बद्धो महा-मृधे।।

ॐ ऐं ह्रीं उं दण्ड-करायै नमः स्वाहा।।२८५

ततः सिंहोऽभवत् सद्यो, यावत् तस्याम्बिका शिरः। छिनत्ति तावत् पुरुषः, खड्ग-पाणिरदृश्यत।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्लूं मोहिन्यै नमः स्वाहा।।२८६

तत एवाशु पुरुषं, देवी चिच्छेद सायकैः। तं खड्ग-चर्मणा सार्धं, ततः सोऽभून् महा-गजः।।

ॐ ऐं ह्रीं हूं दण्ड-चित्त-कृतास्पदायै नमः स्वाहा।।२८७

करेण च महा - सिंहं, तं चकर्ष जगर्ज च। कर्षतस्तु करं देवी, खड्गेन निरकृन्तत।।

ॐ ऐं ह्रीं स्त्रां दण्ड-विद्यायै नमः स्वाहा।।२८८

ततो महाऽसुरो भूयो, माहिषं वपुरास्थितः। तथैव क्षोभयामास, त्रैलोक्यं स-चराचरम्।।

ॐ ऐं ह्रीं म्क्लीं रुक्मिण्यै नमः स्वाहा।।२८९

ततः क्रुद्धा जगन्माता, चण्डिका पानमुत्तमम्। पपौ पुनः पुनश्चैव, जहासारुण-लोचना।।

ॐ ऐं ह्रीं भैं दण्डि-प्रियायै नमः स्वाहा।।२९०

(घृत, शहद, शक्कर तथा कारण से विशेष आहुति)

ननर्द चासुरः सोऽपि, बल-वीर्य-मदोद्धतः। विषाणाभ्यां च चिक्षेप, चण्डिकां प्रति भूधरान्।।

ॐ ऐं ह्रीं हौं दण्डि-पूज्यायै नमः स्वाहा।।२९१

(२९१-२९२ मधु से विशेष आहुति)

सा च तान् प्रहितांस्तेन, चूर्णयन्ती शरोत्करैः। उवाच तं मदोद्धूत-मुख-रागाकुलाक्षरम्।।

ॐ ऐं ह्रीं चें दण्डि-सन्तोष-दायिन्यै नमः स्वाहा।।२९२

।। देव्युवाच।।

मा गर्वं कुरु मन्दात्मंस्तिष्ठ तिष्ठ रणाङ्गणे। करिष्यामि निरातङ्कान्, हत्वा त्वां सुर-सत्तमान्।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रौं सर्व-मोहिन्यै नमः स्वाहा।।२९३

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ!, मधु यावत् पिबाम्यहम्। मया त्वयि हतेऽत्रैव, गर्जिष्यन्त्याशु देवताः।।

ॐ ऐं ह्रीं स्क्रीं पद्मायै नमः स्वाहा।।२९४

(शहद या कारण से विशेष आहुति)

।। मेधस ऋषिरुवाच।।

उक्त्वैवं चषकं हैमं, गृहीत्वा सुरया युतम्। पपौ पुनः पुनः क्रोधाद्धन्तु-कामा महाऽसुरम्।।

ॐ ऐं ह्रीं कं विजयायै नमः स्वाहा।।२९५

एवमुक्त्वा समुत्पत्य, साऽऽरूढा तं महाऽसुरम्। पादेनाक्रम्य कण्ठे च, शूलेनैनमताडयत्।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लक्ष्म्यै नमः स्वाहा।।२९६

(रक्त चन्दन एवं उड़द से विशेष आहुति)

ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निज-मुखात् ततः। अर्ध-निष्क्रान्त एवासीद्, देव्या वीर्येण संवृतः।।

ॐ ऐं ह्रीं स्कलीं अपराजितायै नमः स्वाहा।।२९७

अर्ध-निष्क्रान्त एवासौ, युद्ध्यमानो महाऽसुरः। तया महाऽसिना देव्या, शिरश्छित्वा निपातितः।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं महा-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा।।२९८

ततो हाहा-कृतं सर्वं, दैत्य-सैन्यं ननाश तत्। प्रहर्षं च परं जग्मुः, सकला देवता-गणाः।।

ॐ ऐं ह्रीं ऐं महा-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा।।२९९

एवं स महिषो नाम, स-सैन्यः स-सुहृद्-गणः। त्रैलोक्यं मोहयित्वा तु, तया देव्या निपातितः।।

ॐ ऐं ह्रीं क्षम्ब्लीं लक्ष्म्यै नमः स्वाहा।।३००

त्रैलोक्यस्थैस्तदा भूतैर्महिषे विनिपातिते। जयतूक्तं वचं सर्वे, स - देवा सुर - मानुषैः।।

ॐ ऐं ह्रीं त्रौं दधीचि-पूज्यायै नमः स्वाहा।।३०१

तुष्टुवुस्तां सुरा-देवीं, सह दिव्यैर्महर्षिभिः। जगुर्गन्धर्व-पतयो, ननृतुश्चाप्सरो - गणाःॐ।।

ॐ ऐं ह्रीं प्रीं भक्ति-प्रियायै नमः स्वाहा।।३०२

(शहद से विशेष आहुति)

ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु। (यजमानस्य कामा) जगदम्बाऽर्पणमस्तु। ऐसा कहकर '**वेदी**' के सम्मुख जल छोड़े।

फिर **पाँच आहुतियाँ** नीचे लिखे मन्त्रों से घी की दें–**१. ॐ प्राणाय स्वाहा। २. ॐ अपानाय स्वाहा। ३. ॐ समानाय स्वाहा। ४. ॐ उदानाय स्वाहा। ५. ॐ व्यानाय स्वाहा।**

अन्त में, एक उल्टे साबुत पान पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमल गट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गुग्गल ये सब वस्तुएँ **स्त्रुची** में रखकर खड़े होकर आहुति दें। इस अध्याय में विशेष आहुति **भैंस के घी** की होती है–

ॐ साङ्गायै सायुधायै स-शक्तिकायै स-परिवारायै स-वाहनायै ह्रीं-वीजाधिष्ठात्र्यै महा-लक्ष्म्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः।

।। मध्यम चरितम् –चतुर्थोऽध्यायः।।

।। ध्यान।।

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररि - कुल - भयदां मौलि - बद्धेन्दु - रेखां,
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंह - स्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदश - परिवृतां सेवितां सिद्धि - कामैः।।

(रक्त पुष्प से विशेष आहुति देकर हाथ जोड़कर भगवती जय दुर्गा को नमस्कार करे)

।। ॐ मेधस ऋषिरुवाच।।

अथ प्रमुदिताः सर्वे, देर्वो इन्द्र - पुरोगमाः। स्तुतिमारभिरे कर्तुं, निहते महिषासुरे।।

ॐ ऐं ह्रीं ओं दधीचि-प्रीतायै नमः स्वाहा।।३०३

शक्रादयः सुर - गणा निहतेऽति-वीर्ये। तस्मिन् दुरात्मनि सुरारि - बले च देव्या।।
तां तुष्टवुः प्रणति - नम्र - शिरोधरांसा। वाग्भिः प्रहर्ष - पुलकोद्गम - चारु - देहाः।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लूं दधीचि-वर-दायिन्यै नमः स्वाहा।।३०४

(गन्ध-अक्षत, खीर, दूध एवं श्वेत पुष्पों से विशेष आहुति)

।। देवा ऊचुः।।

देव्या यया ततमिदं जगदात्म - शक्त्या। निश्शेष - देव - गण - शक्ति - समूह - मूर्त्या।।
तामम्बिकामखिल-देव-महर्षि-पूज्याम्। भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।
ॐ ऐं ह्रीं नें दधीचीष्ट-देवतायै नमः स्वाहा।।३०५

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो। ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।।
सा चण्डिकाऽखिल - जगत् - परिपालनाय। नाशाय चाशुभ - भयस्य मतिं करोतु।।
ॐ ऐं ह्रीं हस्लीं दधीचि-मोक्ष-दायिन्यै नमः स्वाहा।।३०६

या श्रीः स्वयं सु - कृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः। पापात्मनां कृत - धियां हृदयेषु बुद्धिः।।
श्रद्धा सतां कुल-जन-प्रभवस्य लज्जा। तां त्वां नताः स्म परि-पालय देवि! विश्वम्।।
ॐ ऐं ह्रीं प्रें पद्मावत्यै नमः स्वाहा।।३०७

(सम्पूर्ण बेल को घी में डुबोकर विशेष आहुति दें)

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्। किं चाति - वीर्यमसुर - क्षय - कारि भूरि।।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि, सर्वेषु देव्यसुर-देव-गणादिकेषु।।
ॐ ऐं ह्रीं औं विशालाक्ष्यै नमः स्वाहा।।३०८

हेतुः समस्त-जगतां त्रिगुणाऽपि दोषैर्न ज्ञायसे हरि-हरादिभिरप्यपारा।।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंश-भूत-मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या।।

ॐ ऐं ह्रीं म्लूं नागाक्ष्यै नमः स्वाहा।।३०९

यस्याः समस्त-सुरता समुदीरणेन, तृप्तिं प्रयान्ति सकलेषु मखेषु देवि!।।
स्वाहाऽसि वै पितृ - गणस्य च तृप्ति - हेतु - रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च।।

ॐ ऐं ह्रीं नों दत्त - धनायै नमः स्वाहा।।३१०

या मुक्ति-हेतुरविचिन्त्य-महा-व्रता त्वमभ्यस्यसे सु-नियतेन्द्रिय-तत्त्व-सारैः।।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्त-समस्त-दोषैर्विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि!।।

ॐ ऐं ह्रीं सौं पीत-वासायै नमः स्वाहा।।३११

शब्दात्मिका सु-विमलर्ग्यजुषां निधानमुद्गीथ - रम्य - पद - पाठ-वतां च साम्नाम्।।
देवी त्रयी भगवती भव - भावनाय। वार्त्ता च सर्व-जगतां परमार्ति-हन्त्री।।

ॐ ऐं ह्रीं स्लीं जय-मालायै नमः स्वाहा।।३१२

मेधाऽसि देवि! विदिताऽखिल - शास्त्र-सारा। दुर्गाऽसि दुर्ग-भव - सागर - नौर-सङ्गा।।
श्रीः कैटभारि-हृदयैक - कृताधिवासा। गौरी त्वमेव शशि - मौलि - कृत - प्रतिष्ठा।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं मङ्गलाक्ष्यै नमः स्वाहा।।३१३

(बेल के टुकड़ों से विशेष आहुति)

पृ० ७६

ईषत्- स - हासममलं परि - पूर्ण - चन्द्र - बिम्बानु-कारि कनकोत्तम-कान्ति-कान्तम्।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्त-रुषा तथापि, वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण।।

ॐ ऐं ह्रीं फ्रूं सर्व-मङ्गलायै नमः स्वाहा।।३१४

दृष्ट्वा तु देवि! कुपितं भ्रुकुटी - करालमुद्यच्छशाङ्क - सदृशच्छवि यन्न सद्यः।।
प्राणान् मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं, कैर्जीव्यते हि कुपितान्तक - दर्शनेन।।

ॐ ऐं ह्रीं श्लीं दत्त-दारिद्र्य-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।३१५

देवि! प्रसीद परमा भवती भवाय, सद्यो विनाशयसि कोप - वती कुलानि।
विज्ञातमेतद्धुनैव यतस्तमेतन्नीतं बलं सु-विपुलं महिषासुरस्य।।

ॐ ऐं ह्रीं क्रीं सिद्ध्यै नमः स्वाहा।।३१६

(वच से विशेष आहुति)

ते सम्मता जन - पदेषु धनानि तेषां। तेषां यशांसि न च सीदति धर्म - वर्गः।।
धन्यास्त एव निभृतात्मज - भृत्य - दारा। येषां सदाऽभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्लौं त्रैलोक्य-मोहिन्यै नमः स्वाहा।।३१७

धर्म्याणि देवि! सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रति - दिनं सु - कृती करोति।।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती-प्रसादाल्लोक-त्रयेऽपि फलदा ननु देवि! तेन।।

ॐ ऐं ह्रीं स्ल्लीं देवानां हित-कारिण्यै नमः स्वाहा।।३१८

दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष - जन्तोः। स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव - शुभां ददासि।।
दारिद्र्य - दुःख - भय - हारिणि! का त्वदन्या। सर्वोपकार - करणाय सदाऽऽर्द्र - चित्ता।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कमलायै नमः स्वाहा।।३१९

(मक्खन व पीली सरसों से विशेष आहुति)

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते। कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।।
संग्राम - मृत्युमधि - गम्य दिवं प्रयान्तु। मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि!।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं सूक्ष्मायै नमः स्वाहा।।३२०

(केवल पीली सरसों से विशेष आहुति)

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म। सर्वासुरानरिषु यत् प्रहिणोषि शस्त्रम्।।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्र - पूता, इत्थं! मतिर्भवति तेष्वपि तेऽति-साध्वी।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रां महा-बलायै नमः स्वाहा।।३२१

खड्ग-प्रभा-निकर-विस्फुरणैस्तथोग्रैः। शूलाग्र - कान्ति - निवहेन दृशोऽसुराणाम्।।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दु-खण्ड-योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्सूं मोहिन्यै नमः स्वाहा।।३२२

दुर्वृत्त-वृत्त-शमनं तव देवि! शीलं। रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।।
वीर्यं च हन्तृ हृत-देव-पराक्रमाणाम्। वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्स्लीं सर्व-मङ्गलायै नमः स्वाहा।।३२३

(चम्पा या गुड़हल के पुष्पों से विशेष आहुति)

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य, रूपं च शत्रु - भय - कार्यति - हारि कुत्र।
चित्ते कृपा समर - निष्ठुरता च दृष्टा, त्वय्येव देवि! वरदे! भुवन - त्रयेऽपि।।

ॐ ऐं ह्रीं स्तूं प्रियायै नमः स्वाहा।।३२४

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपु - नाशनेन। त्रातं त्वया समर - मूर्धनि तेऽपि हत्वा।।
नीता दिवं रिपु - गणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मद - सुरारि - भवं नमस्ते।।

ॐ ऐं ह्रीं स्हौं भुक्ति-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा।।३२५

(पेठा व पुष्प से विशेष आहुति)

ब्रह्मा सृजत्यवति विष्णुरिदं महेशः। शक्त्या तवैव हरते ननु चान्त - काले।
ईशा न तेऽपि च भवन्ति त्वया विहीनास्तस्मात् त्वमेव जगतः स्थिति-नाश-कर्त्री।।

ॐ ऐं ह्रीं ग्लौं आर्त-परित्राणायै नमः स्वाहा।।३२६

कीर्तिर्मतिः स्मृति-गती करुणा दया त्वं। श्रद्धा धृतिश्च वसुधा कमलालया च।।
पुष्टिः कलाऽथ विजया गिरिजा जया त्वं। तुष्टिः प्रभा त्वमसि बुद्धिरुमा रमा च।।
ॐ ऐं ह्रीं म्लीं वैष्णव्यै नमः स्वाहा।।३२७

विद्या क्षमा जगति कान्तिरपीह मेधा। सर्वं त्वमेव विदिता भुवन-त्रयेऽस्मिन्।।
आभिर्विना तव तु शक्तिभिराशु कर्तुं। को वा क्षमः सकल - लोक - निवास - भूमौ।।
ॐ ऐं ह्रीं ज्स्ह्रीं वाराह्यै नमः स्वाहा।।३२८

त्वं धारणा ननु न चेदसि कूर्म - नागौ। धर्तुं क्षमौ कथमिलामपि तौ भवेताम्।।
पृथ्वी न चेत् त्वमसि वा गगने कथं। स्थास्यत्येतदम्ब! निखिलं बहु-भार-युक्तम्।।
ॐ ऐं ह्रीं स्तुं नारसिंह्यै नमः स्वाहा।।३२९

ये वा स्तुवन्ति मनुजा अमरान् विमूढा। माया - गुणैस्तव चतुर्मुख - विष्णु - रुद्रान्।।
शुभ्रांशु - वह्नि - यम - वायु - गणेश-मुख्यान्। किं त्वामृते जननि! ते प्रभवन्ति कार्ये।।
ॐ ऐं ह्रीं ल्लूं लक्ष्म्यै नमः स्वाहा।।३३०

ये जुह्वन्ति प्रवितवैऽल्प-धियोऽम्ब! यज्ञे। वह्नौ सुरान् समधि - कृत्य हविः समिद्धम्।।
स्वाहा न चेत् त्वमसि ते कथमापुरद्धा। त्वामेव किं नहि यजन्ति सतो हि मूढाः।।
ॐ ऐं ह्रीं क्ष्म्रीं नारायण्यै नमः स्वाहा।।३३१

भोग - प्रदाऽसि भवतीह चराचराणाम्। स्वांशैर्ददासि खलु जीवनमेव नित्यम्।।
स्वीयान् सुरान् जननि! पोषयसीह यद् - वत्। तद्-वदपरानपि च पालयसि सु - हेतोः।।

ॐ ऐं ह्रीं हौं विश्व-मायायै नमः स्वाहा।।३३२

चित्रं त्वमीयदसुभी रहिता न सन्ति। त्वच्चित्तितेन दनुजाः प्रथित-प्रभावाः।।
येषां कृते जननि! देह-निबन्धनं ते। क्रीडा-रसस्तव न चान्य-तरोऽत्र हेतुः।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं महा-मायायै नमः स्वाहा।।३३३

विद्या त्वमेव सुखदाऽसुरदाऽप्यविद्या। मातस्त्वमेव जननार्त्ति-हरा नराणाम्।।
मोक्षार्थिभिस्तु कलिता किल मन्द-धीभिर्नाराधिता जननि! भोग-परैस्तथाऽज्ञैः।।

ॐ ऐं ह्रीं ईं महिषासुर-मर्दिन्यै नमः स्वाहा।।३३४

।। मेधस ऋषिरुवाच।।

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः, कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः। अर्चिता जगतां धात्री, तथा गन्धानुलेपनैः।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुख-कर्यै नमः स्वाहा।।३३५

(रक्त चन्दन, गन्ध एवं पुष्प से विशेष आहुति)

भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता। प्राह प्रसाद-सुमुखी, समस्तान् प्रणतान् सुरान्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्रूं भक्त-प्रियायै नमः स्वाहा।।३३६

(कर्पूर, धूप, कमल-पुष्प या कमल के गट्टे से विशेष आहुति)

|| देव्युवाच ||

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे, यदस्मत्तोऽभि-वाञ्छितम्। तत् तु ददाम्यहं प्रीत्या, स्तवैरेभिः सु-पूजिता।।

ॐ ऐं ह्रीं सः धन-धान्य-प्रदायै नमः स्वाहा।।३३७

|| देवा ऊचुः||

भगवत्या कृतं सर्वं, न किञ्चिदवशिष्यते। यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।।

ॐ ऐं ह्रीं स्लूं भक्त-रक्षिकायै नमः स्वाहा।।३३८

(३३८, ३३९ कनेर के पुष्पों से विशेष आहुति)

यदि चापि वरो देयस्त्वयाऽस्माकं महेश्वरि!। संस्मृता संस्मृता त्वं नो, हिंसेथा परमापदः।।

ॐ ऐं ह्रीं प्रें भोगदायै नमः स्वाहा।।३३९

तस्य वित्तर्द्धि-विभवैर्धन-दारादि-सम्पदाम्। वृद्धयेऽस्मत्-प्रसन्ना त्वं, भवेथाः सर्वदाऽम्बिके!।।

ॐ ऐं ह्रीं सूं ऋद्धि-प्रदायै नमः स्वाहा।।३४०

(किसी पुष्प से विशेष आहुति)

|| मेधस ऋषिरुवाच||

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः। तथेत्युक्त्वा भद्र - काली, बभूवाऽन्तर्हिता नृप!।।

ॐ ऐं ह्रीं प्लीं वृद्धि-प्रदायै नमः स्वाहा।।३४१

इत्येतत् कथितं भूप!, सम्भूता सा यथा पुरा। देवी देव-शरीरेभ्यो, जगत्-त्रय-हितैषिणी।।
ॐ ऐं ह्रीं ओं विष्णु-मायायै नमः स्वाहा।।३४२
पुनश्च गौरी-देहात् सा, समुद्भूता यथाऽभवत्। वधाय दुष्ट-दैत्यानां, तथा शुम्भ-निशुम्भयोः।।
ॐ ऐं ह्रीं औं सर्व-मोहिन्यै नमः स्वाहा।।३४३

(बेल-पत्र, गुग्गल व फल से विशेष आहुति)

रक्षणाय च लोकानां, देवानामुप-कारिणी। तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं, यथावत् कथयामि ते ॐ।।
ॐ ऐं ह्रीं ह्लौं वरदायै नमः स्वाहा।।३४४

(पेड़ा, मिष्ठान से विशेष आहुति)

ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु। (यजमानस्य कामा) जगदम्बाऽर्पणमस्तु। ऐसा कहकर '**वेदी**' के सम्मुख जल छोड़े।

फिर **पाँच आहुतियाँ** नीचे लिखे मन्त्रों से घी की दें—**१. ॐ प्राणाय स्वाहा। २. ॐ अपानाय स्वाहा। ३. ॐ समानाय स्वाहा। ४. ॐ उदानाय स्वाहा। ५. ॐ व्यानाय स्वाहा।**

अन्त में, एक उल्टे **साबुत पान** पर शाकल्य, घी में भिगोकर **१ कमल गट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गुग्गल** ये सब वस्तुएँ **स्त्रुची** में रखकर खड़े होकर आहुति दें। इस अध्याय में विशेष आहुति **गन्ध-अक्षत** की होती है—

ॐ साङ्गायै सायुधायै स-शक्तिकायै स-परिवारायै स-वाहनायै ह्रीं-वीजाधिष्ठात्र्यै महा-लक्ष्म्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः।

।। उत्तम चरितम् – पञ्चमोऽध्यायः।।

विनियोग– ॐ उत्तम–चरितस्य श्रीरुद्र ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीमहा–सरस्वती देवता। भीमा शक्तिः। भ्रामरी बीजं। सूर्यः तत्त्वं। साम–वेदः स्वरूपं। श्रीमहा–सरस्वती–प्रीत्यर्थं उत्तम–चरित–होमे विनियोगः।

ऋष्यादि–न्यास– श्रीरुद्र–ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्–छन्दसे नमः मुखे। श्रीमहा–सरस्वती–देवतायै नमः हृदि। भीमा–शक्तये नमः नाभौ। भ्रामरी–बीजाय नमः लिङ्गे। सूर्य–तत्त्वाय नमः गुह्ये। साम–वेद–स्वरूपाय नमः पादौ। श्रीमहा–सरस्वती–प्रीत्यर्थे उत्तम–चरित–होमे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

।। श्री महा–सरस्वती–ध्यान ।।

घण्टा - शूल - हलानि शङ्ख - मुसले चक्रं धनुः सायकम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त - विलसच्छीतांशु - तुल्य - प्रभाम्।।
गौरी-देह - समुद्भवां त्रि - जगतामाधार - भूतां महा–
पूर्वामत्र सरस्वतीमनु - भजे शुम्भादि - दैत्यार्दिनीम्।।

(लाजा व समूचे पके केले से विशेष आहुति देकर भगवती महा–सरस्वती को हाथ जोड़कर नमस्कार करे)

।। ॐ क्लीं मेधस ऋषिरुवाच ।।

पुरा शुम्भ–निशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शची–पतेः। त्रैलोक्यं यज्ञ–भागाश्च, हृता मद–बलाश्रयात्।।
ॐ ऐं क्लीं श्रौं दिव्य–रूपायै नमः स्वाहा।।३४५

तावेव सूर्यतां तद् वदधिकारं तथैन्दवम्। कौबेरमथ याम्यं च, चक्राते वरुणस्य च।।

ॐ ऐं क्लीं ओं महा-तेजाय नमः स्वाहा।।३४६

तावेव पवनर्द्धिं च, चक्रतुर्वह्नि-कर्म च। ततो देवा विनिर्धूता, भ्रष्ट-राज्याः पराजिताः।।

ॐ ऐं क्लीं ल्रीं योगिन्यै नमः स्वाहा।।३४७

हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः। महाऽसुराभ्यां तां देवीं, संस्मरन्त्यपराजिताम्।।

ॐ ऐं क्लीं क्रीं सिद्ध-योगिन्यै नमः स्वाहा।।३४८

तयाऽस्माकं वरो दत्तो, यथाऽऽपत्सु स्मृताऽखिलाः। भवतां नाशयिष्यामि, तत्-क्षणात् परमापदः।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं योगेश्वर्यै नमः स्वाहा।।३४९

(३४९, ३५० रक्त पुष्प या गुड़हल के पुष्प से विशेष आहुति)

इति कृत्वा मतिं देवा, हिमवन्तं नगेश्वरम्। जग्मुस्तत्र ततो देवीं, विष्णु-मायां प्रतुष्टुवुः।।

ॐ ऐं क्लीं हूं हाकिन्यै नमः स्वाहा।।३५०

।। देवा ऊचुः।।

नमो देव्यै महा-देव्यै, शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै, नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ॐ ऐं क्लीं रौं महा-घोरायै नमः स्वाहा।।३५१

(३५१ से ३८२ तक चावल या खीर से विशेष आहुति)

रौद्रायै नमो नित्यायै, गौर्यै धात्र्यै नमो नमः। ज्योत्स्नायै चेन्दु-रूपिण्यै, सुखायै सततं नमः।।
ॐ ऐं क्लीं म्लीं काल-रात्र्यै नमः स्वाहा।।३५२
कल्याण्यै प्रणतां वृद्धयै, सिद्धयै कुर्मो नमो नमः। नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै, शर्वाण्यै ते नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं स्हौं कालिकायै नमः स्वाहा।।३५३
दुर्गायै दुर्ग-पारायै, सारायै सर्व-कारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै, धूम्रायै सततं नमः।।
ॐ ऐं क्लीं ग्लूं सिंह-वाहिन्यै नमः स्वाहा।।३५४
अति-सौम्याति-रौद्रायै, नमस्तस्यै नमो नमः। नमो जगत्-प्रतिष्ठायै, देव्यै कृत्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं सौं ब्रह्माण्यै नमः स्वाहा।।३५५
या देवी सर्व-भूतेषु, विष्णु-मायेति शब्दिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं ल्लूं चर्चिकायै नमः स्वाहा।।३५६
या देवी सर्व-भूतेषु, चेतनेत्यभिधीयते। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं क्सां चण्डयै नमः स्वाहा।।३५७
या देवी सर्व-भूतेषु, बुद्धि-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं ग्ल्मौं गौर्य्यै नमः स्वाहा।।३५८

या देवी सर्व-भूतेषु, निद्रा-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

ॐ ऐं क्लीं स्क्लूं दोष-हारिण्यै नमः स्वाहा।।३५९

या देवी सर्व-भूतेषु, क्षुधा-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

ॐ ऐं क्लीं क्रों शिवायै नमः स्वाहा।।३६०

या देवी सर्व-भूतेषु, छाया-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

ॐ ऐं क्लीं ह्लीं वत्सलायै नमः स्वाहा।।३६१

या देवी सर्व-भूतेषु, शक्ति-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

ॐ ऐं क्लीं लीं दोषाकर-वधू-प्राणायै नमः स्वाहा।।३६२

(३६२-३६४ शमी-पत्र से विशेष आहुति)

या देवी सर्व-भूतेषु, तृष्णा-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

ॐ ऐं क्लीं स्त्रूं महोदर्यै नमः स्वाहा।।३६३

या देवी सर्व-भूतेषु, क्षान्ति-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

ॐ ऐं क्लीं लीं दुर्गायै नमः स्वाहा।।३६४

या देवी सर्व-भूतेषु, जाति-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

ॐ ऐं क्लीं सं क्षान्त्यै नमः स्वाहा।।३६५

या देवी सर्व-भूतेषु, लज्जा-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं ह्यूं शैलिन्यै नमः स्वाहा।।३६६
या देवी सर्व-भूतेषु, शान्ति-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं जूं सावित्र्यै नमः स्वाहा।।३६७
या देवी सर्व-भूतेषु, श्रद्धा-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं ह्लीं दोषाकर-वध्वे नमः स्वाहा।।३६८
या देवी सर्व-भूतेषु, कान्ति-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं स्कीं कपालिन्यै नमः स्वाहा।।३६९
या देवी सर्व-भूतेषु, लक्ष्मी-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं श्रूं कात्यायन्यै नमः स्वाहा।।३७०
या देवी सर्व-भूतेषु, धृति-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं हूं महा-देव्यै नमः स्वाहा।।३७१
या देवी सर्व-भूतेषु, वृत्ति-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं क्त्रूं काल-रात्र्यै नमः स्वाहा।।३७२

या देवी सर्व-भूतेषु, स्मृति-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं द्रौं दण्डपायै नमः स्वाहा।।३७३
या देवी सर्व-भूतेषु, दया-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं क्लूं वसुन्धरायै नमः स्वाहा।।३७४
या देवी सर्व-भूतेषु, तुष्टि-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं सं शिव-दूत्यै नमः स्वाहा।।३७५
या देवी सर्व-भूतेषु, पुष्टि-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं ल्स्त्रां दरान्त-कृते नमः स्वाहा।।३७६
या देवी सर्व-भूतेषु, मातृ-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं फ्रीं महा-तेजायै नमः स्वाहा।।३७७
या देवी सर्व-भूतेषु, भ्रान्ति-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं स्लां दोषा-पूज्यायै नमः स्वाहा।।३७८
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री, भूतानां चाखिलेषु या। भूतेषु सततं तस्यै, व्याप्ति-देव्यै नमो नमः।।
ॐ ऐं क्लीं फ्रें दण्ड-दोष्कायै नमः स्वाहा।।३७९

चिति-रूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्। नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

ॐ ऐं क्लीं ओं विश्वेश्वर्यै नमः स्वाहा।।३८०

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट - संश्रयात्, तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रां माहेन्द्र्यै नमः स्वाहा।।३८१

(इत्र से विशेष आहुति)

या साम्प्रतं चोद्धत - दैत्य - तापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत् क्षणमेव हन्ति नः, सर्वापदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः।।

ॐ ऐं क्लीं नं रौद्र्यै नमः स्वाहा।।३८२

(केसर या नाग केसर से विशेष आहुति)

।। मेधस ऋषिरुवाच।।

एवं स्तवादि-युक्तानां, देवानां तत्र पार्वती। स्नातुमभ्याययौ तोये, जाह्नव्या नृप-नन्दन!।।

ॐ ऐं क्लीं वं रुद्राण्यै नमः स्वाहा।।३८३

(मिश्री से विशेष आहुति)

साऽब्रवीत् तान् सुरान्, सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का? शरीर-कोशतश्चास्याः समुद्भूताऽब्रवीच्छिवा।।
ॐ ऐं क्लीं भं दण्डि-खण्डक-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।३८४
(नाग केसर व इत्र से विशेष आहुति)
।। देव्युवाच।।
स्तोत्रं ममैतत् क्रियते, शुम्भ-दैत्य-निराकृतैः। देवैः समेतैः समरे, निशुम्भेन पराजितैः।।
ॐ ऐं क्लीं श्रां दस्यु-रतायै नमः स्वाहा।।३८५
।। मेधस ऋषिरुवाच।।
शरीर-कोशाद् यत्-तस्याः, पार्वत्याः निःसृताऽम्बिका। कौशिकीति समस्तेषु, ततो लोकेषु गीयते।।
ॐ ऐं क्लीं लं क्षमायै नमः स्वाहा।।३८६
(समूचे बेल में घी लगाकर विशेष आहुति)
तस्यां विनिर्गतायां तु, कृष्णाऽभूत् साऽपि पार्वती। कालिकेति समाख्याता, हिमाचल-कृताश्रया।।
ॐ ऐं क्लीं ल्लूं उमायै नमः स्वाहा।।३८७
ततोऽम्बिका परं रूपं, विभ्राणां सु-मनोहरम्। ददर्श चण्डो मुण्डश्च, भृत्यौ शुम्भ-निशुम्भयोः।।
ॐ ऐं क्लीं ईं सारङ्गिण्यै नमः स्वाहा।।३८८

॥ चण्ड-मुण्डौ उवाच॥

ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता, अतीव सु-मनोहरा। काऽप्यास्ते स्त्री महाराज!, भासयन्ती हिमाचलम्।।

ॐ ऐं क्लीं क्लीं गङ्गायै नमः स्वाहा।।३८९

(३८९, ३९० लाजा से विशेष आहुति)

नैव तादृक् क्वचिद् रूपं, दृष्टं केनचिदुत्तमम्। ज्ञायतां काऽप्यसौ देवी, गृह्यतां चासुरेश्वर!।।

ॐ ऐं क्लीं ह्लीं दस्यु-पूज्यायै नमः स्वाहा।।३९०

स्त्री-रत्नमति-चार्वङ्गी, द्योतयन्ती दिशस्त्विषा। सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र! तां भवान् द्रष्टुमर्हति।।

ॐ ऐं क्लीं क्ष्मलीं इन्द्राण्यै नमः स्वाहा।।३९१

यानि रत्नानि मणयो, गजाश्वादीनि वै प्रभो! त्रैलोक्ये तु समस्तानि, साम्प्रतं भान्ति ते गृहे।।

ॐ ऐं क्लीं पूं ईश्वर्यै नमः स्वाहा।।३९२

ऐरावतं समानीतो, गज-रत्नं पुरन्दरात्। पारिजात-तरुश्चायं, तथैवोच्चैःश्रवा हयः।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं दस्यु-द्रविण-दायिन्यै नमः स्वाहा।।३९३

विमानं हंस-संयुक्तमेतत् तिष्ठति तेऽङ्गणे। रत्न-भूतमिहानीतं, यदासीद् वेधसोऽद्भुतम्।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रौं स्वधायै नमः स्वाहा।।३९४

निधिरेष महा-पद्मः, समानीतो धनेश्वरात्। किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लान-पङ्कजाम्।।

ॐ ऐं क्लीं भ्रूं दस्यु-वर्ग-कृतार्हायै नमः स्वाहा।।३९५

(कमल पुष्प से विशेष आहुति)

छत्रं ते वारुणं गेहे, काञ्चन-स्त्रावि तिष्ठति। तथाऽयं स्यन्दन-वरो, यः पुराऽऽसीत् प्रजा-पतेः।।

ॐ ऐं क्लीं क्स्त्रीं कौमार्यै नमः स्वाहा।।३९६

मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम, शक्तिरीशः! त्वया हृता। पाशः सलिल-राजस्य, भ्रातुस्तव परिग्रहे।।

ॐ ऐं क्लीं आं शङ्कर्यै नमः स्वाहा।।३९७

निशुम्भस्याब्धि-जाताश्च, समस्ता रत्न-जातयः। वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्नि-शौचे च वाससी।।

ॐ ऐं क्लीं क्रूं दस्यु-निर्णाशिन्यै नमः स्वाहा।।३९८

(मधु अथवा कारण से विशेष आहुति)

एवं दैत्येन्द्र! रत्नानि, समस्तान्याहृतानि ते। स्त्री-रत्नमेषा कल्याणी, त्वया कस्मान्न गृह्यते?।।

ॐ ऐं क्लीं त्रूं खड्गिने नमः स्वाहा।।३९९

।। मेधस ऋषिरुवाच।।

निशम्येति वचः शुम्भः, स तदा चण्ड-मुण्डयोः। प्रेषयामास सुग्रीवं, दूतं देव्या महाऽसुरम्।।

ॐ ऐं क्लीं उं दस्यु-कुल-निर्णाशिन्यै नमः स्वाहा।।४००

इति चेति च वक्तव्या, सा गत्वा वचनान्मम। यथा चाभ्येऽति सम्प्रीत्या, तथा कार्यं त्वया लघु।।

ॐ ऐं क्लीं जां वाम-नेत्र्यै नमः स्वाहा।।४०१

स तत्र गत्वा यत्रास्ते, शैलोद्देशेऽति-शोभने। सा देवी तां ततः प्राह, श्लक्ष्णं मधुरया गिरा।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रूं दस्यु-प्रिय-कर्यै नमः स्वाहा।।४०२

(सुरुआरी के बीज से विशेष आहुति)

।। दूत उवाच।।

देवि! दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः। दूतोऽहं प्रेषितस्तेन, त्वत्-सकाशमिहागतः।।

ॐ ऐं क्लीं फ्रौं दशेश्वर्यै नमः स्वाहा।।४०३

(गन्ध, अक्षत व पुष्प से विशेष आहुति)

अव्याहताज्ञः सर्वासु, यः सदा देव-योनिषु। निर्जिताऽखिल-दैत्यारिः, स यदाह श्रृणुष्व तत्।।

ॐ ऐं क्लीं क्रौं दस्यु-नृत्य-दर्शन-तत्परायै नमः स्वाहा।।४०४

मम त्रैलोक्यमखिलं, मम देवा वशानुगाः। यज्ञ-भागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक्।।

ॐ ऐं क्लीं किं गायत्र्यै नमः स्वाहा।।४०५

त्रैलोक्ये वर-रत्नानि, मम वश्यान्यशेषतः। तथैव गज-रत्नं च, हत्वा देवेन्द्र-वाहनम्।।

ॐ ऐं क्लीं ग्लूं दुष्ट-दण्ड-कर्यै नमः स्वाहा।।४०६

(सम्पूर्ण बेल से विशेष आहुति)

क्षीरोद-मथनोद्भूतमश्व-रत्नं ममामरैः। उच्चैः श्रवस-संज्ञं, तत् प्रणिपत्य समर्पितम्।।

ॐ ऐं क्लीं ध्क्लीं महा-मेधायै नमः स्वाहा।।४०७

(दूध से विशेष आहुति)

यानि चान्यानि देवेषु, गन्धर्वेषूरगेषु च। रत्न-भूतानि भूतानि, तानि मय्येव शोभने!।।

ॐ ऐं क्लीं रं दुष्ट-वर्ग-विद्राविण्यै नमः स्वाहा।।४०८

स्त्री-रत्न-भूतां त्वां देवि!, लोके मन्यामहे वयम्। सा त्वमस्मानुपागच्छ, यतो रत्न-भुजो वयम्।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रूं मोहिन्यै नमः स्वाहा।।४०९

मां वा ममानुजं वाऽपि, निशुम्भमुरु-विक्रमम्। भज त्वं चञ्चलापाङ्गि!, रत्न-भूताऽसि वै यतः।।

ॐ ऐं क्लीं क्सैं कामाक्षायै नमः स्वाहा।।४१०

(दधि से विशेष आहुति)

परमैश्वर्यमतुलं, प्राप्स्यसे मत्-परिग्रहात्। एतद् बुद्ध्या समालोच्य, मत्-परिग्रहतां व्रज।।

ॐ ऐं क्लीं स्हूं दुष्ट-वर्ग-निग्रहार्हायै नमः स्वाहा।।४११

(घृत से विशेष आहुति)

।। मेधस ऋषिरुवाच।।

इत्युक्ता सा तदा देवी, गम्भीरान्तः- स्मिता जगौ। दुर्गा भगवती भद्रा, ययेदं धार्यते जगत्।।

ॐ ऐं क्लीं श्रीं दूषकं प्राण-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।४१२

(कैथा व वच से विशेष आहुति)

।। देव्युवाच।।

सत्यमुक्तं त्वया नात्र, मिथ्या किञ्चित् त्वयोदितम्। त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो, निशुम्भश्चापि तादृशः।।

ॐ ऐं क्लीं ओं त्रि-नेत्रायै नमः स्वाहा।।४१३

किं त्वत्र यत्-प्रतिज्ञातं, मिथ्या तत्-क्रियते कथम्। श्रूयतामल्प-बुद्धित्वात्, प्रतिज्ञा या कृता पुरा।।

ॐ ऐं क्लीं लूं दूषकोत्ताप-जनन्यै नमः स्वाहा।।४१४

यो मां जयति संग्रामे, यो मे दर्पं व्यपोहति। यो मे प्रति-बलो लोके, स मे भर्ता भविष्यति।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रूं डाकिन्यै नमः स्वाहा।।४१५

(अपराजिता, भटकटैया व धतूरे के पुष्प से विशेष आहुति)

तदाऽऽगच्छतु शुम्भोऽत्र, निशुम्भो वा महाऽसुरः। मां जित्वा किं चिरेणाऽत्र, पाणिं गृह्णातु मे लघु।।

ॐ ऐं क्लीं ल्लूं दूषकारिष्ट-कारिण्यै नमः स्वाहा।।४१६

(मोरपङ्खी और धतूरे के पुष्प से विशेष आहुति)

।। दूत उवाच।।

अवलिप्ताऽसि मैवं त्वं, देवि! ब्रूहि ममाग्रतः। त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भ-निशुम्भयोः?।।

ॐ ऐं क्लीं स्खौं दूषक-द्वेषण-कर्यै नमः स्वाहा।।४१७

(पुष्प व सुरुआरी के बीज से विशेष आहुति)

अन्येषामपि दैत्यानां, सर्वे देवा न वै युधि। तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि!, किं पुनः स्त्री त्वमेकिका।।

ॐ ऐं क्लीं स्भ्रौं कालिकायै नमः स्वाहा।।४१८

इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे। शुम्भादीनां कथं तेषां, स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम्।।

ॐ ऐं क्लीं क्ष्म्लीं दाहिकायै नमः स्वाहा।।४१९

(मोरपङ्खी और धतूरे के पुष्प से विशेष आहुति)

सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता, पार्श्वं शुम्भ-निशुम्भयोः। केशाकर्षण-निर्धूत-गौरवा मा गमिष्यसि।।

ॐ ऐं क्लीं ब्रीं कपालिन्यै नमः स्वाहा।।४२०

।। देव्युवाच।।

एवमेतद् बली शुम्भो, निशुम्भश्चाति-वीर्य-वान्। किं करोमि प्रतिज्ञा मे, यदनालोचिता पुरा।।

ॐ ऐं क्लीं सीं दहनात्मिकायै नमः स्वाहा।।४२१

स त्वं गच्छ मयोक्तं ते, यदेतत् सर्वमादृतः। तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय, स च युक्तं करोतु तत् क्लीं ॐ।।

ॐ ऐं क्लीं भूं चामुण्डायै नमः स्वाहा।।४२२

(शहद से विशेष आहुति)

ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु। (यजमानस्य कामा) जगदम्बाऽर्पणमस्तु। ऐसा कहकर '**वेदी**' के सम्मुख जल छोड़े।

फिर पाँच आहुतियाँ नीचे लिखे मन्त्रों से घी की दें–

१. ॐ प्राणाय स्वाहा। २. ॐ अपानाय स्वाहा। ३. ॐ समानाय स्वाहा। ४. ॐ उदानाय स्वाहा। ५. ॐ व्यानाय स्वाहा।

अन्त में, एक उल्टे साबुत पान पर शाकल्य, घी में भिगोकर **१ कमल गट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची**, गुग्गल ये सब वस्तुएँ **स्रुची** में रखकर खड़े होकर आहुति दें। इस अध्याय में विशेष आहुति **कपूर, पुष्प व ऋतु-फल केला, ईख आदि के टुकड़े** की होती है–

ॐ साङ्गायै सायुधायै स-शक्तिकायै स-परिवारायै स-वाहनायै क्लीं-वीजाधिष्ठात्र्यै महा-सरस्वत्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः।

'सद्'-रूपिणि! महा-सरस्वति!

'क्लीं'-वीजाधिष्ठात्र्यै

'ब्रह्म'-विद्यायै त्वां ध्याये!

।। उत्तम चरितम् – षष्ठोऽध्यायः।।

।। ध्यान ।।

ॐ नागाधीश्वर - विष्टरां फणि - फणोत्तंसोरु - रत्नावली–
भास्वद् - देह - लतां दिवाकर - निभां नेत्र - त्रयोद्भासिताम्।
माला-कुम्भ-कपाल-नीरज-करां चन्द्रार्ध-चूडां परां,
सर्वज्ञेश्वर-भैरवाङ्क-निलयां पद्मावतीं चिन्तये।।

(रक्त पुष्पों से विशेष आहुति देकर हाथ जोड़कर भगवती पद्मावती को नमस्कार करे)

।। ॐ मेधस ऋषिरुवाच।।

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः, स दूतोऽमर्ष-पूरितः। समाचष्ट समागम्य, दैत्य-राजाय विस्तरात्।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं दर्भ-तनवे नमः स्वाहा।।४२३

(४२३ से ४२६ तक गुग्गुल से विशेष आहुति)

तस्य दूतस्य तद्-वाक्यमाकर्ण्यासुर-राट् ततः। स-क्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्र-लोचनम्।।

ॐ ऐं क्लीं लां दारिकारि-निहन्त्र्यै नमः स्वाहा।।४२४

।। शुम्भ उवाच ।।

हे धूम्र-लोचनाशु त्वं, स्व-सैन्य-परिवारितः। तामानय बलाद् दुष्टां, केशाकर्षण-विह्वलाम्।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं योगिन्यै नमः स्वाहा।।४२५

तत्-परित्राणदः कश्चिद्, यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः। स हन्तव्योऽमरो वापि, यक्षो गन्धर्व एव वा।।

ॐ ऐं क्लीं स्हें दारुकेश्वर-पूजितायै नमः स्वाहा।।४२६

।। मेधस ऋषिरुवाच ।।

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं, स दैत्यो धूम्र-लोचनः। वृतः षष्ट्या सहस्त्राणामसुराणां द्रुतं ययौ।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं पतङ्गायै नमः स्वाहा।।४२७

स दृष्ट्वा तां ततो देवीं, तुहिनाचल-संस्थिताम्। जगादोच्चैः प्रयाहीति, मूलं शुम्भ-निशुम्भयोः।।

ॐ ऐं क्लीं श्रीं गणेश्वर्य्यै नमः स्वाहा।।४२८

।। धूम्र-लोचन उवाच।।

न चेत् प्रीत्याऽद्य भवती, मद्-भर्तारमुपैष्यति। ततो बलान्नयाम्येष, केशाकर्षण-विह्वलाम्।।

ॐ ऐं क्लीं रुं दारुकेश्वर-वन्दितायै नमः स्वाहा।।४२९

।। देव्युवाच ।।

दैत्येश्वरेण प्रहितो, बलवान् बल-संवृतः।बलान्नयसि मामेवं, ततः किं ते करोम्यहम्!।।

ॐ ऐं क्लीं च्छूं शैलायै नमः स्वाहा।।४३०

।। मेधस ऋषिरुवाच ।।

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत् तामसुरो धूम्र-लोचनः। हुङ्कारेणैव तं भस्म, सा चकाराम्बिका ततः।।

ॐ ऐं क्लीं फ्रें दारुकेश्वर-मात्रे नमः स्वाहा।।४३१

(गुग्गल व सुरमा से विशेष आहुति)

अथ क्रुद्धं महा-सैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका। ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्ति -परश्वधैः।।

ॐ ऐं क्लीं ह्लूं दर्भ-हस्तायै नमः स्वाहा।।४३२

(गुलाल, शिलाजीत से विशेष आहुति)

ततो धुत-सटः कोपात्, कृत्वा नादं सु-भैरवम्।पपातासुर-सेनायां, सिंहो देव्या स्व-वाहनः।।

ॐ ऐं क्लीं द्रें दर्भ-युतायै नमः स्वाहा।।४३३

(गुग्गल, शिलाजीत व सुवर्ण या रजत-निर्मित चरण-पादुका से विशेष आहुति)

कांश्चित् कर-प्रहारेण, दैत्यानास्येन चापरान्। आक्रान्त्या चाधरेणान्यान्, स जघान महाऽसुरान्।।

ॐ ऐं क्लीं सां दर्भ-कर्म-विवर्जितायै नमः स्वाहा।।४३४

(वच से विशेष आहुति)

केषाञ्चित् पाटयामास, नखैः कोष्ठानि केसरी। तथा तल-प्रहारेण, शिरांसि कृतवान् पृथक्।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं कृष्ण-वर्णायै नमः स्वाहा।।४३५

(४३५, ४३६ लाल मिर्च से विशेष आहुति)

विच्छिन्न-बाहु-शिरसः, कृतास्तेन तथाऽपरे। पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुत-केसरः।।

ॐ ऐं क्लीं ऐं दर्भ-मय्यै नमः स्वाहा।।४३६

क्षणेन तद्-बलं सर्वं, क्षयं नीतं महात्मना। तेन केसरिणा देव्या, वाहनेनाति-कोपिना।।

ॐ ऐं क्लीं प्रों यम-दूत्यै नमः स्वाहा।।४३७

(४३७ से ४३९ तक काली मिर्च से विशेष आहुति)

श्रुत्वा तमसुरं देव्या, निहतं धूम्र-लोचनम्। बलं च क्षयितं कृत्स्नं, देवी-केसरिणा ततः।।

ॐ ऐं क्लीं त्रूं दर्भ-सर्व-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा।।४३८

चुकोप दैत्याधिपतिः, शुम्भः प्रस्फुरिताधरः। आज्ञापयामास च तौ, चण्ड-मुण्डौ महाऽसुरौ।।

ॐ ऐं क्लीं क्रौं दर्भ-कर्माचार-रतायै नमः स्वाहा।।४३९

।। शुम्भ उवाच ।।

हे चण्ड! हे मुण्ड! बलैर्बहुभिः परिवारितौ। तत्र गच्छत गत्वा च, सा समानीयतां लघु।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं भद्र-काल्यै नमः स्वाहा।।४४०

(४४०, ४४१ बताशा से विशेष आहुति)

केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा, यदि वः संशयो युधि।तदाऽशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम्।।

ॐ ऐं क्लीं त्रीं दर्भ-हस्त-कृतार्हणायै नमः स्वाहा।।४४१

तस्यां हतायां दुष्टायां, सिंहे च विनिपातिते। शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा, गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॐ।।

ॐ ऐं क्लीं दर्भानुकूलायै नमः स्वाहा।।४४२

(भोज-पत्र से विशेष आहुति)

ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु। (यजमानस्य कामा) जगदम्बाऽर्पणमस्तु। ऐसा कहकर '**वेदी**' के सम्मुख जल छोड़े।

फिर पाँच आहुतियाँ नीचे लिखे मन्त्रों से घी की दें–

१. ॐ प्राणाय स्वाहा। २. ॐ अपानाय स्वाहा। ३. ॐ समानाय स्वाहा। ४. ॐ उदानाय स्वाहा। ५. ॐ व्यानाय स्वाहा।

अन्त में, एक उल्टे साबुत पान पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमल गट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गुग्गल ये सब वस्तुएँ स्त्रुची में रखकर खड़े होकर आहुति दें। इस अध्याय में विशेष आहुति कपूर, पुष्प व ऋतु-फल की होती है–

ॐ साङ्गायै सायुधायै स-शक्तिकायै स-परिवारायै स-वाहनायै क्लीं-वीजाधिष्ठात्र्यै महा-सरस्वत्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः।

'सद्'-रूपिणि! महा-सरस्वति!

'क्लीं'-वीजाधिष्ठात्र्यै

'ब्रह्म'-विद्यायै त्वां ध्याये!

।। उत्तम चरितम् – सप्तमोऽध्यायः।।

।। ध्यान ।।

ॐ ध्यायेयं रत्न - पीठे शुक - कल - पठितं श्रृण्वतीं श्यामलाङ्गीं,
न्यस्तैकांघ्रि - सरोजे शशि - शकल - धरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कह्लाराबद्ध - माला नियमित - विलसच्चोलिकां रक्त - वस्त्रां,
मातङ्गीं शङ्ख - पात्रां मधुर - मधु - मदां चित्रकोद्भासि - भालाम्।।

(रक्त पुष्प व समूचे पके केले से विशेष आहुति देकर हाथ जोड़कर भगवती मातङ्गी को नमस्कार करे)

।। ॐ मेधस ऋषिरुवाच ।।

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्ड - मुण्ड - पुरोगमाः। चतुरङ्ग - बलोपेता, ययुरभ्युद्यतायुधाः।।
ॐ ऐं क्लीं श्रौं युगेश्वर्यै नमः स्वाहा।।४४३

ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्-हासां व्यवस्थिताम्। सिंहस्योपरि शैलेन्द्र-शृङ्गे महति काञ्चने।।
ॐ ऐं क्लीं प्रीं सरस्वत्यै नमः स्वाहा।।४४४

ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः। आकृष्ट-चापाऽसि-धरास्तथाऽन्ये तत्-समीपगाः।।
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं दाम्भर्यायै नमः स्वाहा।।४४५

ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति। कोपेन चास्या वदनं, मसी-वर्णमभूत् तदा।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रौं यम-दूत्यै नमः स्वाहा।।४४६

(कर्पूर-युक्त कज्जल से विशेष आहुति)

भृकुटी-कुटिलात् तस्या, ललाट-फलकाद द्रुतम्। काली कराल-वदना, विनिष्क्रान्ताऽसि-पाशिनी।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं दर्भ-कर्माचार-रतायै नमः स्वाहा।।४४७

विचित्र-खट्वाङ्ग-धरा, नर-माला-विभूषणा। द्वीपि-चर्म-परीधाना, शुष्क-मांसाति-भैरवा।।

ॐ ऐं क्लीं ओं दर्भानुकूलायै नमः स्वाहा।।४४८

(कैथा व गरी-छुहारा की माला से विशेष आहुति)

अति-विस्तार-वदना, जिह्वा-ललन-भीषणा। निमग्नाऽऽरक्त-नयना, नादाऽऽपूरित-दिङ्-मुखा।।

ॐ ऐं क्लीं श्रीं सरस्वत्यै नमः स्वाहा।।४४९

सा वेगेनाभि-पतिता, घातयन्ती महाऽसुरान्। सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्-बलम्।।

ॐ ऐं क्लीं क्रां दाम्भर्यै नमः स्वाहा।।४५०

(पीली सरसों से विशेष आहुति)

पार्ष्णि-ग्राहांकुश-ग्राहि-योध-घण्टा-समन्वितान्। समादायैक-हस्तेन, मुखे चिक्षेप वारणान्।।

ॐ ऐं क्लीं हूं कृत्यै नमः स्वाहा।।४५१

तथैव योधं तुरगै, रथं सारथिना सह। निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यति-भैरवम्।।

ॐ ऐं क्लीं छ्रां दर्वी-पात्रानुदामिन्यै नमः स्वाहा।।४५२

एकं जग्राह केशेषु, ग्रीवायामथ चापरम्। पादेनाक्रम्य चैवाऽन्यमुरसान्यमपोथयत्।।

ॐ ऐं क्लीं ल्लूं दम-घोष-प्रपूज्यायै नमः स्वाहा।।४५३

तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि, महाऽस्त्राणि तथाऽसुरैः। मुखेन जग्राह रुषां, दशनैर्मथितान्यपि।।

ॐ ऐं क्लीं सौं शिवायै नमः स्वाहा।।४५४

बलिनां तद्-बलं सर्वसुराणां दुरात्मनाम्। ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत् तथा।।

ॐ ऐं क्लीं ह्लौं दम-घोष-समाराध्यायै नमः स्वाहा।।४५५

असिना निहताः केचित्, केचित् खट्वाङ्ग-ताडिताः। जग्मुर्विनाशमसुरा, दन्ताग्राभि-हतास्तथा।।

ॐ ऐं क्लीं क्रूं यक्षान्यै नमः स्वाहा।।४५६

क्षणेन तद् बलं सर्वमसुराणां निपातितम्। दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव, तां कालीमति-भीषणाम्।।

ॐ ऐं क्लीं सौं दम-घोष-वर-प्रदायै नमः स्वाहा।।४५७

शर-वर्षैर्महा-भीमैर्भीमाक्षीं तां महाऽसुरः। छादयामास चक्रैश्च, मुण्डः क्षिप्तैः सहस्त्रशः।।
ॐ ऐं क्लीं कुं दावाग्नि-रूपिण्यै नमः स्वाहा।।४५८

(शिलाजीत से विशेष आहुति)

तानि चक्राण्यनेकानि, विशमानानि तन्मुखम्। बभुर्यथाऽर्क-बिम्बानि, सु-बहूनि घनोदरम्।।
ॐ ऐं क्लीं ह्लीं हुङ्कार्यै नमः स्वाहा।।४५९

ततो जहासाति - रुषा, भीमं भैरव - नादिनी। काली कराल - वक्त्रान्तर्दुर्दर्श - दशनोज्ज्वला।।
ॐ ऐं क्लीं हूं दन्त-चर्चित-हस्तिकायै नमः स्वाहा।।४६०

(भोज-पत्र व मैनफल से विशेष आहुति)

उत्थाय च महा-सिंहं, देवी चण्डमधावत। गृहीत्वा चास्य केशेषु, शिरस्तेनासिनाच्छिनत्।।
ॐ ऐं क्लीं मूं सहस्त्राक्ष्यै नमः स्वाहा।।४६१

अथ मुण्डोऽभ्यधावत् तां, दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्। तमप्यपातयद् भूमौ, सा खड्गाभि-हतं रुषा।।
ॐ ऐं क्लीं (हौं) ह्रां जयन्त्यै नमः स्वाहा।।४६२

(कैथा से विशेष आहुति)

छिन्ने शिरसि दैत्येन्द्रश्चक्रे नादं सु - भैरवम्। तेन नादेन महता, भासितं भुवन - त्रयम्।।
ॐ ऐं क्लीं ह्सूं द्वार-वासिन्यै नमः स्वाहा।।४६३

हत-शेषं ततः सैन्यं, दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्। मुण्डं च सु-महा-वीर्यं, दिशो भेजे भयातुरम्।।

ॐ ऐं क्लीं क्रें आकर्षण्यै नमः स्वाहा।।४६४

शिरश्चण्डस्य काली च, गृहीत्वा मुण्डमेव च। प्राह प्रचण्डाट्टहास-मिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम्।।

ॐ ऐं क्लीं लूं भैरव्यै नमः स्वाहा।।४६५

(बताशा व समूचे पके केले से विशेष आहुति)

।। देव्युवाच।।

मया तवात्रोपहृतौ, चण्ड-मुण्डौ महा-पशू। युद्ध-यज्ञे स्वयं शुम्भं, निशुम्भं च हनिष्यसि।।

ॐ ऐं क्लीं प्लूं मृडान्यै नमः स्वाहा।।४६६

।। मेधस ऋषिरुवाच।।

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा, चण्ड-मुण्डौ महासुरौ। उवाच कालीं कल्याणी, ललितं चण्डिका वचः।।

ॐ ऐं क्लीं शां दम्भ-हन्त्र्यै नमः स्वाहा।।४६७

।। चण्डिका उवाच।।

यस्माच्चण्डं च मुण्डं च, गृहीत्वा त्वमुपागता। चामुण्डेति ततो लोके, ख्याता देवि! भविष्यसि ॐ ।।

ॐ ऐं क्लीं ह्स्व्रीं धृत्यै नमः स्वाहा।।४६८

(जायफल से विशेष आहुति)

ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु। (यजमानस्य कामा) जगदम्बाऽर्पणमस्तु। ऐसा कहकर '**वेदी**' के सम्मुख जल छोड़े।

फिर पाँच आहुतियाँ नीचे लिखे मन्त्रों से घी की दें–

१. ॐ प्राणाय स्वाहा। २. ॐ अपानाय स्वाहा। ३. ॐ समानाय स्वाहा। ४. ॐ उदानाय स्वाहा। ५. ॐ व्यानाय स्वाहा।

अन्त में, एक उल्टे **साबुत** पान पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमल गट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, **१ छोटी इलायची, गुग्गल** ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर आहुति दें। इस अध्याय में विशेष आहुति **जायफल** की होती है–

ॐ साङ्गायै सायुधायै स-शक्तिकायै स-परिवारायै स-वाहनायै क्लीं-वीजाधिष्ठात्र्यै महा-सरस्वत्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः।

'सद्'-रूपिणि! महा-सरस्वति!

'क्लीं'-वीजाधिष्ठात्र्यै

'ब्रह्म'-विद्यायै त्वां ध्याये!

।। उत्तम चरितम् – अष्टमोऽध्यायः।।

।। ध्यान ।।

ॐ अरुणां करुणा – तरङ्गिताक्षीं, धृत – पाशांकुश – वाण – चाप – हस्ताम्।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम्।।

(सुगन्धित तेल, लाल चन्दन से विशेष आहुति देकर हाथ जोड़कर नमस्कार करे)

।। ॐ मेधस ऋषिरुवाच।।

चण्डे च निहते दैत्ये, मुण्डे च विनिपातिते। बहुलेषु च सैन्येषु, क्षयितेष्वसुरेश्वरः।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं दत्त-स्वर्गायै नमः स्वाहा।।४६९

ततः कोप-पराधीन-चेताः शुम्भः प्रताप-वान्। उद्योगं सर्व-सैन्यानां, दैत्यानामादिदेश ह।।

ॐ ऐं क्लीं स्लूं विन्ध्य-वासिन्यै नमः स्वाहा।।४७०

।। शुम्भ उवाच।।

अद्य सर्व – बलैर्दैत्याः, षडशीतिरुदायुधाः। कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्व – बलैर्वृताः।।

ॐ ऐं क्लीं प्लीं दम्भ-दात्र्यै नमः स्वाहा।।४७१

कोटि-वीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै। शतं कुलानि धौम्राणां, निर्गच्छन्तु ममाज्ञया।।

ॐ ऐं क्लीं अं दम्भ-लोक-विमोहिन्यै नमः स्वाहा।।४७२

कालका दौर्हृदा मौर्याः, कालकेयास्तथाऽसुराः। युद्धाय सज्जा निर्यान्तु, आज्ञया त्वरिता मम।।

ॐ ऐं क्लीं म्लीं दम्भ-शीलायै नमः स्वाहा।।४७३

।। ॐ मेधस ऋषिरुवाच।।

इत्याज्ञाप्यासुर - पतिः, शुम्भो भैरव - शासनः। निर्जगाम महा - सैन्य - सहस्त्रैर्बहुभिर्वृतः।।

ॐ ऐं क्लीं श्रां गन्धायै नमः स्वाहा।।४७४

आयान्तं चण्डिकां दृष्ट्वा, तत्-सैन्यमति-भीषणम्। ज्या-स्वनैः पूरयामास, धरणी-गगनान्तरम्।।

ॐ ऐं क्लीं सौं दम्भ-हरायै नमः स्वाहा।।४७५

ततः सिंहो महा-नादमतीव कृत-वान् नृप!। घण्टा-स्वनेन तन्नादमम्बिका चोप-बृंहयत्।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं चण्डिकायै नमः स्वाहा।।४७६

धनुर्ज्या-सिंह-घण्टानां, नादापूरित-दिङ्-मुखा। निनादैर्भीषणैः काली, जिग्ये विस्तारितानना।।

ॐ ऐं क्लीं प्रीं दम्भ-वत्यारि-मर्दिन्यै नमः स्वाहा।।४७७

तं निनादमुप-श्रुत्य, दैत्य-सैन्यैश्चतुर्दिशम्। देवी सिंहस्तथा काली, स-रोषैः परिवारिताः।।

ॐ ऐं क्लीं म्ह्लीं विरूपाक्ष्यै नमः स्वाहा।।४७८

एतस्मिन्नन्तरे भूप!, विनाशाय सुर-द्विषाम्। भवायामर-सिंहानामति-वीर्य-बलान्विताः।।

ॐ ऐं क्लीं प्रूं दम्भ-रूपायै नमः स्वाहा।।४७९

ब्रह्मेश-गुह-विष्णूनां, तथेन्द्रस्य च शक्तयः। शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य, तद्-रूपैश्चण्डिकां ययुः।।

ॐ ऐं क्लीं ऐं महा-मायायै नमः स्वाहा।।४८०

यस्य देवस्य यद्-रूपं, यथा भूषण-वाहनम्। तद्-वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ।।

ॐ ऐं क्लीं क्रों दम्भ-कर्यै नमः स्वाहा।।४८१

हंस-युक्त-विमानाग्रे, साक्ष-सूत्र-कमण्डलुः। आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साऽभिधीयते।।

ॐ ऐं क्लीं ईं संहारिण्यै नमः स्वाहा।।४८२

माहेश्वरी वृषारूढा, त्रिशूल-वर-धारिणी। महाऽहि-वलया प्राप्ता, चन्द्र-रेखा-विभूषणा।।

ॐ ऐं क्लीं ऐं दम्भ-सन्तान-दारिण्यै नमः स्वाहा।।४८३

(जटामासी से विशेष आहुति)

कौमारी शक्ति-हस्ता च, मयूर-वर-वाहना। योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुह-रूपिणी।।

ॐ ऐं क्लीं लृं कुलेश्वर्यै नमः स्वाहा।।४८४

तथैव वैष्णवी-शक्तिर्गरुडोपरि-संस्थिता। शङ्ख-चक्र-गदा-शार्ङ्ग-खड्ग-हस्ताभ्युपाययौ।।

ॐ ऐं क्लीं फ्रों दत्त-मोक्षायै नमः स्वाहा।।४८५

यज्ञ-वाराहमतुलं, रूपं या बिभ्रती हरेः। शक्तिः साप्याययौ तत्र, वाराहीं बिभ्रती तनुम्।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रूं नागिन्यै नमः स्वाहा।।४८६

नारसिंही नृसिंहस्य, बिभ्रती सदृशं वपुः। प्राप्ता तत्र सटाक्षेप - क्षिप्त - नक्षत्र - संहतिः।।

ॐ ऐं क्लीं फ्रौं दत्तारोग्यायै नमः स्वाहा।।४८७

(४८७, ४८८ वच व वज्रदन्ती से विशेष आहुति)

वज्र-हस्ता तथैवेन्द्री, गज-राजोपरि स्थिता। प्राप्ता सहस्त्र-नयना, यथा शक्रस्तथैव सा।।

ॐ ऐं क्लीं ग्लौं मुद्रायै नमः स्वाहा।।४८८

ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देव-शक्तिभिः। हन्यन्तामसुराः शीघ्रं, मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम्।।

ॐ ऐं क्लीं स्मौं दम्भिकायै नमः स्वाहा।।४८९

ततो देवी-शरीरात् तु, विनिष्क्रान्ताऽति-भीषणा। चण्डिका-शक्तिरत्युग्रा, शिवा-शत-निनादिनी।।

ॐ ऐं क्लीं श्रीं दत्त-पुत्रायै नमः स्वाहा।।४९०

(शङ्ख-पुष्पी से विशेष आहुति)

।। देव्युवाच।।

सा चाह धूम्र-जटिलमीशानमपराजिता। दूत! त्वं गच्छ भगवन्! पार्श्वं शुम्भ-निशुम्भयोः।।

ॐ ऐं क्लीं स्हौं पिनाकिन्यै नमः स्वाहा।।४९१

(जायफल से विशेष आहुति)

ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च, दानवावति-गर्वितौ। ये चान्ये दानवास्तत्र, युद्धाय समुपस्थिताः।।

ॐ ऐं क्लीं ख्सें दत्त-दारायै नमः स्वाहा।।४९२

(बिजौरा नीबू से विशेष आहुति)

त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां, देवाः सन्तु हविर्भुजः। यूयं प्रयात पातालं, यदि जीवितुमिच्छथ।।

ॐ ऐं क्लीं क्ष्म्लीं रक्तांग्यै नमः स्वाहा।।४९३

(गन्ना से विशेष आहुति)

बलावलेपादथ चेद्, भवन्तो युद्ध-कांक्षिणः। तदाऽऽगच्छत तृप्यन्तु, मच्छिवाः पिशितेन वः।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रौं दत्त-हारायै नमः स्वाहा।।४९४

(४९४, ४९५ अदरक व काले उड़द से विशेष आहुति)

।। मेधस ऋषिरुवाच।।

यतो नियुक्तो दौत्येन, तया देव्या शिवः स्वयम्। शिव-दूतीति लोकेऽस्मिन्, ततः सा ख्यातिमागता।।

ॐ ऐं क्लीं वीं महा-घोरायै नमः स्वाहा।।४९५

तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः, शर्वाख्यातं महाऽसुराः। अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र, कात्यायनी स्थिता।।

ॐ ऐं क्लीं लूं दारिकायै नमः स्वाहा।।४९६

ततः प्रथममेवाग्रे, शर-शक्त्यृष्टि-वृष्टिभिः। ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः।।

ॐ ऐं क्लीं ब्लीं दार-वासायै नमः स्वाहा।।४९७

सा च तान् प्रहितान् वाणांञ्छूल-शक्ति-परश्वधान्। चिच्छेद लीलयाऽऽध्मात-धनुर्मुक्तैर्महेषुभिः।।

ॐ ऐं क्लीं त्स्त्रों जलेश्वर्यै नमः स्वाहा।।४९८

तस्याग्रतस्तथा काली, शूल-पात-विदारितान्। कमण्डलु-जलाक्षेप-हत-वीर्यान् हतौजसः।।

ॐ ऐं क्लीं ब्रूं दत्त-भोगायै नमः स्वाहा।।४९९

ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून्, येन येन स्म धावति। माहेश्वरी-त्रिशूलेन, तथा चक्रेण वैष्णवी।।

ॐ ऐं क्लीं (श्क्लीं) श्क्लीं सर्व-सिद्ध्यै नमः स्वाहा।।५००

(धतूरे के पुष्प से विशेष आहुति)

दैत्याञ्जघान कौमारी, तथा शक्त्याति-कोपना। ऐन्द्री कुलिश-पातेन, शतशो दैत्य -दानवाः।।

ॐ ऐं क्लीं श्रूं दत्त-शोकायै नमः स्वाहा।।५०१

पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां, रुधिरौघ-प्रवर्षिणः। तुण्ड-प्रहार-विध्वस्ता, दंष्ट्राग्र-क्षत-वक्षसः।।

ॐ ऐं क्लीं शीं दत्त-हस्त्यादि-वाहनायै नमः स्वाहा।।५०२

वाराह-मूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः। नखैर्विदारितांश्चान्यान्, भक्षयन्ती महाऽसुरान्।।

ॐ ऐं क्लीं क्लीं योगिन्यै नमः स्वाहा।।५०३

नारसिंही चचाराजौ, नादापूर्ण-दिगम्बरा। चण्डाट्ट-हासैरसुराः, शिव-दूत्यभि-दूषिताः।।

ॐ ऐं क्लीं क्लौं दत्त-मत्यै नमः स्वाहा।।५०४

पेतुः पृथिव्यां पतितान्, तांश्च खादाथ सा तदा। इति मातृ-गणं क्रुद्धं, मर्दयन्तं महाऽसुरान्।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रूं दत्त-भार्यायै नमः स्वाहा।।५०५

दृष्ट्वाऽभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारि-सैनिकाः। पलायन-परान् दृष्ट्वा, दैत्यान् मातृ-गणार्दितान्।।

ॐ ऐं क्लीं क्लूं भवान्यै नमः स्वाहा।।५०६

योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो, रक्त-बीजो महाऽसुरः। रक्त-बिन्दुर्यदा भूमौ, पतत्यस्य शरीरतः।।

ॐ ऐं क्लीं तां दत्त-शास्त्राव-बोधिकायै नमः स्वाहा।।५०७

(लाख से विशेष आहुति)

समुत्पतति मेदिन्यां, तत्-प्रमाणस्तदाऽसुरः। युयुधे स गदा-पाणिरिन्द्र-शक्त्या महाऽसुरः।।
ॐ ऐं क्लीं म्लूं भद्रायै नमः स्वाहा।।५०८

(बिजौरा नीबू से विशेष आहुति)

ततश्चैन्द्री स्व-वज्रेण, रक्त-बीजमताडयत्। कुलिशेनाहतस्याशु, बहु सुस्राव शोणितम्।।
ॐ ऐं क्लीं हं दत्त-पानायै नमः स्वाहा।।५०९

(५०९ से ५१२ तक रक्त चन्दन से विशेष आहुति)

समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्-रूपास्तत्-पराक्रमाः।यावन्तः पतितास्तस्य, शरीराद् रक्त-विन्दवः।।
ॐ ऐं क्लीं स्लूं निकृत्यै नमः स्वाहा।।५१०

तावन्तः पुरुषा जातास्तद्-वीर्य-बल-विक्रमाः। ते चापि युयुधुस्तत्र, पुरुषा रक्त-सम्भवाः।।
ॐ ऐं क्लीं औं दत्त-दानायै नमः स्वाहा।।५११

समं मातृभिरत्युग्र-शस्त्र-पातातति-भीषणम्। पुनश्च वज्र-पातेन क्षतमस्य शिरो यदा।।
ॐ ऐं क्लीं ह्लौं विघ्न-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।५१२

ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः। वैष्णवी समरे चैनं, चक्रेणाभि-जघान ह।।
ॐ ऐं क्लीं यां क्षमा-कर्यै नमः स्वाहा।।५१३

गदया ताडयामास, ऐन्द्री तमसुरेश्वरम्। वैष्णवी चक्र-भिन्नस्य, रुधिर-स्त्राव-सम्भवैः।।
ॐ ऐं क्लीं क्ष्लीं दत्त-सौधावनी-वासायै नमः स्वाहा।।५१४

सहस्त्रशो जगद्-व्याप्तं, तत्-प्रमाणैर्महाऽसुरैः। शक्त्या जघान कौमारी, वाराही च तथाऽसिना।।
ॐ ऐं क्लीं ह्लीं दुर्गायै नमः स्वाहा।।५१५

माहेश्वरी त्रिशूलेन, रक्त-बीजं महाऽसुरम्। स चापि गदया दैत्यः, सर्वा एवाहनत् पृथक्।।
ॐ ऐं क्लीं ग्लौं दासदायै नमः स्वाहा।।५१६

मातृः कोप-समाविष्टो, रक्त- बीजो महाऽसुरः। तस्याहतस्य बहुधा, शक्ति-शूलादिभिर्भुवि।।
ॐ ऐं क्लीं ह्रौं शान्ति-कर्यै नमः स्वाहा।।५१७

पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः। तैश्चासुरासृक् -सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्।।
ॐ ऐं क्लीं प्रां दास्य-तुष्टायै नमः स्वाहा।।५१८

(५१८, ५१९ पीली सरसों से विशेष आहुति)

व्याप्तमासीत् ततो देवा, भयमाजग्मुरुत्तमम्। तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा, चण्डिका प्राह सत्वरा।।
ॐ ऐं क्लीं क्लीं दास्य-हरायै नमः स्वाहा।।५१९

।। देव्युवाच।।

उवाच कालीं "चामुण्डे! विस्तीर्णं वदनं कुरु। मच्छस्त्रपात-सम्भूतान्, रक्त-विन्दून् महाऽसुरान्।।

ॐ ऐं क्लीं स्लूं गौर्यै नमः स्वाहा।।५२०

(५२० से ५२९ तक रक्त चन्दन से विशेष आहुति)

रक्त-बिन्दोः प्रतीच्छ त्वं, वक्त्रेणानेन वेगिना। भक्षयन्ती चर रणे, तदुत्पन्नान् महाऽसुरान्।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं दास-दासी-शत-प्रदायै नमः स्वाहा।।५२१

एवमेष क्षयं दैत्यः, क्षीण-रक्तो गमिष्यति। भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा, न चोत्पत्स्यन्ति चापरे"।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रैं दम्पत्तीष्टायै नमः स्वाहा।।५२२

।। मेधस ऋषिरुवाच।।

इत्युक्त्वा तां ततो देवी, शूलेनाभि-जघान तम्। मुखेन काली जगृहे, रक्त-बीजस्य शोणितम्।।

ॐ ऐं क्लीं भ्रं विश्व-हर्त्रे नमः स्वाहा।।५२३

ततोऽसावाजघानाथ, गदया तत्र चण्डिकाम्। न चास्या वेदनां चक्रे, गदा-पातोऽल्पिकामपि।।

ॐ ऐं क्लीं सौं वरुणायै नमः स्वाहा।।५२४

तस्याहतस्य देहात् तु, बहु सुस्राव शोणितम्। यतस्ततस्तद्-वक्त्रेण, चामुण्डा सम्प्रतीच्छति।।

ॐ ऐं क्लीं श्रीं दम्पत्यै नमः स्वाहा।।५२५

मुखे समुद्गता येऽस्या, रक्त-पातान् महाऽसुराः। तांश्च खादाथ चामुण्डा, पपौ तस्य च शोणितम्।।

ॐ ऐं क्लीं प्सूं विश्व-संहार-कारिण्यै नमः स्वाहा।।५२६

देवी शूलेन वज्रेण, बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः। जघान रक्त-बीजं तं, चामुण्डा-पीत-शोणितम्।।

ॐ ऐं क्लीं द्रौं दार-रूपायै नमः स्वाहा।।५२७

स पपात मही-पृष्ठे, शस्त्र-सङ्घ-समाहतः। नीरक्तश्च महीपाल!, रक्त-बीजो महाऽसुरः।।

ॐ ऐं क्लीं स्नां धात्र्यै नमः स्वाहा।।५२८

ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप! तेषां मातृ-गणो जातो, ननर्तासृङ्-मदोद्धतः ॐ।।

ॐ ऐं क्लीं ह्स्लीं दार-वासायै नमः स्वाहा।।५२९

ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्याः सन्तु। (यजमानस्य कामाः) जगदम्बाऽर्पणमस्तु। ऐसा कहकर '**वेदी**' के सम्मुख जल छोड़े।

फिर पाँच आहुतियाँ नीचे लिखे मन्त्रों से घी की दें–

१. ॐ प्राणाय स्वाहा। २. ॐ अपानाय स्वाहा। ३. ॐ समानाय स्वाहा। ४. ॐ उदानाय स्वाहा। ५. ॐ व्यानाय स्वाहा।

पृ० १२२

अन्त में, एक उल्टे साबुत पान पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमल गट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गुग्गल ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर आहुति दें। इस अध्याय में विशेष आहुति लाल चन्दन के चूरे की होती है–

ॐ साङ्गायै सायुधायै स-शक्तिकायै स-परिवारायै स-वाहनायै क्लीं-वीजाधिष्ठात्र्यै महा-सरस्वत्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः।

'सद्'-रूपिणि! महा-सरस्वति!
'क्लीं'-वीजाधिष्ठात्र्यै
'ब्रह्म'-विद्यायै त्वां ध्याये!

।। उत्तम चरितम् – नवमोऽध्यायः।।

।। ध्यान ।।

ॐ बन्धूक-काञ्चन-निभं रुचिराक्ष-मालां, पाशांकुशौ च वरदां निज-बाहु-दण्डैः।
विभ्राणमिन्दु - शकलाभरणं त्रिनेत्रमर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि।।

(रक्त पुष्प से विशेष आहुति देकर हाथ जोड़कर नमस्कार करे)

।। ॐ राजोवाच ।।

विचित्रमिदमाख्यातं, भगवन्! भवता मम। देव्याश्चरित-माहात्म्यं, रक्त-बीज-वधाश्रितम्।।

ॐ ऐं क्लीं रौं दार-वासि-हृदास्पदायै नमः स्वाहा।।५३०

(५३०, ५३१ रक्त चन्दन से विशेष आहुति)

भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं, रक्त-बीजे निपातिते। चकार शुम्भो यत्-कर्म, निशुम्भश्चाति-कोपनः।।

ॐ ऐं क्लीं क्लीं कामिन्यै नमः स्वाहा।।५३१

।। मेधस ऋषिरुवाच ।।

चकार कोपमतुलं, रक्त - बीजे निपातिते। शुम्भासुरो निशुम्भश्च, हतेष्वन्येषु चाहवे।।

ॐ ऐं क्लीं म्लौं दार-वासि-जनाराध्यायै नमः स्वाहा।।५३२

हन्यमानं महा-सैन्यं, विलोक्यामर्षमुद्-वहन्। अभ्यधावन् निशुम्भोऽथ, मुख्ययाऽसुर-सेनया।।

ॐ ऐं क्लीं ग्लीं दार-वासि-जन-प्रियायै नमः स्वाहा।।५३३

तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे, पार्श्वयोश्च महाऽसुराः। सन्दष्टौष्ठ-पुटाः क्रुद्धा, हन्तुं देवीमुपाययुः।।

ॐ ऐं क्लीं स्हौं दार-वासि-विनिर्मितायै नमः स्वाहा।।५३४

आजगाम महा-वीर्यः, शुम्भोऽपि स्व-बलैर्वृतः। निहन्तुं चण्डिकां कोपात्, कृत्वा युद्धं तु मातृभिः।।

ॐ ऐं क्लीं ईं विद्यायै नमः स्वाहा।।५३५

ततो युद्धमतीवासीद्, देव्या शुम्भ-निशुम्भयोः। शर-वर्षमतीवोग्रं, मेघयोरिव वर्षतोः।।

ॐ ऐं क्लीं बूं दार-वासि-समर्चितायै नमः स्वाहा।।५३६

चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां, चण्डिका स्व-शरोत्करैः। ताडयामास चाङ्गेषु, शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ।।

ॐ ऐं क्लीं लूं दार-वास्याहृत-प्राणायै नमः स्वाहा।।५३७

निशुम्भो निशितं खड्गं, चर्म चादाय स-प्रभम्। अताडयन् मूर्ध्नि सिंहं, देव्या वाहनमुत्तमम्।।

ॐ ऐं क्लीं आं सन्ध्यायै नमः स्वाहा।।५३८

(गन्ने के टुकड़ों से विशेष आहुति)

ताडिते वाहने देवी, क्षुर-प्रेणासिमुत्तमम्। निशुम्भस्याशु चिच्छेद, चर्म चाप्यष्ट-चन्द्रकम्।।
ॐ ऐं क्लीं श्रीं दार-वास्यारि-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।५३९

(५३९, ५४० भोज-पत्र से विशेष आहुति)

छिन्ने चर्मणि खड्गे च, शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः। तामप्यस्य द्विधा चक्रे, चक्रेणाभि -मुखागताम्।।
ॐ ऐं क्लीं क्रौं विरूपाक्ष्यै नमः स्वाहा।।५४०

कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ, शूलं जग्राह दानवः। आयान्तं मुष्टि-पातेन, देवी तच्चाप्यचूर्णयत्।।
ॐ ऐं क्लीं प्रूं दार-वासि-विघ्न-हरायै नमः स्वाहा।।५४१

आविध्याथ गदां सोऽपि, चिक्षेप चण्डिकां प्रति। साऽपि देव्या त्रिशूलेन, भिन्ना भस्मत्वमागता।।
ॐ ऐं क्लीं क्लीं त्रि-शान्त्यै नमः स्वाहा।।५४२

(गन्ने के टुकड़ों से विशेष आहुति)

ततः परशु - हस्तं तमायान्तं दैत्य - पुङ्गवम्। आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भू - तले।।
ॐ ऐं क्लीं भ्रूं दार-वासि-विमुक्तिदायै नमः स्वाहा।।५४३

तस्मिन्निपतिते भूमौ, निशुम्भे भीम - विक्रमे। भ्रातर्यतीव - संक्रुद्धः, प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्।।
ॐ ऐं क्लीं ह्रौं शुभ-प्रदायै नमः स्वाहा।।५४४

तमायान्तं समालोक्य, देवी शङ्खमवादयत्। ज्या-शब्दं चापि धनुषश्चकारातीव-दुःसहम्।।

ॐ ऐं क्लीं क्रीं दाराग्नि-रूपिण्यै नमः स्वाहा।।५४५

(भोज-पत्र से विशेष आहुति)

पूरयामास ककुभो, निज-घण्टा-स्वनेन च। समस्त-दैत्य-सैन्यानां, तेजो-वध-विधायिना।।

ॐ ऐं क्लीं म्लीं त्रि-नेत्राय नमः स्वाहा।।५४६

ततः सिंहो महा-नादैस्त्याजितेभ-महा-मदैः। पूरयामास गगनं, गां तथैव दिशो दश।।

ॐ ऐं क्लीं ग्लौं दारायै नमः स्वाहा।।५४७

(पके केले से विशेष आहुति)

ततः काली समुत्पत्य, गगनं क्ष्मामताडयत्। कराभ्यां तन्-निनादेन, प्राक्-स्वनास्ते तिरोहिताः।।

ॐ ऐं क्लीं प्लीं दार-कार्यऽरि-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।५४८

अट्टाट्ट - हासमशिवं, शिव - दूती चकार ह। तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः, शुम्भः कोपं परं ययौ।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रौं घोरायै नमः स्वाहा।।५४९

(५४९ से ५५२ तक काली मिर्च से विशेष आहुति)

दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति, व्याजहाराम्बिका यदा। तदा जयेत्यभिहितं, देवैराकाश- संस्थितैः।।

ॐ ऐं क्लीं ह्स्त्रां दाडिमी-वृक्ष-वासिन्यै नमः स्वाहा।।५५०

शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालाऽति-भीषणा। आयान्ती वह्नि-कूटाभा, सा निरस्ता महोल्कया।।

ॐ ऐं क्लीं स्हौं वसुधायै नमः स्वाहा।।५५१

सिंह-नादेन शुम्भस्य, व्याप्तं लोक-त्रयान्तरम्। निर्घात-निःस्वनो घोरो, जितवानवनी-पते!।।

ॐ ऐं क्लीं ल्लूं दाडिमी-वृक्ष-रूपायै नमः स्वाहा।।५५२

शुम्भ-मुक्ताञ्छरान् देवी, शुम्भस्तत् प्रहितांञ्छरान्। चिच्छेद स्व-शरैरुग्रैः, शतशोऽथ सहस्त्रशः।।

ॐ ऐं क्लीं श्रीं दाडिमी-वन-वासिन्यै नमः स्वाहा।।५५३

ततः सा चण्डिका क्रुद्धा, शूलेनाभि-जघान तम्। स तदाऽभिहतो भूमौ, मूर्च्छितो निपपात ह।।

ॐ ऐं क्लीं च्रें दक्षिणायै नमः स्वाहा।।५५४

(पेठे के टुकड़ों से विशेष आहुति)

ततो निशुम्भः सम्प्राप्य, चेतनामात्त-कार्मुकः। आजघान शरैर्देवीं, कालीं केसरिणं तथा।।

ॐ ऐं क्लीं वीं सदा-धनायै नमः स्वाहा।।५५५

पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः। चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम्।।

ॐ ऐं क्लीं क्ष्लूं दक्षिणा-रूपायै नमः स्वाहा।।५५६

ततो भगवती क्रुद्धा, दुर्गा दुर्गार्ति-नाशिनी। चिच्छेद तानि चक्राणि, स्व-शरैः सायकांश्च तान्।।

ॐ ऐं क्लीं श्लूं धिये नमः स्वाहा।।५५७

ततो निशुम्भो वेगेन, गदामादाय चण्डिकाम्। अभ्यधावत वै हन्तुं, दैत्य-सेना-समावृतः।।

ॐ ऐं क्लीं क्रूं दक्षिणा-रूप-धारिण्यै नमः स्वाहा।।५५८

तस्यापतत एवाशु, गदां चिच्छेद चण्डिका। खड्गेन शित-धारेण, स च शूलं समाददे।।

ॐ ऐं क्लीं क्रां कामेश्वर्यै नमः स्वाहा।।५५९

शूल-हस्तं समायान्तं, निशुम्भममरार्दनम्। हृदि विव्याध शूलेन, वेगाविद्धेन चण्डिका।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रौं दश-कन्यायै नमः स्वाहा।।५६०

भिन्नस्य तस्य शूलेन, हृदयान्निःसृतोऽपरः। महा-बलो महा-वीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन्।।

ॐ ऐं क्लीं क्रां महा-तपायै नमः स्वाहा।।५६१

तस्य निष्क्रामतो देवी, प्रहस्य स्वनवत् ततः। शिरश्चिच्छेद खड्गेन, ततोऽसावपतद् भुवि।।

ॐ ऐं क्लीं स्क्ष्लीं दक्ष-पुत्र्यै नमः स्वाहा।।५६२

(सुपारी से विशेष आहुति)

ततः सिंहश्चखादोग्रं, दंष्ट्रा क्षुण्ण-शिरोधरान्। असुरांस्तांस्तथा काली, शिव-दूती तथाऽपरान्।।

ॐ ऐं क्लीं म्रूं अघोरायै नमः स्वाहा।।५६३

कौमारी-शक्ति-निर्भिन्नाः, केचिन्नेशुर्महाऽसुराः। ब्रह्माणी-मन्त्र-पूतेन, तोयेनान्ये निराकृताः।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं दक्ष-गोत्रायै नमः स्वाहा।।५६४

(बेल के टुकड़ों से विशेष आहुति)

माहेश्वरी-त्रिशूलेन, भिन्नाः पेतुस्तथाऽपरे। वाराही-तुण्ड-घातेन, केचिच्चूर्णी-कृता भुवि।।

ॐ ऐं क्लीं ब्लूं खड्ग-हस्तायै नमः स्वाहा।।५६५

(५६५, ५६६ गन्ना व केले से विशेष आहुति)

खण्डं खण्डं च चक्रेण, वैष्णव्या दानवाः कृताः। वज्रेण चैन्द्री-हस्ताग्र-विमुक्तेन तथाऽपरे।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं दक्ष-सुतायै नमः स्वाहा।।५६६

केचिद् विनेशुरसुराः, केचिन् नष्टा महाऽऽहवात्। भक्षिताश्चापरे काली-शिव-दूती-मृगाधिपैः।।

ॐ ऐं क्लीं फ्रूं दक्ष-मात्रे नमः स्वाहा।।५६७

(लाल कपड़ा घी में भिगो कर समूचे बेल के साथ विशेष आहुति)

ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्याः सन्तु। (यजमानस्य कामा) जगदम्बाऽर्पणमस्तु। ऐसा कहकर '**वेदी**' के सम्मुख जल छोड़े।

फिर **पाँच आहुतियाँ** नीचे लिखे मन्त्रों से घी की दें–

१. ॐ प्राणाय स्वाहा। २. ॐ अपानाय स्वाहा। ३. ॐ समानाय स्वाहा। ४. ॐ उदानाय स्वाहा। ५. ॐ व्यानाय स्वाहा।

अन्त में, एक उल्टे **साबुत पान** पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमल गट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गुग्गल ये सब वस्तुएँ **स्रुची** में रखकर खड़े होकर आहुति दें। इस अध्याय में विशेष आहुति **पायस (खीर)** सहित **गन्ध, पुष्प, विल्व-फल** की होती है–

ॐ साङ्गायै सायुधायै स-शक्तिकायै स-परिवारायै स-वाहनायै क्लीं-वीजाधिष्ठात्र्यै महा-सरस्वत्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः।

'सद्'-रूपिणि! महा-सरस्वति!

'क्लीं'-वीजाधिष्ठात्र्यै

'ब्रह्म'-विद्यायै त्वां ध्याये!

।। उत्तम चरितम् – दशमोऽध्यायः।।

।। ध्यान ।।

ॐ उत्तप्त-हेम-रुचिरां रवि-चन्द्र-वह्नि-नेत्रां धनुश्शर-युतांकुश-पाश-शूलम्।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिव-शक्ति-रूपां, कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दु-लेखाम्।।

(रक्त पुष्प से विशेष आहुति देकर भगवती कामेश्वरी को हाथ जोड़कर नमस्कार करे)

।। ॐ मेधस ऋषिरुवाच।।

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा, भ्रातरं प्राण-सम्मितम्। हन्य-मानं बलं चैव, शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद् वचः।।

ॐ ऐं क्लीं श्रीं प्रसन्न-काल्यै नमः स्वाहा।।५६८

।। शुम्भ उवाच।।

बलावलेपाद् दुष्टे! त्वं, मा दुर्गे! गर्वमावह। अन्यासां बलमाश्रित्य, युद्ध्यसे याति-मानिनी।।

ॐ ऐं क्लीं म्लूं तपस्विन्यै नमः स्वाहा।।५६९

।। देव्युवाच ।।

एकैवाऽहं जगत्यत्र, द्वितीया का ममापरा? पश्यैता दुष्ट! मय्येव, विशन्त्यो मद्-विभूतयः।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं दक्ष-यज्ञ-विनाशिन्यै नमः स्वाहा।।५७०

(दूध से विशेष आहुति)

।। मेधस ऋषिरुवाच ।।

ततः समस्तास्ता देव्यो, ब्रह्माणी-प्रमुखा लयम्। तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत् तदाऽम्बिका।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं द्वार-धात्र्यै नमः स्वाहा।।५७१

।। देव्युवाच ।।

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता। तत्-संहृतं मयैकैव, तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव।।

ॐ ऐं क्लीं ग्लीं दक्ष-यज्ञान्त-कारिण्यै नमः स्वाहा।।५७२

।। मेधस ऋषिरुवाच ।।

ततः प्रववृते युद्धं, देव्याः शुम्भस्य चोभयोः। पश्यतां सर्व-देवानामसुराणां च दारुणम्।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रं द्वार-देश-निवासिन्यै नमः स्वाहा।।५७३

शर-वर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः। तयोर्युद्धमभूद् भूयः, सर्व-लोक-भयङ्करम्।।

ॐ ऐं क्लीं ऐं दक्ष-प्रसूत्यै नमः स्वाहा।।५७४

दिव्यान्यस्त्राणि शतशो, मुमुचे यान्यथाऽम्बिका। बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्-प्रतीघात-कर्तृभिः।।

ॐ ऐं क्लीं हूं द्वार-संस्थायै नमः स्वाहा।।५७५

(काली उड़द से विशेष आहुति)

मुक्तानि तेन चास्त्राणि, दिव्यानि परमेश्वरी। बभञ्ज लीलयैवोग्र-हुङ्कारोच्चारणादिभिः।।

ॐ ऐं क्लीं द्रौं दक्षेज्जायै नमः स्वाहा।।५७६

ततः शर-शतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः। साऽपि तत्-कुपिता देवी, धनुश्चिच्छेद चेषुभिः।।

ॐ ऐं क्लीं श्रीं द्वार-संस्थितायै नमः स्वाहा।।५७७

(५७७ से ५७९ तक काली उड़द से विशेष आहुति)

छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे। चिच्छेद देवी चक्रेण, तामप्यस्य करे स्थिताम्।।

ॐ ऐं क्लीं त्रूं दक्ष-वंशैक-पावन्यै नमः स्वाहा।।५७८

ततः खड्गमुपादाय, शत-चन्द्रं च भानु-मत्। अभ्यधावत् तदा देवीं, दैत्यानामधिपेश्वरः।।

ॐ ऐं क्लीं ब्रूं दक्षात्मजायै नमः स्वाहा।।५७९

तस्यापतत एवाशु, खड्गं चिच्छेद चण्डिका। धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्क-करामलम्।।

ॐ ऐं क्लीं फ्रें द्वार-रूपायै नमः स्वाहा।।५८०

(५८० से ५८३ तक काले तिल से विशेष आहुति)

हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्न-धन्वा वि-सारथिः। जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिका-निधनोद्यतः।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रां दक्ष-सूनवे नमः स्वाहा।।५८१

चिच्छेदापततस्तस्य, मुद्गरं निशितैः शरैः। तथापि सोऽभ्यधावत् तां, मुष्टिमुद्यम्य वेग-वान्।।
ॐ ऐं क्लीं जुं द्वार-वासिन्यै नमः स्वाहा।।५८२
स मुष्टिं पातयामास, हृदये दैत्य-पुङ्गवः। देव्यास्तं चापि सा देवी, तलेनोरस्यताडयत्।।
ॐ ऐं क्लीं सौः दक्षजायै नमः स्वाहा।।५८३
तल - प्रहाराभिहतो, निपपात मही - तले। स दैत्य - राजः सहसा, पुनरेव तथोत्थितः।।
ॐ ऐं क्लीं स्लूं द्वार-पाल-प्रियायै नमः स्वाहा।।५८४
उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः। तत्रापि सा निराधारा, युयुधे तेन चण्डिका।।
ॐ ऐं क्लीं प्रें दक्ष-जातिकायै नमः स्वाहा।।५८५
नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्। चक्रतुः प्रथमं सिद्ध-मुनि-विस्मय-कारकम्।।
ॐ ऐं क्लीं ह्स्वां दक्षिणाचार-संसिद्धायै नमः स्वाहा।।५८६
ततो नियुद्धं सु-चिरं, कृत्वा तेनाम्बिका सह। उत्पात्य भ्रामयामास, चिक्षेप धरणी-तले।।
ॐ ऐं क्लीं प्रीं दक्ष-जन्मने नमः स्वाहा।।५८७

(पेठे के टुकड़ों से विशेष आहुति)

अभ्यधावत दुष्टात्मा, चण्डिका-निधनेच्छया। तमायान्तं ततो देवी, सर्व-दैत्य-जनेश्वरम्।।
ॐ ऐं क्लीं फ्रां दक्ष-देह-समुद्भवायै नमः स्वाहा।।५८८

जगत्यां पातयामास, भित्त्वा शूलेन वक्षसि। स गतासुः पपातोर्व्यां, देवी-शूलाग्र-विक्षतः।।
ॐ ऐं क्लीं क्रीं दक्षिणाचार-संसिद्धायै नमः स्वाहा।।५८९

(दूध व दूर्वा से विशेष आहुति)

चालयन् सकलां पृथ्वीं, साब्धि-द्वीपां स-पर्वताम्। ततः प्रसन्नमखिलं, हते तस्मिन् दुरात्मनि।।
ॐ ऐं क्लीं श्रीं दुर्गमायै नमः स्वाहा।।५९०

जगत् स्वास्थ्यमतीवाप, निर्मलं चाभवन्नभः। उत्पात-मेघाः सोल्का ये, प्रागासंस्ते शमं ययुः।।
ॐ ऐं क्लीं क्रां दुर्गम-ध्यानायै नमः स्वाहा।।५९१

सरितो मार्ग-वाहिन्यस्तथाऽऽसंस्तत्र पातिते। ततो देव-गणाः सर्वे, हर्ष-निर्भर-मानसाः।।
ॐ ऐं क्लीं सः दुर्गमात्म-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा।।५९२

बभूवुर्निहते तस्मिन्, गन्धर्वा ललितं जगुः। अवादयंस्तथैवान्ये, ननृतुश्चाप्सरो-गणाः।।
ॐ ऐं क्लीं क्लीं दुर्गमागम-संधानायै नमः स्वाहा।।५९३

(बेल-फल व पुष्प से विशेष आहुति)

ववुः पुण्यास्तथा वाताः, सुप्रभोऽभूद् दिवाकरः। जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः, शान्ता दिग्जनित-स्वनाः ।।
ॐ ऐं क्लीं स्हलीं दोष-हरायै नमः स्वाहा।।५९४

ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्याः सन्तु। (यजमानस्य कामाः) जगदम्बाऽर्पणमस्तु। ऐसा कहकर '**वेदी**' के सम्मुख जल छोड़े।

फिर **पाँच आहुतियाँ** नीचे लिखे मन्त्रों से घी की दें–

१. ॐ प्राणाय स्वाहा। २. ॐ अपानाय स्वाहा। ३. ॐ समानाय स्वाहा। ४. ॐ उदानाय स्वाहा। ५. ॐ व्यानाय स्वाहा।

अन्त में, एक उल्टे **साबुत पान** पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमल गट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गुग्गल ये सब वस्तुएँ **स्रुची** में रखकर खड़े होकर आहुति दें। इस अध्याय में विशेष आहुति **पायस (खीर)** सहित **गन्ध, पुष्प, विल्व-फल** की होती है–

ॐ साङ्गायै सायुधायै स-शक्तिकायै स-परिवारायै स-वाहनायै क्लीं-वीजाधिष्ठात्र्यै महा-सरस्वत्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः।

> 'सद्'-रूपिणि! महा-सरस्वति!
>
> 'क्लीं'-वीजाधिष्ठात्र्यै
>
> 'ब्रह्म'-विद्यायै त्वां ध्याये!

।। उत्तम चरितम् – एकादशोऽध्यायः।।

।। ध्यान ।।

ॐ बाल-रवि - द्युतिमिन्दु - किरीटां, तुङ्ग - कुचां नयन - त्रय - युक्ताम्।
स्मेर - मुखीं वरदांकुश - पाशाभीति - करां प्रभजे भुवनेशीम्।।

(रक्त पुष्प से विशेष आहुति देकर हाथ जोड़कर भगवती भुवनेश्वरी को नमस्कार करे)

।। ॐ मेधस ऋषिरुवाच ।।

देव्या हते तत्र महाऽसुरेन्द्रे, सेन्द्राः सुरा वह्नि - पुरो - गमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्ट-लाभाद्, विकाशि-वक्त्राब्ज-विकाशिताशाः।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं दुर्गमाचार-पूजितायै नमः स्वाहा ।।५९५

(जटामासी से विशेष आहुति)

।। देवा ऊचुः ।।

देवि! प्रपन्नार्ति - हरे! प्रसीद, प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि! पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि! चराचरस्य।।

ॐ ऐं क्लीं व्रें दक्षिणाचार-मोक्षाप्त्यै नमः स्वाहा।।५९६

(पंच-मेवा व बताशे से विशेष आहुति)

आधार - भूता जगतस्त्वमेका, मही - स्वरूपेण यतः स्थिताऽसि।
अपां स्वरूप - स्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलंघ्य - वीर्ये !।।
ॐ ऐं क्लीं इं दक्षिणाचार-वन्दितायै नमः स्वाहा।।५९७

(जल से विशेष आहुति)

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त - वीर्या, विश्वस्य बीजं परमाऽसि माया।
सम्मोहितं देवि! समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति - हेतुः।।
ॐ ऐं क्लीं क्रूं दुर्ग-नाड्यां रोहणायै नमः स्वाहा।।५९८

(अक्षत से विशेष आहुति)

विद्याः समस्तास्तव देवि! भेदाः, स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्, का ते स्तुतिः स्तव्य - परा परोक्तिः!।।
ॐ ऐं क्लीं श्रीं दीनायै नमः स्वाहा।।५९९

सर्व-भूता यदा देवी, स्वर्ग-मुक्ति-प्रदायिनी। त्वं स्तुता स्तुतये का वा, भवन्तु परमोक्तयः?।।
ॐ ऐं क्लीं ल्लीं दनुजान्त-कर्यै नमः स्वाहा।।६००

सर्वस्य बुद्धि-रूपेण, जनस्य हृदि संस्थिते! स्वर्गापवर्गदे देवि!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं प्रें दरी-कृत-तपस्यायै नमः स्वाहा।।६०१

कला-काष्ठादि-रूपेण, परिणाम-प्रदायिनि! विश्वस्योपरतौ शक्ते!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं सौं दनु-सन्तान-दारिण्यै नमः स्वाहा।।६०२
सर्व-मङ्गल-माङ्गल्ये!, शिवे! सर्वार्थ-साधिके! शरण्ये! त्र्यम्बके! गौरि! नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं श्रूं बुद्ध्यै नमः स्वाहा।।६०३
(रक्त पुष्प से विशेष आहुति)
सृष्टि-स्थिति-विनाशानां, शक्ति-भूते! सनातनि! गुणाश्रये! गुण-मये!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं क्लीं शक्त्यै नमः स्वाहा।।६०४
शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे! सर्वस्यार्ति-हरे देवि!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं स्क्लीं त्र्यम्बक्यै नमः स्वाहा।।६०५
(खीर व चन्दन-युक्त पुष्प से विशेष आहुति)
हंस-युक्त-विमानस्थे!, ब्रह्माणी-रूप-धारिणि! कौशाम्भः-क्षरिके! देवि!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं प्रीं गुणाश्रयायै नमः स्वाहा।।६०६
त्रिशूल-चन्द्राहि-धरे!, महा-वृषभ-वाहिनि! माहेश्वरी-स्वरूपेण, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं स्ह्रीं ब्रह्माण्यै नमः स्वाहा।।६०७
(धतूरे के पुष्प से विशेष आहुति)

मयूर-कुक्कुट-वृते!, महा-शक्ति-धरेऽनघे! कौमारी-रूप-संस्थाने!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं स्तौं माहेश्वर्यै नमः स्वाहा।।६०८
शङ्ख-चक्र-गदा-शार्ङ्ग-गृहीत-परमायुधे! प्रसीद वैष्णवी-रूपे!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं जीं कौमार्यै नमः स्वाहा।।६०९
गृहीतोग्र-महा-चक्रे!, दंष्ट्रोद्धृत-वसुन्धरे! वराह-रूपिणि! शिवे!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं क्रूं ऐन्द्र्यै नमः स्वाहा।।६१०
नृसिंह-रूपेणोग्रेण, हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे! त्रैलोक्य-त्राण-सहिते!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं क्रूं शिव-दूत्यै नमः स्वाहा।।६११
(६११ से ६१३ तक जटामासी से विशेष आहुति)
किरीटिनि! महा-वज्रे!, सहस्त्र-नयनोज्ज्वले! वृत्र-प्राण-हरे! चैन्द्रि!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं चामुण्डायै नमः स्वाहा।।६१२
शिव-दूती-स्वरूपेण, हत-दैत्य-महा-बले! घोर-रूपे! महा-रावे!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं श्रूं दुर्गायै नमः स्वाहा।।६१३
दंष्ट्रा-कराल-वदने!, शिरो-माला-विभूषणे! चामुण्डे! मुण्ड-मथने!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।
ॐ ऐं क्लीं इं कात्यायन्यै नमः स्वाहा।।६१४

लक्ष्मि! लज्जे! महा-विद्ये!, श्रद्धे! पुष्टि-स्वधे! ध्रुवे! महा-रात्रि! महा-माये!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।

ॐ ऐं क्लीं जूं भद्र-काल्यै नमः स्वाहा।।६१५

(पुष्प व लाजा से विशेष आहुति)

मेधे! सरस्वति! वरे!, भूति! बाभ्रवि! तामसि! नियते त्वं प्रसीदेशे!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।

ॐ ऐं क्लीं त्रैं घण्टायै नमः स्वाहा।।६१६

सर्वतः पाणि-पादान्ते, सर्वतोऽक्षि-शिरो-मुखे! सर्वतः श्रवण-घ्राणे!, नारायणि! नमोऽस्तु ते।।

ॐ ऐं क्लीं द्रूं चण्डिकायै नमः स्वाहा।।६१७

सर्व-स्वरूपे! सर्वेशे, सर्व-शक्ति-समन्विते! भयेभ्यस्त्राहि नो देवि!, दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रौं रोग-हरायै नमः स्वाहा।।६१८

(खीर व चन्दन-युक्त पुष्प से विशेष आहुति)

एतत् ते वदनं सौम्यं, लोचन-त्रय-भूषितम्। पातु नः सर्व-भीतिभ्यः, कात्यायनि! नमोऽस्तु ते।।

ॐ ऐं क्लीं क्लीं अम्बिकायै नमः स्वाहा।।६१९

ज्वाला-करालमत्युग्रमशेषासुर-सूदनम्। त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्र-कालि! नमोऽस्तु ते।।

ॐ ऐं क्लीं सूं जगदम्बायै नमः स्वाहा।।६२०

हिनस्ति दैत्य-तेजांसि, स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि!, पापेभ्योऽनः सुतानिव।।

ॐ ऐं क्लीं श्व्रं विश्वेश-वन्द्यायै नमः स्वाहा।।६२१

असुरासृग्-वसा-पङ्क-चर्चितस्ते करोज्ज्वलः। शुभाय खड्गो भवतु, चण्डिके! त्वां नता वयम्।।

ॐ ऐं क्लीं ब्रूं देव्यै नमः स्वाहा।।६२२

(गिलोय से विशेष आहुति)

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा, रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां, त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।

ॐ ऐं क्लीं स्फ्रूं विश्वार्ति-हारिण्यै नमः स्वाहा।।६२३

(भोज-पत्र व गिलोय से विशेष आहुति)

एतत् कृतं यत् कदनं त्वयाऽद्य, धर्म-द्विषां देवि! महाऽसुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्म-मूर्तिं, कृत्वाऽम्बिके! तत् प्रकरोति काऽन्या?।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं दक्षिणाचार-शरणायै नमः स्वाहा।।६२४

(जायफल से विशेष आहुति)

विद्यासु शास्त्रेषु विवेक - दीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या?।
ममत्व - गर्तेऽति - महाऽन्धकारे, विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्।।
ॐ ऐं क्लीं लं वरदायै नमः स्वाहा।।६२५

(दूध से विशेष आहुति)

रक्षांसि यत्रोग्र - विषाश्च नागा, यत्रारयो दस्यु - बलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाऽब्धि - मध्ये, तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्।।
ॐ ऐं क्लीं ह्सौं दक्षिणाचार-वन्दितायै नमः स्वाहा।।६२६

विश्वेश्वरि! त्वं परिपासि विश्वं, विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेश - वन्द्या भवती भवन्ति, विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति - नम्राः।।
ॐ ऐं क्लीं सें अखिलेश्वर्यै नमः स्वाहा।।६२७

(पंचमेवा से विशेष आहुति)

देवि! प्रसीद परिपालय नोऽरि - भीतेर्नित्यं यथाऽसुर - वधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्व-जगतां प्रशमं नयाशु, उत्पात-पाक-जनितांश्च महोप-सर्गान्।।
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं शुम्भ-दैत्य-विमर्दिन्यै नमः स्वाहा।।६२८

प्रणतानां प्रसीद त्वं, देवि! विश्वार्ति-हारिणि! त्रैलोक्य-वासिनामीड्ये, लोकानां वरदा भव।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं निशुम्भासुर-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।६२९

(कर्पूर से विशेष आहुति)

।। देव्युवाच।।

वरदाऽहं सुर-गणा!, वरं यन्मनसेच्छथ। तं वृणुध्वं प्रयच्छामि, जगतामुप-कारकम्।।

ॐ ऐं क्लीं विं विन्ध्याचल-वासिन्यै नमः स्वाहा।।६३०

।। देवा ऊचुः।।

सर्वा-बाधा-प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याऽखिलेश्वरि! एवमेव त्वया कार्यमस्माकं वैरि-नाशनम्।।

ॐ ऐं क्लीं प्लीं रौद्र-रूपिण्यै नमः स्वाहा।।६३१

(काली मिर्च तथा लाल मिर्च से विशेष आहुति)

।। देव्युवाच।।

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते, अष्टा-विंशतिमे युगे। शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महाऽसुरौ।।

ॐ ऐं क्लीं क्ष्म्क्लीं रक्त-दन्तिकायै नमः स्वाहा।।६३२

नन्द-गोप-गृहे जाता, यशोदा-गर्भ-सम्भवा। ततस्तौ नाशयिष्यामि, विन्ध्याचल-निवासिनी।।

ॐ ऐं क्लीं त्स्त्रां स्तुत्यै नमः स्वाहा।।६३३

(मिष्ठान, मक्खन व मिश्री से विशेष आहुति)

पुनरप्यति-रौद्रेण, रूपेण पृथिवी-तले। अवतीर्य हनिष्यामि, वैप्रचित्तांस्तु दानवान्।।

ॐ ऐं क्लीं प्रं अयोनिजायै नमः स्वाहा।।६३४

भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्, वैप्रचित्तान् महाऽसुरान्। रक्ता दन्ता भविष्यन्ति, दाडिमी-कुसुमोपमाः।।

ॐ ऐं क्लीं क्लौं शताक्ष्यै नमः स्वाहा।।६३५

(अनार के पुष्प व फल से विशेष आहुति)

ततो मां देवताः स्वर्गे, मर्त्य-लोके च मानवाः। स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति, सततं रक्त-दन्तिकाम्।।

ॐ ऐं क्लीं स्त्रूं पालिन्यै नमः स्वाहा।।६३६

(दाड़िम के बीज से विशेष आहुति)

भूयश्च शत-वार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि। मुनिभिः संस्तुता भूमौ, सम्भविष्याम्ययोनिजा।।

ॐ ऐं क्लीं क्ष्मां शाकम्भर्यै नमः स्वाहा।।६३७

(पालक से विशेष आहुति)

ततः शतेन नेत्राणां, निरीक्षिष्यामि यन्-मुनीन्। कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः, शताक्षीमिति मां ततः।।

ॐ ऐं क्लीं स्तूं दुर्गायै नमः स्वाहा।।६३८

(शङ्ख-पुष्पी व गेंदा-कमल की माला से विशेष आहुति)

ततोऽहमखिलं लोकमात्म-देह-समुद्भवैः। भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राण-धारकैः।।

ॐ ऐं क्लीं स्हीं मुनीनां त्राण-कारिण्यै नमः स्वाहा।।६३९

(केला, कैथा, राल, शाक-सोआ, पालक व चौराई आदि से विशेष आहुति)

शाकम्भरीति विख्यातिं, तदा यास्याम्यहं भुवि। तत्रैव च वधिष्यामि, दुर्गमाख्यं महाऽसुरम्।।

ॐ ऐं क्लीं प्रीं भीमायै नमः स्वाहा।।६४०

(हरे साग, हरी दूर्वा, मधु, कारण से विशेष आहुति)

दुर्गा-देवीति विख्यातं, तन्मे नाम भविष्यति। पुनश्चाहं यदा भीमं, रूपं कृत्वा हिमाचले।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं महा-बाधा-विनाशिन्यै नमः स्वाहा।।६४१

रक्षांसि भक्षयिष्यामि, मुनीनां त्राण-कारणात्। तदा मां मुनयः सर्वे, स्तोष्यन्त्यानम्र-मूर्तयः।।

ॐ ऐं क्लीं श्रां भ्रामर्यै नमः स्वाहा।।६४२

भीमा-देवीति विख्यातं, तन्मे नाम भविष्यति। यदाऽरुणाख्यस्त्रैलोक्ये, महा-बाधां करिष्यति।।

ॐ ऐं क्लीं ओं सर्व-बाधा-प्रशमन्यै नमः स्वाहा।।६४३

(कमल पुष्प से विशेष आहुति)

तदाऽहं भ्रामरं रूपं, कृत्वाऽसंख्येय-षट्-पदम्। त्रैलोक्यस्य हितार्थाय, वधिष्यामि महाऽसुरम्।।

ॐ ऐं क्लीं श्रीं मधु-कैटभ-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।६४४

(खीर व पीली सरसों से विशेष आहुति)

भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।इत्थं यदा यदा बाधा, दानवोत्था भविष्यति।
तदा तदाऽवतीर्याऽहं, करिष्याम्यरि-संक्षयम् ॐ।।

ॐ ऐं क्लीं म्लीं अरि-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।६४५

(खीर व पीली सरसों से विशेष आहुति)

ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्याः सन्तु। (यजमानस्य कामाः) जगदम्बाऽर्पणमस्तु। ऐसा कहकर 'वेदी' के सम्मुख जल छोड़े।

फिर पाँच आहुतियाँ नीचे लिखे मन्त्रों से घी की दें–

१. ॐ प्राणाय स्वाहा। २. ॐ अपानाय स्वाहा। ३. ॐ समानाय स्वाहा। ४. ॐ उदानाय स्वाहा। ५. ॐ व्यानाय स्वाहा।

अन्त में, एक उल्टे साबुत पान पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमल गट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गुग्गल ये सब वस्तुएँ स्त्रुची में रखकर खड़े होकर आहुति दें। इस अध्याय में विशेष आहुति पुष्प एवं पायस की होती है–

ॐ साङ्गायै सायुधायै स-शक्तिकायै स-परिवारायै स-वाहनायै क्लीं-वीजाधिष्ठात्र्यै महा-सरस्वत्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः।

'सद्'-रूपिणि! महा-सरस्वति!

'क्लीं'-वीजाधिष्ठात्र्यै

'ब्रह्म'-विद्यायै त्वां ध्याये!

।। उत्तम चरितम् – द्वादशोऽध्यायः।।

।। ध्यान ।।

ॐ विद्युद् - दाम - सम - प्रभां मृग - पति - स्कन्ध - स्थितां भीषणाम्,
कन्याभिः करवाल - खेट - विलसद् - हस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्र - गदाऽसि - खेट - विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्,
विभ्राणामनलात्मिकां शशि - धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

(गोरोचन-मिश्रित गेंदे के पुष्प से विशेष आहुति देकर हाथ जोड़कर अष्ट-भुजा भगवती दुर्गा को नमस्कार करे)

।। ॐ देव्युवाच।।

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं, स्तोष्यते यः समाहितः। तस्याऽहं सकलां बाधां, नाशयिष्याम्यसंशयम्।।

ॐ ऐं क्लीं क्रूं भय-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।६४६

(जायफल व पीली संरसों से विशेष आहुति)

मधु-कैटभ-नाशं च, महिषासुर-घातनम्। कीर्तयिष्यन्ति ये तद्-वद्, वधं शुम्भ-निशुम्भयोः।।

ॐ ऐं क्लीं श्रूं स्वस्त्ययन्यै नमः स्वाहा।।६४७

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां, नवम्यां चैक-चेतसः।श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या, मम माहात्म्यमुत्तमम्।।

ॐ ऐं क्लीं प्रां महामारी-हर्यै नमः स्वाहा।।६४८

(मधु से विशेष आहुति)

न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद्, दुष्कृतोत्था न चापदः। भविष्यति न दारिद्र्यं, न चैवेष्ट-वियोजनम्।।

ॐ ऐं क्लीं फें बलि-प्रियायै नमः स्वाहा।।६४९

शत्रुतो न भयं तस्य, दस्युतो वा न राजतः। न शस्त्रानल-तोयौघात्, कदाचित् सम्भविष्यति।।

ॐ ऐं क्लीं हं शरत्-पूज्यायै नमः स्वाहा।।६५०

(पीली सरसों से विशेष आहुति)

तस्मान्-ममैतन्-माहात्म्यं, पठितव्यं समाहितैः। श्रोतव्यं च सदा भक्त्या, परं स्वस्त्ययनं हि तत्।।

ॐ ऐं क्लीं चें निर्भय-प्रदायै नमः स्वाहा।।६५१

(ढाक के पुष्पों व पत्तों से विशेष आहुति)

उपसर्गानशेषांस्तु, महा-मारी-समुद्भवान्। तथा त्रिविधमुत्पातं, माहात्म्यं शमयेन् मम।।

ॐ ऐं क्लीं सूं रिपु-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।६५२

(गुलाल, धूप, काली मिर्च, पीली सरसों व हरा साग से विशेष आहुति)

यत्रैतत् पठ्यते सम्यङ्, नित्यमायतने मम। सदा न तद् विमोक्ष्यामि, सान्निध्यं तत्र मे स्थितम्।।

ॐ ऐं क्लीं प्रीं ग्रह-पीडा-हर्यै नमः स्वाहा।।६५३

(कैथा से विशेष आहुति)

बलि - प्रदाने पूजायामग्नि - कार्ये महोत्सवे। सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च।।

ॐ ऐं क्लीं ब्लूं उपसर्ग-प्रशमन्यै नमः स्वाहा।।६५४

(समूचा कैथा, नारियल का गोला, बेल या बिजौरा नीबू को काट कर बलि देकर विशेष आहुति दें)

जानताऽजानता वाऽपि, बलि-पूजां तथा कृताम्। प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या, वह्नि-होमं तथा कृतम्।।

ॐ ऐं क्लीं आं बालानां शान्ति-कारिण्यै नमः स्वाहा।।६५५

(६५५, ६५६ कैथा से विशेष आहुति)

शरत्-काले महा-पूजा, क्रियते या च वार्षिकी। तस्यां ममैतन्माहात्म्यं, श्रुत्वा भक्ति-समन्वितः।।

ॐ ऐं क्लीं औं दुर्वृत्त-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।६५६

सर्वा-बाधा-विनिर्मुक्तो, धन-धान्य-सुतान्वितः। मनुष्यो मत्-प्रसादेन, भविष्यति न संशयः।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं लोक-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा।।६५७

(छोटी इलायची, कैथा, नीम की टहनी व पत्ती से विशेष आहुति)

श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं, तथा चोत्पत्तयः शुभाः। पराक्रमं च युद्धेषु, जायते निर्भयः पुमान्।।

ॐ ऐं क्लीं क्रीं विप्र-प्रियायै नमः स्वाहा।।६५८

(कैथा से विशेष आहुति)

रिपवः संक्षयं यान्ति, कल्याणं चोप-पद्यते। नन्दते च कुलं पुंसां, माहात्म्यं मम शृण्वताम्।।

ॐ ऐं क्लीं द्रां मन्त्र-प्रियायै नमः स्वाहा।।६५९

शान्ति-कर्मणि सर्वत्र, तथा दुःस्वप्न-दर्शने। ग्रह-पीडासु चोग्रासु, माहात्म्यं शृणुयान्मम।।

ॐ ऐं क्लीं श्रीं पाप-हरायै नमः स्वाहा।।६६०

उप-सर्गाः शमं यान्ति, ग्रह-पीडाश्च दारुणाः। दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं, सु-स्वप्नमुप-जायते।।

ॐ ऐं क्लीं स्लीं अभयायै नमः स्वाहा।।६६१

(मोती से विशेष आहुति)

बाल-ग्रहाभि-भूतानां, बालानां शान्ति-कारकम्। सङ्घात-भेदे च नृणां, मैत्री-करणमुत्तमम्।।

ॐ ऐं क्लीं क्लीं देव-वन्दितायै नमः स्वाहा।।६६२

(वच व पीली सरसों से विशेष आहुति)

दुर्वृत्तानामशेषाणां, बल - हानि - करं परम्। रक्षो - भूत - पिशाचानां, पठनादेव नाशनम्।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं बन्धन-मोचन्यै नमः स्वाहा।।६६३

(पीली सरसों से विशेष आहुति)

सर्वं ममैतन्माहात्म्यं, मम सन्निधि-कारकम्। पशु-पुष्पार्घ्य-धूपैश्च, गन्ध-दीपैस्तथोत्तमैः।।

ॐ ऐं क्लीं ब्लीं पतितोद्धार-कारिण्यै नमः स्वाहा।।६६४

(पीली सरसों, रक्त पुष्प, धूप, रक्त चन्दन से विशेष आहुति देकर १२ बत्तीवाले दीपक से आरती करे)

विप्राणां भोजनैर्होमैः, प्रोक्षणीयैरहर्निशम्। अन्यैश्च विविधैर्भोगैः, प्रदानैर्वत्सरेण या।।

ॐ ऐं क्लीं त्रौं सङ्कट-हारिण्यै नमः स्वाहा।।६६५

(मिष्ठान, पूड़ी व जल से विशेष आहुति)

प्रीतिर्मे क्रियते साऽस्मिन्, सुकृत् सुचरिते श्रुते। श्रुतं हरति पापानि, तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति।।

ॐ ऐं क्लीं ओं दस्यु-वर्ग-विनाशिन्यै नमः स्वाहा।।६६६

रक्षां करोति भूतेभ्यो, जन्मनां कीर्तनं मम। युद्धेषु चरितं यन्मे, दुष्ट - दैत्य - निबर्हणम्।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं ज्ञानदायै नमः स्वाहा।।६६७

तस्मिञ्छ्रुते वैरि - कृतं, भयं पुंसां न जायते। युष्माभिः स्तुतयो याश्च, याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः।।

ॐ ऐं क्लीं ऐं भगवत्यै नमः स्वाहा।।६६८

ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु, प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्। अरण्ये प्रान्तरे वाऽपि, दावाग्नि-परि-वारितः।।

ॐ ऐं क्लीं द्रूं दैत्य-नाशिन्यै नमः स्वाहा।।६६९

दस्युभिर्वा वृतः शून्ये, गृहीतो वाऽपि शत्रुभिः। सिंह-व्याघ्रानु-यातो वा, वने वा वन-हस्तिभिः।।

ॐ ऐं क्लीं ल्लूं रिपूणां भय-दायिन्यै नमः स्वाहा।।६७०

(गन्ने के टुकड़ों से विशेष आहुति)

राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो, वध्यो बन्ध-गतोऽपि वा। आघूर्णितो वा वातेन, स्थितः पोते महार्णवे।।

ॐ ऐं क्लीं औं नित्यायै नमः स्वाहा।।६७१

पतत्सु चापि शस्त्रेषु, संग्रामे भृश-दारुणे। सर्वा-बाधासु घोरासु, वेदनाऽभ्यर्दितोऽपि वा।।

ॐ ऐं क्लीं चें महामारी-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा।।६७२

(६७२, ६७३ जटामासी से विशेष आहुति)

स्मरन् ममैतच्चरितं, नरो मुच्येत सङ्कटात्। मम प्रभावात् सिंहाद्या, दस्यवो वैरिणस्तथा।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रूं अजायै नमः स्वाहा।।६७३

।। मेधस ऋषिरुवाच।।

दूरादेव पलायन्ते, स्मरतश्चरितं मम। इत्युक्त्वा सा भगवती, चण्डिका चण्ड-विक्रमा।।

ॐ ऐं क्लीं ब्रीं मेधायै नमः स्वाहा।।६७४

पश्यतामेव देवानां, तत्रैवान्तरधीयत। तेऽपि देवा निरातङ्काः, स्वाधिकारान् यथा पुरा।।
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं परमेश्वर्यै नमः स्वाहा।।६७५
यज्ञ-भाग-भुजः सर्वे, चक्रुर्विनिहताऽरयः। दैत्याश्च देव्या निहते, शुम्भे देव - रिपौ युधि।।
ॐ ऐं क्लीं श्रीं भोग-स्वर्गापवर्गदायै नमः स्वाहा।।६७६
जगद्-विध्वंसिनि तस्मिन्, महोग्रेऽतुल-विक्रमे।निशुम्भे च महा-वीर्ये, शेषाः पातालमाययुः।।
ॐ ऐं क्लीं श्रां महा-भागायै नमः स्वाहा।।६७७
एवं भगवती देवी, सा नित्याऽपि पुनः पुनः। सम्भूय कुरुते भूप !, जगतः परि-पालनम्।।
ॐ ऐं क्लीं प्लीं तपो-रूपायै नमः स्वाहा।।६७८
तयैतन् मोह्यते विश्वं, सैव विश्वं प्रसूयते। सा याचिता च विज्ञानं, तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति।।
ॐ ऐं क्लीं आं अम्बायै नमः स्वाहा।।६७९
(अमर-बेल से विशेष आहुति)
व्याप्तं तयैतत् सकलं, ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर! महा-काल्या महा-काले, महा-मारी-स्वरूपया।।
ॐ ऐं क्लीं सौं मही-मय्यै नमः स्वाहा।।६८०
(६८०, ६८१ पीली सरसों से विशेष आहुति)

सैव काले महा-मारी, सैव सृष्टिर्भवत्यजा। स्थितिं करोति भूतानां, सैव काले सनातनी।।
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं जगद्धात्र्यै नमः स्वाहा।।६८१
भव-काले नृणां सैव, लक्ष्मीर्वृद्धि-प्रदा गृहे। सैवाऽभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोप-जायते।।
ॐ ऐं क्लीं क्रीं देव्यै नमः स्वाहा।।६८२
स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूप-गन्धादिभिस्तथा। ददाति वित्तं पुत्रांश्च, मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॐ।।
ॐ ऐं क्लीं क्षां सर्वदायै नमः स्वाहा।।६८३

(कर्पूर, धूप, खस, पुष्प व सफेद चन्दन से विशेष आहुति)

ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्याः सन्तु। (यजमानस्य कामाः) जगदम्बाऽर्पणमस्तु। ऐसा कहकर 'वेदी' के सम्मुख जल छोड़े।

फिर **पाँच आहुतियाँ** नीचे लिखे मन्त्रों से घी की दें–१. ॐ प्राणाय स्वाहा। २. ॐ अपानाय स्वाहा। ३. ॐ समानाय स्वाहा। ४. ॐ उदानाय स्वाहा। ५. ॐ व्यानाय स्वाहा।

अन्त में, एक उल्टे **साबुत पान** पर शाकल्य, घी में भिगोकर **१ कमल गट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गुग्गल** ये सब वस्तुएँ **स्रुची** में रखकर खड़े होकर आहुति दें। इस अध्याय में विशेष आहुति **ऋतु-फल** एवं **गोरोचन-मिश्रत गेंदे के पत्तों** की होती है–

ॐ साङ्गायै सायुधायै स-शक्तिकायै स-परिवारायै स-वाहनायै क्लीं-वीजाधिष्ठात्र्यै महा-सरस्वत्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः।

।। उत्तम चरितम् – त्रयोदशोऽध्यायः।।

।। ध्यान ।।

ॐ बालार्क-मण्डलाभासां, चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्। पाशांकुश-वराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे।।

(रक्त पुष्प से विशेष आहुति देकर हाथ जोड़कर भगवती महा-त्रिपुर-सुन्दरी शिवा को नमस्कार करे)

।। ॐ मेधस ऋषिरुवाच ।।

एतत् ते कथितं राजन् !, देवी-माहात्म्यमुत्तमम्। एवं प्रभावा सा देवी, ययेदं धार्यते जगत्।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं सर्वज्ञायै नमः स्वाहा।।६८४

विद्या तथैव क्रियते, भगवद्-विष्णु-मायया। तया त्वमेष वैश्यश्च, तथैवान्ये विवेकिनः।।

ॐ ऐं क्लीं ल्लूं चण्डिकायै नमः स्वाहा।।६८५

मोह्यन्ते मोहिताश्चैव, मोहमेष्यन्ति चापरे। तामुपैहि महा - राज!, शरणं परमेश्वरीम्।।

ॐ ऐं क्लीं क्लीं वर-प्रदायै नमः स्वाहा।।६८६

(रक्त पुष्प से विशेष आहुति)

।। मार्कण्डेय उवाच ।।

इति तस्य वचः श्रुत्वा, सुरथः स नराधिपः। प्रणिपत्य महा-भागं, तं ऋषिं शंसित-व्रतम्।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं मुनि-प्रियायै नमः स्वाहा।।६८७

निर्विण्णोऽति-ममत्वेन, राज्यापहरणेन च। जगाम सद्यस्तपसे, स च वैश्यो महा-मुने!।।

ॐ ऐं क्लीं प्लीं उत्साह-करण्यै नमः स्वाहा।।६८८

सन्दर्शनार्थमम्बाया, नदी-पुलिन-संस्थितः। स च वैश्यस्तपः तेपे, देवी-सूक्तं परं जपन्।।

ॐ ऐं क्लीं श्रीं भव-पाश-विमोचन्यै नमः स्वाहा।।६८९

तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः, कृत्वा मूर्तिं मही-मयीम्। अर्हणां चक्रतुस्तस्याः, पुष्प-धूपाग्नि-तर्पणैः।।

ॐ ऐं क्लीं ल्लीं देव-देव्यै नमः स्वाहा।।६९०

(रक्त चन्दन, पुष्प एवं धूप से विशेष आहुति)

निराहारौ यताहारौ, तन्मनस्कौ समाहितौ। ददतुस्तौ बलिं चैव, निज-गात्रासृगुक्षितम्।।

ॐ ऐं क्लीं श्रूं राज्य-प्रदायै नमः स्वाहा।।६९१

(धूप एवं पुष्प से विशेष आहुति)

एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः। परितुष्टा जगद्धात्री, प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका।।

ॐ ऐं क्लीं ह्लीं अस्खलितायै नमः स्वाहा।।६९२

(उड़द, रक्त चन्दन, लाख, मिष्ठान व ऋतु फल से विशेष आहुति)

।। देव्युवाच ।।

यत् प्रार्थ्यते त्वया भूप!, त्वया च कुल-नन्दन! मत्तस्तत् प्राप्यतां सर्वं, परि-तुष्टा ददामि तत्।।

ॐ ऐं क्लीं त्रूं जनन्यै नमः स्वाहा।।६९३

(रक्त चन्दन व लाख से विशेष आहुति)

।। मार्कण्डेय उवाच ।।

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्य-जन्मनि। अत्रैव च निजं राज्यं, हत-शत्रु-बलं बलात्।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रूं मन्त्र-रूपायै नमः स्वाहा।।६९४

सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं, वव्रे निर्विण्ण-मानसः। ममेत्यहमिति प्राज्ञः, सङ्ग-विच्युति-कारकम्।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रां वाञ्छित-प्रदायै नमः स्वाहा।।६९५

।। देव्युवाच ।।

स्वल्पैरहोभिर्नृपते!, स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्। हत्वा रिपूनस्खलितं, तव तत्र भविष्यति।।

ॐ ऐं क्लीं प्रीं ज्ञानदायै नमः स्वाहा।।६९६

(६९६ से ६९८ तक उड़द व अदरक से विशेष आहुति)

मृतश्च भूयः सम्प्राप्य, जन्म देवाद् विवस्वतः। सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति।।

ॐ ऐं क्लीं ऊं वाण्यै नमः स्वाहा।।६९७

वैश्य-वर्य! त्वया यश्च, वरोऽस्मत्तोऽभि-वाञ्छितः। तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै, तव ज्ञानं भविष्यति।।

ॐ ऐं क्लीं सूं अभिस्तुतायै नमः स्वाहा।।६९८

।। मार्कण्डेय उवाच।।

इति दत्वा तयोर्देवी, यथाऽभिलषितं वरम्। बभूवाऽन्तर्हिता सद्यो, भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता।।

ॐ ऐं क्लीं षों लषित-प्रदायै नमः स्वाहा।।६९९

एवं देव्या वरं लब्ध्वा, सुरथः क्षत्रियर्षभः। सूर्याज्जन्म समासाद्य, सावर्णिर्भविता मनुः ॐ।।

ॐ ऐं क्लीं ओं मनु-रूपायै नमः स्वाहा।।७००

(अन्तिम ७०० वीं आहुति में दो बार श्लोक पढ़कर समूचे बेल से विशेष आहुति)

ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्याः सन्तु। (यजमानस्य कामाः) जगदम्बाऽर्पणमस्तु।। ऐसा कहकर 'वेदी' के सम्मुख जल छोड़े।

फिर **पाँच आहुतियाँ** नीचे लिखे मन्त्रों से घी की दें–**१. ॐ प्राणाय स्वाहा। २. ॐ अपानाय स्वाहा। ३. ॐ समानाय स्वाहा। ४. ॐ उदानाय स्वाहा। ५. ॐ व्यानाय स्वाहा।**

अन्त में, एक उल्टे **साबुत पान** पर शाकल्य, घी में भिगोकर **१ कमल गट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गुग्गल** ये सब वस्तुएँ **स्त्रुची** में रखकर खड़े होकर आहुति दें। इस अध्याय में विशेष आहुति **फल व फूल** की होती है–

ॐ साङ्गायै सायुधायै स-शक्तिकायै स-परिवारायै स-वाहनायै क्लीं-वीजाधिष्ठात्र्यै महा-सरस्वत्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः।

पूर्णाहुति एवं विसर्जन

श्री दुर्गा सप्तशती के सात सौ मन्त्रों के द्वारा सात सौ आहुतियाँ देने के बाद 'मूल-मन्त्र' के अन्त में 'स्वाहा' लगाकर अथवा 'श्री दुर्गायै नमः स्वाहा' से कम-से-कम २५ आहुतियाँ प्रदान कर व्याहृतियों की फिर से चार आहुतियाँ देनी चाहिए- १. ॐ भूः स्वाहा, २. ॐ भुवः स्वाहा, ३. ॐ स्वः स्वाहा, ४. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

फिर अपनी कामना के अनुसार पुनः 'सङ्कल्प' कर आहुति देना चाहिए। यथा-विष्णुः ॐ तत्सत् ॐ अद्य अमुक-मासस्य अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-राशि-स्थिते भास्करे अमुक-अभीष्टार्थ-सिद्धि-कामः अमुक-गोत्रः श्री अमुक-शर्मा तिलाज्यादि-मिश्रितैः पुष्पैर्विल्व-पत्रादिभिर्वा सार्द्धं वह्नौ आहुतिं अहं ददे।

उक्त सङ्कल्प पढ़कर तिल, घी-शहद अथवा पुष्प अथवा विल्व-पत्र अथवा दूसरी उपयुक्त वस्तुओं से मिश्रित द्रव्य से यथा-शक्ति आहुतियाँ देना चाहिए। आठ से कम आहुतियाँ नहीं देना चाहिए। सबसे अन्त में फल और ताम्बूल से युक्त 'पूर्णाहुति' प्रदान करना चाहिए।

फिर 'मूल-मन्त्र' का 'जप' अथवा 'श्रीदुर्गायै नमः' का जप करना चाहिए। 'जप' का फल भगवती दुर्गा को अर्पित कर दुर्गाम्बा के हृदय में पुनः आ विराजने की भावना कर निम्न मन्त्र से 'भस्म' का 'वन्दन' करना चाहिए। यथा-

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषं । यद्-देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषं।।

तब 'संहार-मुद्रा' दिखाते हुए निम्न मन्त्र पढ़कर 'अग्नि' का विसर्जन करना चाहिए-

ॐ भो भो वह्ने महा-शक्ते!, सर्व-काम-प्रसाधक!। कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते, सान्निध्यं कुरु सादरम्।।

अन्त में, अग्नि को मन-ही-मन अपने 'हृदय-कमल' में स्थापित कर तथा 'अग्ने! क्षमस्व' यह मन्त्र पढ़कर और बचे हुए घी में भस्म मिलाकर अपनी भौंहों के बीच में लगाना चाहिए। इस प्रकार 'हवन' का विसर्जन करना चाहिए।

तर्पण एवं मार्जन

श्री दुर्गा सप्तशती के मन्त्रों द्वारा ७०० आहुतियाँ एवं पूर्णाहुति देने के बाद दशांश '**तर्पण**' और तर्पण का दशांश '**मार्जन**' अर्थात् ७० बार '**तर्पण**' और ७ बार '**मार्जन**' करना चाहिए। '**तर्पण**' एवं '**मार्जन**' हेतु एक बड़े पात्र में **दूध, पुष्प, गङ्गा-जल, दूर्वा** आदि रखें और नीचे लिखे मन्त्र से दोनों हाथों की **मध्यमा** एवं **अनामा** अंगुलियों अथवा **पुष्प, दूर्वा** आदि से 'तर्पण'-'**मार्जन**' करे–**मूलं** (अथवा **श्री दुर्गायै नमः**) **श्री दुर्गा-देवीं तर्पयामि** (७० बार)। **मूलं** (अथवा **श्री दुर्गायै नमः**) **श्री दुर्गा-देवीं मार्जयामि** (७ बार)।

'बलि'-प्रदान

इसके बाद **वेदी** के '**ईशान**'-कोण में सिन्दूर से **त्रिकोण - वृत्त - चतुरस्त्रात्मक यन्त्र** बनाकर– '**ॐ बटुक-बलि-पात्राधार-मण्डलाय नमः**'–इस मन्त्र से **गन्ध-पुष्पादि** के द्वारा पूजा करे और वहाँ किसी पात्र या पत्तल आदि पर **बलि-द्रव्य** रखकर–'**ॐ वं वटुकाय नमः**'–इस मन्त्र से **गन्ध-पुष्पादि** द्वारा पूजन करे। फिर **अंगुष्ठ** एवं **अनामिका** के योग-द्वारा '**कारण**' समर्पित करता हुआ अथवा **बलि-द्रव्य** पर '**कर्पूर**' का एक छोटा-सा टुकड़ा प्रज्वलित कर यह मन्त्र पढ़े–'**ॐ ॐ ॐ एह्येहि देवी-पुत्र बटुक-नाथ! कपिल-जटा-भार-भास्वर, पिङ्गल, त्रि-नेत्र, ज्वाला-मुख! सर्व-विघ्नान् नाशय नाशय इमं पूजनं सर्वोपचार-सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। एष बलिर्वं बटुक-भैरवाय नमः।**' तब '**बलि-द्रव्य**' को निम्न मन्त्र पढ़ते हुए '**प्रणाम**' कर उसे घर के बाहर रक्खवा दे–**ॐ बलिदानेन सन्तुष्टो, बटुकः सर्व-सिद्धिदः। रक्षां करोतु मे नित्यं, भूत-वेताल-सेवितः।।**

आरती

इसके बाद हस्त-पाद-प्रक्षालन करके 'आरती' करे। यथा–

जग-जननी जय जय, माँ जग-जननी जय जय। भय-हारिणि, भव-तारिणि, भव-भामिनि, जय जय।।
तू ही सत् - चित-सुख-मय, शुद्ध-ब्रह्म-रूपा। सत्य सनातन सुन्दर, पर-शिव-सुर-भूपा।।०१।। जग०
आदि अनादि अनामय, अविचल अविनाशी। अमल अनन्त अगोचर, अज आनन्द-राशी।।०२।। जग०
अविकारी अघ-हारी, अकल कला-धारी। कर्त्ता विधि भर्त्ता हरि, हर संहार-कारी।।०३।। जग०
तू विधि - वधू रमा तू, उमा महा - माया। मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी - जाया।।०४।। जग०
राम - कृष्ण तू सीता, व्रज - रानी राधा। तू वाञ्छा - कल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा।।०५।। जग०
दश-विद्या नव-दुर्गा, नाना-शस्त्र-करा। अष्ट-मातृका योगिनि, नव-नव-रूप-धरा।।०६।। जग०
तू पर-धाम-निवासिनि, महा-विलासिनि तू। तू ही श्मशान-विहारिणि, ताण्डव-लासिनि तू।।०७।। जग०
सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या, तू शोभाऽऽधारा। विवसन-विकट-स्वरूपा, प्रलय-मयी धारा।।०८।। जग०
तू ही स्नेह-सुधा-मयि, तू अति गरल-मना। रत्न-विभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना।।०९।। जग०
मूलाधार - निवासिनि, इह पर - सिद्धि - प्रदे! कालातीता काली, कमला तू वरदे।।१०।। जग०
शक्ति शक्ति - धर तू ही, नित्य अभेद-मयी। भेद-प्रदर्शिनि वाणी, विमले! वेद-त्रयी।।११।। जग०
हम अति दीन दुःखी माँ, विपत जाल घेरे। हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे।।१२।। जग०
निज स्वभाव-वश जननी, दया-दृष्टि कीजै। करुणा-कर करुणा-मयि, चरण-शरण दीजै।।१३।। जग०

पुष्पाञ्जलि

'आरती' करने के बाद हाथ में पुष्प लेकर मन्त्रों को पढ़ते हुए 'पुष्पाञ्जलि' देनी चाहिए–

ॐ कात्यायन्यै विद्महे कन्या - कुमार्यै धीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।
नाना-विधानि पुष्पाणि, यथा कालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं, गृहाण श्री दुर्गा देवि!।।

प्रदक्षिणा

'पुष्पाञ्जलि' अर्पण कर 'योनि'-मुद्रा से नमस्कार कर 'वेदी' की प्रदक्षिणा करनी चाहिए–

ॐ यानि कानि च पापानि, जन्मान्तर-कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति, प्रदक्षिणे पदे पदे।

इसके अनन्तर सभी देवताओं की क्रम से श्री भगवती दुर्गा के अङ्ग में 'लय'-भावना कर 'प्रार्थना' करनी चाहिए–

ॐ यद-दत्तं भक्ति-मात्रेण, पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
निवेदितं च नैवेद्यं, तद् गृहाणानुकम्पया।।
आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजामर्चां न जानामि, त्वं गतिः परमेश्वरि!।।
कर्मणा मनसा वाचा, ततो नान्यद् गतिर्मम।
अन्तश्चारेण भूतानां, द्रष्टा त्वं परमेश्वरि!।।
मातर्योनि - सहस्रेषु, येषु येषु ब्रजाम्यहम्।
तेषु तेष्वचला भक्तिरस्तु मे सर्वदा शिवे!।।

‘क्षमापन’-स्तोत्र-पाठ

उक्त प्रार्थना कर **अर्घ्य-पात्र** उठाकर निम्न-लिखित **‘क्षमापन-स्तोत्र’** पढ़ना चाहिए–

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि, क्षम्यतां परमेश्वरि!।।

हे परमेश्वरि! मैं आवाहन की विधि नहीं जानता, न विसर्जन करना जानता हूँ और पूजा-विधि भी नहीं जानता। मुझे क्षमा करिए।

मन्त्र-हीनं, क्रिया-हीनं, भक्ति-हीनं सुरेश्वरि!
यत्-पूजितं मया देवि!, परिपूर्णं तदस्तु मे।।

हे सुरेश्वरि! मेरे द्वारा जो पूजन किया गया है, वह मन्त्र-रहित है, क्रिया-रहित और भक्ति से रहित है। **हे देवि!** वह आपकी कृपा से पूर्ण हो।

अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या, यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्-सर्वं क्षम्यतां देवि!, प्रसीद परमेश्वरि!।।

हे परमेश्वरि! अज्ञान के कारण, भूल जाने से या भ्रम-वश जो कुछ कम या अधिक मैंने किया है, उस सबको, हे देवि! क्षमा करो और मुझ पर प्रसन्न होओ।

कामेश्वरि! जगन्मातः!, सच्चिदानन्द-विग्रहे!
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या, प्रसीद परमेश्वरि!।।

हे कामेश्वरि! हे सच्चिदानन्द-मय स्वरूपवाली परमेश्वरि! इस पूजा को प्रेम से स्वीकार करो और मुझ पर प्रसन्न होओ।

'अनुग्रह-नवक'-स्तोत्र-पाठ

इसके बाद पराम्बा भगवती दुर्गा का अनुग्रह प्राप्त करने हेतु निम्न प्रकार से प्रार्थना करनी चाहिए–

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं, स्थिति-संहार-कारिणीम्।
करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।१।।

ॐ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट-संश्रयात्, तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।२।।

ॐ या साम्प्रतं चोद्धत-दैत्य-तापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।३।।

ॐ या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः, सर्वापदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः।
करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।४।।

ॐ सर्वा-बाधा-प्रशमनं, त्रैलोक्यास्याखिलेश्वरि!।
करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।५।।

ॐ सर्व-मङ्गल-माङ्गल्ये!, शिवे! सर्वार्थ-साधिके!।
करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।६।।

ॐ सृष्टि-स्थिति-विनाशानां, शक्ति-भूते! सनातनि!।
करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।७।।

ॐ शरणागत-दीनार्त्त-परित्राण-परायणे!।
करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।८।।

ॐ सर्व-स्वरूपे! सर्वेशे!, सर्व-शक्ति-समन्विते!।
करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।९।।

श्रीदुर्गा-स्तुति

'अनुग्रह-नवक'-स्तुति के बाद एक बार फिर से सर्व-लोक-रचयिता, विश्व की स्वामिनी, सर्व-देव-मयी, दिव्य-स्थान-निवासिनी, संसार-रूपी समुद्र से तारनेवाली पराम्बा भगवती दुर्गा की स्तुति करनी चाहिए–

ॐ दुर्गां शिवां शान्ति - करीं, ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियां।
सर्व - लोक - प्रणेत्रीं च, प्रणमामि सदा शिवाम्।।
ॐ मङ्गलां शोभनां शुद्धां, निष्कलां परमां कलां।
विश्वेश्वरीं विश्व - मातां, चण्डिकां प्रणमाम्यहम्।।

ॐ सर्व - देव - मयीं देवीं, सर्व - रोग - भयापहां।
ब्रह्मेश - विष्णु - नमितां, प्रणमामि सदा उमाम्।।
ॐ विन्ध्यस्थां विन्ध्य - निलयां, दिव्य - स्थान - निवासिनीं।
योगिनीं योग - मातां च, चण्डिकां प्रणमाम्यहम्।।
ॐ ईशान - मातरं देवीमीश्वरीमीश्वर - प्रियां।
प्रणतोऽस्मि सदा दुर्गां, संसारार्णव - तारिणीम्।।
फिर– ॐ आयुर्देहि यशो देहि, भाग्यं भगवति! देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामांश्च देहि मे ।।
ॐ कायेन मनसा वाचा, कर्मणा यत् कृतं मया।
ज्ञानाज्ञान - कृतं पापं, दुर्गे! त्वं हर दुर्गतिम्।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदुच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः–यह कहकर श्रीगुरु-देव, माता-पिता आदि को प्रणाम करना चाहिए।

श्रीगुरु श्रीविद्यारण्य स्वामी
श्रीपादुकाभ्यां नमो नमः

उत्तर मार्कण्डेय- पुराणोक्त

'सात सौ श्लोकों' की

'अद्भुत सप्तशती' के उद्घाटन-कर्ता

प्रातः-स्मरणीय

श्रीविद्यारण्य जी के

श्री-चरणों में कोटिशः 'नमो नमः'।